गुरु गोबिन्दसिंह जी महाराज विरचित

रामावतार

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

गुरु गोविन्दसिंह महाराज

गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज विरचित

रामावतार

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

लोकोदय ग्रन्थमाला ग्रन्थांक 436
रामावतार
(काव्य)
गुरु गोबिन्दसिंह
प्रथम संस्करण 1984
मूल्य : ~~पेपर बैक 12/-~~
सजिल्द 20/-

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ
बी/45-47, कनॉट प्लेस,
नयी दिल्ली-110001

मुद्रक
अंकित प्रिंटिंग प्रेस
शाहदरा, दिल्ली-110032
आवरण शिल्पी हरिपाल त्यागी

RAMAVATAR : (Poetry) by Guru Gobind Singh Published by Bharatiya Jnanpith, B/45-47, Connaught Place, New Delhi-110001. Printed at Ankit Printing Press, Shahdara, Delhi First Edition 1984 Paperback Rs 12/-, Lib Edn Rs 20/-

प्रस्तावना

गुरु गोबिन्दसिंह के विलक्षण व्यक्तित्व मे सन्त, सेनानी और साहित्यकार का अद्भुत सगम था। उन्होने केवल खालसा पथ की स्थापना ही नही की, बल्कि उच्चकोटि के साहित्य का सृजन भी किया।

गुरुजी का व्यक्तित्व अपने युग की राजनैतिक, सामाजिक एव धार्मिक परिस्थितियो से प्रभावित था। जिस काल मे उनका आविर्भाव हुआ वह काल भारत और पजाब के इतिहास का विषमतम काल था। वह ऐसा समय था जब सम्राट् अकबर द्वारा स्थापित राजनैतिक शान्ति समाप्त हो चुकी थी और मुगल शासको ने उनकी सुलह—कुल और धार्मिक सहिष्णुता की नीति से किनारा कर लिया था। औरगजेब की धार्मिक कट्टरता और दमन की नीति के कारण हिन्दू समाज त्रस्त था। स्वय हिन्दू लोग भी ऊँच-नीच, जाति-पात, और रीति-रिवाजो के सकीर्ण बन्धनो मे जकडे थे। पूरे समाज को इनसे मुक्त करके उसे एक-जुट बनाकर अन्याय का मुकाबला करने के लिए तैयार करना समय की सबसे बडी माँग थी। इस काम को गुरु गोबिन्दसिह ने अपने विलक्षण व्यक्तित्व से बाखूबा अन्जाम दिया।

कनिंघम के अनुसार, सिखों के अन्तिम गुरु ने पराजित लोगो की सुप्त शक्तियो को जगाया और उन्हे उन्नत करके उनमे सामाजिक स्वातन्त्र्य और राष्ट्रीय प्रभुता का भाव भर दिया जो नानक द्वारा बताये गये पवित्र भक्ति-भाव से जुडा हुआ था। उन्होंने ऊँच-नीच, जाति-पात का भेद नष्ट किया और सबके लिए समानता की घोषणा की। समाज के उपेक्षित वर्ग को अपना सहयोगी बनाकर गुरुजी ने उनमे असीम शक्ति और आत्म-विश्वास का सचार कर दिया।

उनके काव्य की अन्त प्रेरणा भी युगीन परिस्थितियो से प्रभावित और प्रेरित थी। उनका उद्देश्य ऐसा साहित्य तैयार करना था जिसे पढ और सुनकर लोगो के दिलो मे एकता का भाव जागृत हो, उनमे न्यायोचित धर्म-कर्म की भावना विकसित हो। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए गुरुजी ने पूर्ववर्ती गुरुओ की भक्ति भावना मे वीर रूपको का सचार किया। इनके पूर्व सम्पूर्ण भक्ति काव्य मे ईश्वर के सृजन और पोषण के गुणो की प्रधानता थी। गुरु गोविन्दसिह ने अपनी रचनाओ मे ईश्वर के इस रूप के साथ उसके विनाशकारी रूप को भी चित्रित किया। उन्होंने अपनी रचनाओ के लिए ऐसे विषयो का चयन किया जिसमे भक्ति और वीरता दोनो की अभिव्यक्ति हो सके। उन्होंने पुराणो, रामायण, महाभारत और श्रीमद्भागवत से भारतीय महापुरुषो की गाथाओ के वीरतापूर्ण प्रेरक प्रसगो पर

आधारित रचनाएँ की और अपने आश्रित 52 कवियो से करवायी।

गुरु गोबिन्दसिंहजी का कार्यकाल हिन्दी साहित्य के इतिहास के काल-विभाजन के अनुसार रीतिकाल के अन्तर्गत आता है। वह ऐसा समय था जब आश्रय प्राप्त कवि पारितोषिक और पारिश्रमिक के लिए लिखते थे। उस काल के प्राय सभी कवि शृगार की रचनाएँ करते और रीति ग्रन्थ लिखते थे। दो-एक को छोडकर उस काल के किसी कवि की रचनाओ मे युग की राजनैतिक स्थिति की झलक नही मिलती। लेकिन शृगार और विलास के इस काल मे भी गुरु गोविन्दसिह ने प्रेरणादायक काव्य का सृजन किया और उसके माध्यम से लोगो मे नव-जागरण की ज्योति जलाने का प्रयास किया।

रीतिकाल के आश्रय-प्राप्त कवियो से उनका महत्त्व बिल्कुल अलग है। वह इस काल के एक मात्र ऐसे कवि हैं जिनकी रचना के पीछे कोई सासारिक लालसा नही है। न उन्हे किसी आश्रयदाता को प्रसन्न करना था और न ही कविता उनके जीविकोपार्जन का साधन थी। साहित्य-सृजन मे उनकी एक मात्र अभिलाषा, एक मात्र चाह धर्मस्थापना की थी।

अहिन्दी प्रदेशो मे व्रज भाषा का जो साहित्य सृजित हुआ उसमे सिख-गुरुओ की रचनाओ का अपना विशिष्ट स्थान है। गुरु गोविन्दसिंह उनमे प्रमुख हैं। उन्होंने प्राय अपना समस्त साहित्य ही व्रज भाषा मे लिखा। कुछेक रचनाओ को छोडकर जो पजाबी या फारसी मे हैं उनका सम्पूर्ण साहित्य व्रज भाषा मे ही है। 'ज़फरनामा' शीर्षक से औरगज़ेब को लिखा उनका पत्र फारसी मे है। उन्होंने अपनी विभिन्न रचनाओं द्वारा हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने मे महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। उनकी समस्त रचनाएँ 'दशम ग्रन्थ' मे सकलित हैं। उनकी 16 प्रामाणिक रचनाएँ हैं—(1) जापु, (2) अकाल स्तुति, (3) बिचित्र नाटक, (4) चण्डी चरित्र उक्ति बिलास, (5) चण्डी चरित्र, (6) वार श्री भगवतीजी दी, (7) चौबीस अवतार, (8) मीर मेहदी, (9) ब्रह्मा अवतार, (10) रुद्र अवतार, (11) शस्त्र नाममाला, (12) ज्ञान प्रबोध, (13) पाख्यान चरित्र, (14) हजारे दे शब्द, (15) सवैये और (16) ज़फरनामा।

'दशम ग्रन्थ' मे सकलित गुरुजी की रचनाएँ हिन्दी (व्रज भाषा) मे तो है लेकिन गुरुमुखी मे लिपिबद्ध हैं। इनमें से कुछ ही रचनाएँ देवनागरी लिपि मे प्रकाशित हुई हैं। लेकिन अधिकाश गुरुमुखी मे होने के कारण अन्य भाषा भाषी लोगा के लिए सुलभ नही हैं। इस कारण वे लोग गुरुजी के काव्य का रसास्वादन करने में असमर्थ हैं। सन्तोष की बात है कि उत्तर प्रदेश मे स्थापित गुरु गोविन्दसिंह साहित्य प्रकाशन-प्रसारण समिति ने गुरुजी की रचनाओ को देवनागरी लिपि मे प्रकाशित कराने का बीडा उठाया है। उसकी यह योजना निश्चय ही स्तुत्य है। इसी योजना के अधीन इस 'रामावतार' ग्रन्थ का देवनागरी मे प्रकाशन आपके

हाथो मे है। यह रचना उनके 'दशम ग्रन्थ' मे सकलित 'चौबीस अवतार' का अश है जिसमे चौबीसो अवतारो का वर्णन है।

'रामावतार' गुरुजी की विशिष्ट रचना है। रामकथा का माहात्म्य उन्होंने इन शब्दो मे दर्शाया है—

राम कथा जुग जुग अटल, सब कोई भाखत नेति।

इसी प्रकार,

जो इह कथा सुनै अरु गावै। दुख पाप तिह निकट न आवै॥
बिसन भगति कीये फल होई। आधि-ब्याधि छुवै सकै न कोई॥

इस सम्बन्ध मे एक बात और ध्यान देने योग्य है। ऐसा माना जाता है कि गुरु गोविन्दसिहजी सूर्यवशी थे। भगवान राम के वशज थे। राम के पुत्र लव और कुश ने लाहौर और कसूर नगरो को बसाया था। उनके वश मे दो महान राजा हुए—कुश वश के कालकेतु और लव वश के कालराय। कालकेतु ने कालराय का राज्य छीन लिया और उसे भगा दिया। कालराय ने सनौढ देश मे शरण ली तथा वहाँ की राजकुमारी से विवाह किया। इस विवाह से उसके सोढीराय नामक पुत्र हुआ। इसी कुल मे गुरु गोविन्दसिह का जन्म हुआ। इसका वर्णन स्वय गुरुजी ने अपने 'विचित्र नाटक' मे किया है—

अब मैं कहा सु अपनी कथा। सोढी बस उपजिया जथा॥

कालान्तर मे सोढी वश के लोगो ने कालकेतु के वशजो को परास्त किया और वे काशी भाग गये जहाँ उन्होने चारो वेदो का अध्ययन किया और वेदी कहलाये। इसी वेदी कुल मे गुरु नानक का जन्म हुआ। बाद मे सोढी राजा ने दूत भेजकर काशी से वेदी लोगो को वापस बुला लिया। उनका वेद पाठ सुनकर सोढी राजा इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने सारा राज पाट वेदियो को दे दिया और स्वय ऋषि बनकर वन चले गये। गुरु गोविन्दसिह के शब्दो मे—

रहा रीझ राजा। दीआ सरब साजा॥
लयो बन्नबास। महा पाप नास॥
रिसं भेस कीयं। तिसै राज दीय॥

और इससे वेदी लोग प्रसन्न हो गये और उन्होंने सोढियो को वरदान दिया—

बेदी भयो प्रसन राज कह पाइके।
देत भयो बरदान हीये हुलसाइके॥
जब नानक कल मे हम आन कहाइ है।
हो जगत पूज करि तोहि परमपद पाइ है॥

लवी राज दे बन गये बेदिअन कीनो राज।
भाँति भाँति तिनि भोगियं भूअ का सकल समाज॥

त्रितिय बेद सुने तु कीआ। चतुर बेद सुनि भूअ को दीआ ॥
तीन जनम हमहूं जब धरिहैं। चौथे जनम गुर तुहि करिहैं ॥

गुरु गोविन्दसिंहजी की रचना 'रामावतार' 864 छन्दो मे लिपिबद्ध है और इसमे उन्होंने श्रवणकुमार की कथा से लेकर लव-कुश के जन्म तथा सीताजी के भूमि-प्रवेश तक की सारी रामकथा का वर्णन किया है। साथ ही, उन्होंने राम-राज्य का वर्णन भी अपनी ओजस्वी वाणी मे लोककल्याण के निमित्त किया है। 'रामावतार' के प्रमुख अग है—श्रवणकुमार की कथा और राम-जन्म, सीता-स्वयवर, अवध-प्रवेश, वनवास, वन-प्रवेश, खरदूषण-वध, सीताहरण, सीता की खोज, बालि-वध, सीता खोज मे हनुमान की सफलता, प्रहस्त-युद्ध, कुम्भकर्ण का वध, त्रिमुण्ड-युद्ध, महोदर मन्त्री का युद्ध, इन्द्रजीत-युद्ध, अतिकाय दैत्य-युद्ध, मकराक्ष का युद्ध, रावण युद्ध, सीता मिलन, अयोध्या आगमन, माता मिलन, सीता-वनवास, लव-कुश से युद्ध, पुन अयोध्या-प्रवेश, सबका अन्त, माहात्म्य आदि।

गुरुजी का 'रामावतार' कई प्रसगो मे भागवत तथा दूसरी रामकथाओ से भिन्न है। इसमे सीता-स्वयवर के बाद परशुराम-लक्ष्मण सवाद के स्थान पर परशुराम और राम का सवाद होता है। इसमे एक बात और कही गयी है। जब परशुराम राम की परीक्षा के लिए उन्हे अपना धनुष प्रत्यचा चढाने के लिए देते हैं तो सीताजी मन-ही-मन उनकी असफलता की कामना करती हैं क्योकि उन्हे भय होता है कि एक धनुष को तोडकर राम ने उन्हे पाया है कही दूसरा न टूट जाये कि राम को एक और स्त्री मिल जाये। कुछ इसी प्रकार का वर्णन इसी प्रसग मे तुलसीदास जी ने किया है। राम को विजय माला पहनाने के बाद जब सखियों ने कहा कि राम के चरण-स्पर्श करो तो वह अहिल्या प्रकरण की याद करके पैर छूने से डरती है कि कही राम के स्पर्श से उनकी अँगूठी मे जडा हीरा अहिल्या की भाँति स्त्री न बन जाये। इस प्रकार गुरुजी ने सीता के प्रेम का सुन्दर, रोचक और भावुक परिचय दिया है।

इसी प्रकार एक और भिन्नता मिलती है सीता के पुन: वनवास के प्रसग मे। गुरुजी के अनुसार सीता ने स्वेच्छा से वन-गमन किया था जबकि भागवत के अनुसार, लोकापवाद के कारण राम ने सीता को वनवास दिया था। सीता के भूमि-प्रवेश का प्रसग भी नवीनता लिये है। 'रामावतार' के अनुसार, एक दिन स्त्रियो के कहने पर सीताजी रावण का चित्र दीवार पर बना देती हैं। इससे राम के मन मे सन्देह होता है। इस कारण शोकाकुल होकर राम का सन्देह दूर करने के लिए सीताजी भूमि-प्रवेश करती है।

'रामावतार' हिन्दी की रामकाव्य परम्परा मे महत्त्वपूर्ण है। इस रचना के पूर्व दो ही प्रमुख रामकाव्य लिखे गये हिन्दी भाषा मे। एक तो तुलसीदासजी का

'रामचरितमानस' और दूसरा आचार्य केशवदास की 'रामचन्द्रिका'। गुरुजी का 'रामावतार' इन दोनों से ही भिन्नता लिये हुए है। मानस के राम अलौकिक पुरुष, भक्तवत्सल मर्यादापुरुषोत्तम हैं। केशव के राम एक वैभवशाली सम्राट् हैं। गुरुजी की दृष्टि इन दोनों से अलग है। 'रामावतार' के राम तुलसी के राम की भाँति किसी महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए नर रूप में आये विष्णु के अवतार तो हैं लेकिन गुरुजी ने उनका चित्रण वीर रूप में ही किया है।

गुरुजी के इस ग्रन्थ में वीर रस का ही प्राधान्य है। यद्यपि उसमें शृंगार का भी दर्शन होता है लेकिन उनका शृंगार शिष्ट और उच्छृंखलता-रहित है। 'रामावतार' में सीताजी के रूप का वर्णन इस प्रकार किया गया है—

किधौं देवकन्या किधौं वासवी है।
किधौं जच्छनी किन्नरी नागनी है।
किधौं राग पूरे भरी रागमाला।
बरी राम तैसी सिया आज बाला।
× × ×
छके प्रेम दोनों लगे नैन ऐसे।
मनो फान्द फान्दे मृगीराज जैसे।
बिध थाक बैनी कट देस छीन।
रंगे रंग राम सुनैन प्रवीन।

वनवास के समय सीता की रूप छटा दर्शनीय है—

चंद का अंश चकोरन के करि मोरन बिद्दुलता अनमानी। •
देसन सिध दिसेसन ब्रिध जोगेशन गंग के रंग पछानी।

सीता हरण के बाद राम के विरह का वर्णन जिस भावना से गुरुजी ने किया है वह बेजोड़ है—

तन राघव भेंट समीर जरी।
तज धीर सरोवर मांझ दुरी।
नहि तत्र चलो सत पत्र रहे।
जल जत पर त्रण पत्र रहे॥

विश्वामित्र जब राम और लक्ष्मण को लेकर जनकपुरी आते हैं तो वहाँ राम को लोगों ने जिस जिस भाव से देखा उसका वर्णन भी बड़ा मार्मिक है—

पुर नार देखे। सही काम लेखे।
रिप शत्र जाने। सिध साधु माने।
सिस बाल रूप। लह्यो भूपभूप।
लख्यो पउनहारी। भट शस्त्रधारी।

निसा चद जान्यो। बिन भान मान्यो।
गण रुद्र पेख्यो। सुरं इंद्र देख्यो।
श्रुत ब्रह्म जान्यो। द्विज ब्यास मान्यो।
हरी बिसन लेखे। सिया राम देखे।

इस चित्रण मे तुलसीदास के इस पद की छाप स्पष्ट दिखाई देती है—

जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि गुरु गोबिन्दसिंहजी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न महाकवि थे। अपनी राजनैतिक, धार्मिक और सामरिक व्यस्तता के बावजूद उन्होंने अपने समकालीन कवियो की तुलना मे सख्या, शैली विविधता, विषय विस्तार और रसोत्पत्ति की दृष्टि से कही अधिक लिखा है। हिन्दी भाषा मे विविध छन्दो के उपयोग की दृष्टि से उनकी काव्य प्रतिभा देखते बनती है। उन्होंने एक शब्द के छन्द से लेकर चौपाई और सवैया जैसे नाना प्रकार के छन्दो का सफल प्रयोग किया है। 'रामावतार' मे भी सवैया, चौपाई, दोहा, कवित्त, रसावल, भुजगप्रयात, अरुपा, त्रिभगी, मकरा, सिरखण्डी, पाधडी आदि छन्द दखने को मिलते हैं। हाँ, जहाँ तक रसो का सवाल है, उनकी दृष्टि करुण, भक्ति, शृगार आदि पर अधिक नही ठहरती।

उत्तर प्रदेश गुरु गोबिन्दसिंह साहित्य प्रकाशन समिति का प्रथम प्रयास 'रामावतार' के रूप मे आपके सामने है। इसका देवनागरी मे लिप्यन्तर समिति के महासचिव श्री शमशेरसिंह ने किया है। इस कार्य को उन्होंने जिस रुचि और निष्ठा से किया है उसके लिए वह बधाई के पात्र हैं। इसके प्रकाशन का दायित्व लने के लिए मैं देश की प्रमुख साहित्य सस्था भारतीय ज्ञानपीठ को साधुवाद देता हूँ। मुझे आशा है कि जैसा अपने गठन के बाद इस समिति ने वादा किया था, गुरुजी की दूसरी रचना 'चण्डी चरित्र' का भी देवनागरी मे शीघ्र प्रकाशन होगा और क्रमश उनकी अन्य रचनाओ को देवनागरी मे प्रस्तुत किया जाएगा।

गुरु गोबिन्दसिंह के व्यक्तित्व का ऐतिहासिक, धार्मिक और राजनैतिक पक्ष ही अभी तक प्रमुख रूप से हमारे सामने उजागर हो सका है। उनकी साहित्यिक उपलब्धि की जानकारी कम ही लागा को है। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का समग्र रूप से मूल्याकन हो सके इसके लिए आवश्यक है कि उनका साहित्य लोगों के सामने लाया जाये। इस दृष्टि से केवल देवनागरी मे ही नही, देश की विभिन्न भाषाओ मे गुरुजी के साहित्य के प्रकाशन की व्यवस्था की जानी चाहिए। मुझे विश्वास है कि देश के दूसरे प्रदेशो मे भी इस दिशा मे पहल होगी।

—श्री चन्द्रेश्वर प्र० ना० सिंह
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

राज भवन, लखनऊ
अगस्त 21, 1984

रामावतार

गुरुमुखी उच्चारण के लिए विशेष संकेत

प्रस्तुत कृति का लेखन मूलानुगामी है।

लेकिन पाठक यदि गुरुमुखी मे, मूलकर्ता की ही तरह, इसके काव्यपाठ का आनन्द लेना चाहें तो मात्राओ के उच्चारण मे इस नियम का विशेष ध्यान रखें—

सामान्यत, प्रथमाक्षर को छोडकर शब्द में अन्यत्र प्रयुक्त ह्रस्व इ या उ का उच्चारण नही होता है। जैसे तजि, सति, मिलि, दयालु, चीतु, किधु का गुरुमुखी मे उच्चारण तज, सत, मिल, दयाल, चीत, किध आदि होगा। लेकिन चित, हित, मित, दुर्ग, गुर आदि का उच्चारण यथावत् रहेगा।

'ह' अक्षर के साथ प्रयुक्त 'उ' का उच्चारण सभी अवस्थाओ मे होगा।

ओं अथ बीसवाँ राम अवतार कथनं

॥ चौपाई ॥

अथ मैं कहो राम अवतारा। जैस जगत मो करा पसारा।
बहुतु काल बीतत भ्यो जबै। असुरन बस प्रगट भ्यो तबै॥ १॥
असुर लगे बहु करै बिखाधा। किनहूँ न तिनै तनक मैं साधा।
सकल देव इकठे तब भए। छीर समुद्र जह थो तिह गए॥ २॥
बहु चिर बसत भए तिह ठामा। बिशन सहित ब्रहमा जिह नामा।
बार बार ही दुखत पुकारत। कान परी कल के धुनि आरत॥ ३॥

॥ तोटक छंद ॥

बिशनादक देव लगे बिमन।
म्रिद हास करी कर काल धुन।
अवतार धरो रघुनाथ हर।
चिर राज करो सुख सो अवध॥ ४॥

बिशनेश धुण सुण ब्रहम मुख।
अब सुद्ध चली रघुबस कथ।
जु पै छोर कथा कवि याह रढै।
इन बातन को इक ग्रथ बढै॥ ५॥

तिह ते कही थोरिऐ बीन कथा।
बलि त्वै उपजी बुध मद्धि जथा।
जह भूलि भई हम ते लहियो।
सु कबो तह अच्छ्र बना कहियो॥ ६॥

रघुराज भयो रघुवंस मणं।
जिह राज कर्‌यो पुर अउध घणं।
सोऊ काल जिण्यो न्रिपराज जवं।
भुअ राज कर्‌यो अज राज तवं॥ ७॥

अज राज हण्यो जव काल वली।
सु न्रिपत कथा दसरथ चली।
चिर राज करो सुख सो अवधं।
म्रिग मार विहार वण सु प्रभं॥ ८॥

जग धरम कथा प्रचुरी तव ते।
सु मित्रेश महीप भयो जव ते।
दिन रैण बनेसन बीच फिरै।
म्रिगराज करी म्रिग नेत हरै॥ ९॥

इह भांति कथा उह ठौर भई।
अब राम जया पर बात गई।
कुहडाम महां सुनिये शहरं।
तह कौसलराज न्रिपेश बरं॥ १०॥

उपजी तह धाम सुता कुशलं।
जिह जीत लई सस अंग कलं।
जब ही सुध पाइ सुयंब्र कर्‌यो।
अवधेश नरेशह चीन्ह वर्‌यो॥ ११॥

पुनि सैन समित्र नरेश बरं।
जिह जुध लयो मद्र देस हरं।
सुमित्रा तिह धाम भई दुहिता।
जिह जीत लई सस सूर प्रभा॥ १२॥

सोऊ वारि सवृद्ध भई जब ही।
अवधेशह चीन वर्‌यो तब ही।
गन याह भयो कशटुआर न्रिप।
जिह कैकई धाम सु तासु प्रभं॥ १३॥

इन ते ग्रह मो सुत जउन थिओ।
तव बैठ नरेश विचार किओ।
तव केकई नार विचार करी।
जिह ते सस सूरज सोभ धरी॥ १४॥

तिह ब्याहत माँग लए दुवर।
जिह ते अवधेश के प्राण हर।
समझी न नरेशर बात हिए।
तब ही तह को वर दोइ दिए॥ १५॥

पुन देव अदेवन जुद्ध परो।
जह जुद्ध घणो न्रिप आप करो।
हत सारथी स्यदन नार ह्वया।
यह कौतक देख नरेश चक्यो॥ १६॥

पुन रीझ दए दोऊ तीअ वर।
चित मो सु विचार कछू न कर।
कही नाटक मद्ध चरित्र कथा।
जय दीन सुरेश नरेश जथा॥ १७॥

अरि जीति अनेक अनेक विध्र।
सभ काज नरेस्वर कीन सिध्र।
दिन रैण विहारत मद्धि वण।
जल नैन दिजाइ तहा स्रवण॥ १८॥

पित मात तजे दोऊ अंध भुय।
गहि पात्र चल्यो जलु लैन सुय।
मुनि मो दिन काल सिधार तहाँ।
न्रिप बैठ पतउवन बाँध तहाँ॥ १९॥

भभक्त घट अनि नादि हुअ।
धुनि कान परी अज राजसुअ।
गहि पाण सु बाणहि तान धन।
म्रिग जाण दिज सर सुद्ध हन॥ २०॥

गिर ग्यो सु लगे सर सुद्ध मुन।
निसरी मुख ते हहकार धुन।
म्रिगनांत कहा न्रिप जाइ लहै।
दिज देख दोऊ कर दांत गहै॥ २१॥

॥ सरवण बाच ॥

कछु प्रान रहे तिह मद्ध तन।
निकरत कहा जिय विप्प न्रिप।
मुर तातरुमात न्रिचरछ परे।
तिह पान पिआइ न्रिपाघ मरे॥ २२॥

॥ पाधड़ी छंद ॥

बिन चच्छ भूप दोऊ तात मात।
तिन देह पान तुह कही बात।
मम कथा न तिन कहियो प्रबीन।
सुनि मर्‍यो पुत्र तेउ होहि छीन॥ २३॥

इह भांत जबै दिज कहै बैन।
जल सुनत भूप चुइ चले नैन।
ध्रिग मोह जिनसु कीनो कुकरम।
हति भयो राज अरु गयो धरम॥ २४॥

जब लयो भूप तिह सर निकार।
तब तजे प्राण मुन बर उदार।
पुन भयो राय मन मै उदास।
ग्रिह पलट जान की तजी आस॥ २५॥

जिय ठटी की धारो जोग भेस।
कहूँ बसौ जाई बनि त्यागि देस।
किह काज मोर यह राज साज।
दिज मारि कियो जिन अस कुकाज॥ २६॥

इह भांत कही पुनि न्रिप प्रबीन।
सभ जगति काल करमं अधीन।

अब करो कछू ऐसो उपाइ।
जा ते सु बचै तिह तात माइ ॥ २७ ॥

डरि लयो कुंभ सिर पै उठाइ।
तह गयो जहाँ दिज तात माइ।
जब गयो निकट तिन के सु धार।
तब लखी दुहूँ तिह पाव चार ॥ २८ ॥

॥ दिज बाच राजा सो ॥

कह कहो पुत्र लागी अबार।
सुनि रह्यो मोन भूपत उदार।
फिरि कह्या काहि बोलत न पूत।
चुप रहे राज लहिकै कमूत ॥ २९ ॥

न्रिप दियो पान तिंह पान जाइ।
चकि रहे अंध तिह कर छुहाइ।
कर कोप कह्यो तू आहि कोइ।
इम सुनत शब्द न्रिप दयो रोइ ॥ ३० ॥

॥ राजा बाच दिज सो ॥

हउ पुत्र घात तव ब्रहमणेश।
जिह हन्यो स्रवण तव सुत सुदेश।
मैं पर्‍यो सरण दसरथ राइ।
चाहो सु करो मोहि बिप्प आइ ॥ ३१ ॥

राखै तु राख मारै तु मार।
मैं परयो सरण तुमरै दुआर।
तब कह्यो किनो दसरथ राइ।
बहु काष्ट अगन द्वै देइ मँगाइ ॥ ३२ ॥

तब लियो अधिक काशट मँगाइ।
चड बैठे तहाँ सल्ह कँउ बनाइ।
चहूँ ओर दई ज्वाला जगाइ।
दिज जान गई पावक सिराइ ॥ ३३ ॥

तव जोग अगनि तन ते उप्राज।
दुहूँ मरन जरन को सज्यो साज।
ते भसम भए तिह बीच आप।
तिह कोप दुहूँ न्रिप दियो स्राप ॥ ३४ ॥

॥ दिज बाच राजा सो ॥

जिम तजे प्राण हम सुति बिछोह।
तिम लगो स्राप सुन भूप तोह।
इम भाख जर्यो दिज सहित नारि।
तज देह कियो सुरपुर बिहार ॥ ३५ ॥

॥ राजा बाच ॥

तव चही भूप हउँ जरो आज।
कै अतिथ होउँ तज राज साज।
कै ग्रहि जै कै करहो उचार।
मैं दिज आयो निज कर सँघार ॥ ३६ ॥

॥ देवबानी बाच ॥

जब भई देवबानी बनाइ।
जिन करो दुक्ख दसरथ राइ।
तव धाम होहिगे पुत्र बिशन।
सभ काज आज सिध भए जिसन ॥ ३७ ॥

ह्वै है तु नाम रामावतार।
कर है सु सकल जग को उधार।
कर है सु तनक मै दुष्ट नास।
इह भाँत कीर्ति करहै प्रकास ॥ ३८ ॥

॥ नाराज छंद ॥

नचिंत भूप चित धाम राम राइ आइहै।
दुरत दुष्ट जीत कै सु जैत पत्र पाइहै।
अखरब गरब जे भरे सु सरब गरब घाल है।
फिराइ छत्र सीस पै छतीस छोण पाल हैं ॥ ३९ ॥

अखड खड खड कै अडड डड दड हैं।
अजीत जीत जीत कै बिसेख राज मड है।
कलक दूर कै सभै निसक लक घाइ हैं।
सु जीत बाह बीस गरब ईस को मिटाइ है ॥ ४० ॥

सिधार भूप धाम को इतो न शोक को धरो।
बुलाइ बिप्प छोड के अरभ जग्ग को करो।
सुणत बैण राव राजधानिऐ सिधारिअ।
बुलाइकै बशिष्ट राजसूइ को सु धारिअ ॥ ४१ ॥

अनेक देस देस के नरेश बोलकै लए।
दिजेश बेस बेस के छितेश धाम आ गए।
अनेक भांत मान कै दिवान बोलकै लए।
सु जग्ग राजसूइ को अरभ ता दिना भए ॥ ४२ ॥

सु पादि अरघ आसन अनेक धूप दीप कै।
पखार पाइ ब्रहमण प्रदच्छणा बिसेख दै।
करोर कोर दन्छना दिजेक एक कउ दई।
सु जग्ग राजसूइ की अरभ ता दिना भई ॥ ४३ ॥

नटेश देस देस के अनेक गीत गावही।
अनत दान मान लै बिसेख सोभ पावही।
प्रसनि लोग जे भए सु जात कउन ते कहे।
बिमान आसमान के पछान मो न हुइ रहे ॥ ४४ ॥

हुती जिती अपच्छरा चली सुवर्ग छोर कै।
बिसेख हाइ भाइ कै नचत अग मोर कै।
बिअत भूप रीझही अनत दान पावही।
बिलोक अच्छरान को अपच्छरा लजावही ॥४५॥

अनत दान मान दै बुलाइ सूरमा लए।
दुरत सैन सग दै दसो दिसा पठै दए।
नरेश देस देस के न्रिपेश पाइ पारिअ।
महेश जीत कै सभै सु छत्रपत्र ढारिअ ॥४६॥

॥ स्वामल छंद ॥

जीत जीत न्रिप नरेशुर शत्र मित्र बुलाइ।
बिप्र आदि बशिष्ट ते लै कै सभै रिखराइ।
क्रुद्ध जुद्ध करे घने अवगाहि गाहि सुदेश।
आन आन अवधेश के पग लागिअ अवनेश ॥४७॥

भाँति भाँतिन दै लए सनमान आन न्रिपाल।
अरब खरबन दरब दै गजराज बाल बिसाल।
हीर चीर न को सकै गन जटत जीन जराइ।
भाउ भूखन को कहै बिध ते न जात बताइ ॥४८॥

पशम बस्त्र पटंबरादिक दिए भूखन भूप।
रूप अरूप सरूप सोभित कउन इंद्र कररूपु।
दुष्ट पुष्ट त्रसैं सभै थरहर्यो मुनि गिरराइ।
काटि काटिन दै मुझैं न्रिप बाँटि बाँटि लुटाइ ॥४९॥

बेदधुन करि कै सभै दिज किअस जग्य अरंभ।
भाँति भाँति बुलाइ होमत रित्तजान असंभ।
अधिक मुनिवर जउ कियो विध पूरब होम बनाइ।
जग कुंडहु ते उठे तब जगपुरख अकुलाइ ॥५०॥

खीर पात्र कढाइ लै करि दीन न्रिप के आन।
भूप पाइ प्रसनि भ्यो जिमु दारदी लै दान।
चत्र भाग कर्यो तिसैं निज पान लै न्रिपराइ।
एक एक दयो दुहू त्रिय एक को दुह भाइ ॥५१॥

गरभवंत भई त्रियो त्रिय छीर को करि पान।
ताहि राखत भी भलो दस दोइ मास प्रमान।
मास त्रिउदसमो चढ्यो तब संतन हेत उधार।
रावणारि प्रगट भए जग आन राम अवतार ॥५२॥

भरथ उछमन शत्रघन पुन भए तीन कुमार।
भाँति भाँतिन बाजिय न्रिपराज बाजत द्वार।
पाइ लाग बुलाइ बिप्पन दीनदान दुरंति।
शत्र नासत होहिगे सुख पाइ हैं सभ संत ॥५३॥

लाल जाल प्रवेष्ट रिखवर वाज राज समाज।
भाँति भाँतिन देत भ्यो दिज पत्तन को न्रिपराज।
देस अउर विदेस भीतरि ठउर ठउर महंत।
नाच नाच उठे सभै जनु आज लाग बसत ॥५४॥

किंकणीन के जाल भूखित बाज अउ गजराज।
साज साज दए दिजेशन आज कउशलराज।
रंक राज भए घने तह रंक राजन जैस।
राम जनमत भयो उतसव अउधपुर मै ऐस ॥५५॥

दुंदभ अउर म्रिदंग तूर तुरंग तान अनेक।
बीन बीन बजंत छीन प्रबीन बीन बिसेख।
झांझ बार तरंग तुरही भेरनादि नियान।
मोहि मोहि गिरे धरा पर सरब ब्योम बिवान ॥५६॥

जत्र तत्र विदेस देसन होत मंगलचार।
बैठ बैठ करै लगे सभ विप्र बेद विचार।
धूप दीप महीप ग्रेह सनेह देत बनाइ।
फूल फूल फिरै सभै गण देव देवन राइ ॥५७॥

आज काज भए सभै इह भांति बोलत बैन।
भूम भूर उठी जयतधुन बाज बाजत गैन।
ऐन ऐन धुजा बधी सभ बाट बंदनवार।
लीप लीप धरे मल्यागर हाट पाट बजार ॥५८॥

साज साज तुरंग कंचन देत दीनन दान।
मसत हसत दए अनेकन इंद्र दुरद समान।
किंकणी के जाल भूखत दए स्यंदन सुद्ध।
गाहनन के पुर मनो इह भांत आवत बुद्ध। ५९॥

बाज साज दए इते जिह पाइऐ नहि पार।
द्योस द्योस बढै लग्यो रनधीर रामवतार।
शस्त्र शास्त्रन की सभै बिध दीन ताहि सुधार।
अष्ट द्योसन मो गए लै सरब रामकुमार ॥६०॥

बान पान कमान लै बिहरत सरजू तीर।
पीत पीत पिछोर कारन धीर चारहुं बीर।
देख देख न्रिपाल के बिहरत बालक संग।
भांत भांतन के धरे तन चीर रंग तरंग ॥६१॥

ऐस बात भई इतै उह ओर बिस्वामित्र।
जग्ग को सु कर्‌यो अरंभन तोखनारथ पित्र।
होम की लै बासना उठ धात दैंत दुरंत।
लूट खात सभै समग्गरी मारकूट महंत ॥६२॥

लूट खात हविख्य जे तिन पै कछू न बसाइ।
ताक अउधह आइयो तब रोस कै मुनिराइ।
आइ भूपत कउ कहा सुत देहु मोकउ राम।
नात्र तोकउ भसम करि हउ आज ही इह ठाम ॥६३॥

कोप देख मुनीश कउ न्रिप पूत ता संग दीन।
जग्ग मंडल कउ चल्यो लै ताहि संगि प्रबीन।
एक मारग दूर है इक निअर है सुनि राम।
राह मारत राछसी जिह तारका गनि नाम ॥६४॥

जउन मारग तीर है तिह राह चालहु आज।
चित्त चिंत न कीजिऐ दिव देव के है काज।
बाटि चापे जात हैं तब लउ निसाचर आन।
जाहुगे कत राम कहि मगि रोकियो तजि कान ॥६५॥

देख राम निसाचरी गहि लीन बान कमान।
भाल मध प्रहारियो सुर तान कान प्रमान।
बान लागत ही गिरी बिसभारु देहि बिसाल।
हाथि स्री रघुनाथ के भ्यो पापनी को काल ॥६६॥

ऐस ताहि संघार कै कर जग्ग मंडल मंड।
आइगे तब लउ निसाचर दीह दोइ प्रचंड।
भाज भाज चले सभै रिख ठाढ भे हठि राम।
जुद्ध क्रुद्ध कर्‌यो तिहूं तिह ठउर सोरह जाम ॥६७॥

मार मार पुकार दानव शस्त्र अस्त्र सँभार।
वान पान कमान कउ धर तवर तिच्छ कुठार।
घेरि घेरि दसो दिशा नहि सूरवीर प्रमाथ।
आइकैं जूझे सभै रण राम एकल साथ ॥६८॥

॥ रसावल छंद ॥

रण पेख राम । धुज धरम धाम।
चहूँ ओर ढूके । मुख मार कूके ॥६९॥
वजे घोर वाजे । धुण मेघ लाजे।
झडा गड्ड गाडे । मडे वैर वाडे ॥७०॥
कडक्के कमाण । झडक्के त्रिपाण ।
ढला ढुक्क ढालै । चली पीत पालै ॥७१॥
रण रग रत्ते । मनो मल्ल मत्ते ।
सर धार वरखे । महिखुआस करखे ॥७२॥
करी बान वरखा । सुणे जीत करखा ।
सुबाहु मरीच । चले वाछ मीच ॥७३॥
इकै वार टूटे । मनो वाज छूटे ।
लयो घेरि राम । सस जेम काम ॥ ४॥
घिर्‌यो दैत सैण । जिम रुद्र मैण ।
रुके राम जग । मनो सिंघ गग ॥७५॥
रण राम वज्जे । धुण मेघ लज्जे ।
रुले तच्छ मुच्छ । गिरे सूर स्वच्छ ॥७६॥
चलै ऐंठ मुच्छैं । कहाँ राम पुच्छैं ।
अवै हाथि लागे । कहा जाहु भागे ॥७७॥
रिप पेख राम । हठ्यो धरम धाम ।
करै नैण रात । धुनरवेद ज्ञात ॥७८॥
धन उग्र कर्ख्यो । सरधार वरख्यो ।
हणी शत्र सैण । हसे देव गैण ॥७९॥

भजो सरव सैंण । लखो श्रीच नैणं ।
फिर्यो रोस प्रेर्यो । मनो साप छेड़्यो ॥८०॥
हण्यो राम वाण । वर्यो सिध प्याण ।
तज्यो राम देस । लयो जोग भेस ॥८१॥
सु वस्त्र उतारे । भगवे वस्त्र धारे ।
वस्यो लक वाग । पुनर द्रोह त्याग ॥८२॥
सरोस सुवाह । चड्यो लै सिपाहं ।
ठट्यो आण जुद्धं । भयो नाद उद्ध ॥८३॥
सुभ सैंण साजी । तुरे तुद ताजी ।
गजा जूह गज्जे । धुण मेघ लज्जे ॥८४॥
ढका ढुक्क ढाल । सुभी पीत ताल ।
गहे शस्त्र उट्ठे । सरधार वुट्ठें ॥८५॥
वहै अगन अस्त्र । छुटे सरव शस्त्र ।
रँगे स्रोण ऐसे । चडे ब्याह जैसे ॥८६॥
घणे घाइ घूमे । मदी जैंस झूमे ।
गहे वीर ऐसे । फुले फूल जैसे ॥८७॥
हन्यो दानवेस । भयो आप भेस ।
वजे घोर वाजे । धुण अब्भ्र लाजे ॥८८॥
रथी नाग कूटे । फिरैं वाज छूटे ।
भयो युद्ध भारी । छटी रुद्र तारी ॥८९॥
वजे घट भेरी । डहे डाम डेरी ।
रणके निशाण । कणछे किकाण ॥९०॥
घहा घूह धोप । टका टूक टोप ।
फटे चरम वरम । पल्यो छन धरम ॥९१॥
भयो दुद जुद्ध । भर्यो राम क्रुद्ध ।
कटी दुप्ट वाह । सँघार्यो सुवाह ॥९२॥
त्रसे दैत भाजे । रण राम गाजे ॥
भुअ भार उतार्यो । रिखोश उवार्यो ॥९३॥

सभै साध हरखे। भए जीत करखे।
करै देव अरचा। ररैं वेद चरचा ॥६४॥
भयो जग्ग पूर। गए पाप दूर।
सुर सरब हरखें। धनधार बरख ॥६५॥

॥ इति स्री बचित्र नाटक ग्रंथे रामावतारे कथा सुबाहु मारीच बधह
जग्य संपूरन करन समापतम ॥

अथ सीता सुयबर कथन ॥

॥ रसावल छंद ॥

रच्यो सुयम्ब्र सीता। महाँ सुद्ध गीता।
बिध चार बैणी। म्रगीराज नैणी ॥६६॥
सुण्यो मोननेस। चतुर चार देस।
लयो संग राम। चल्यो धरम धाम ॥६७॥
सुनो राम प्यारे। चलो साथ हमारे।
सोआ सुयम्ब्र कीनो। न्रिप बाल लीनो ॥६८॥
तहा प्रात जइये। सिया जीत लइऐ।
कही मान मेरी। बनी बात तेरी ॥६९॥
बलो पान बाके। निपाता पिनाके।
सिया जात आनो। हना सरब दाना ॥१००॥
चल राम संग। सुहाए निखंग।
भए जाइ ठाढे। महाँ मोद बाढे ॥१०१॥
पुर नार देखैं। सही काम लेखैं।
रिप शत्र जान। सिध साध मानैं ॥१०२॥
सिस बाल रूप। लह्यो भूप भूप।
तप्यो पउनहारी। भर शस्त्रधारी ॥१०३॥
निसा चंद जान्यो। दिन भान मान्यो।
गण रुद्र रेख्यो। सुर इंद्र देख्यो ॥१०४॥
स्रुत ब्रहम जान्यो। दिज ब्यास मान्यो।
हरी बिशन लेखे। सियाराम देखे ॥१०५॥

भजी सरव सैण । लखी म्रीच नैण ।
फ्रियो रोस प्रेर्‌यो । मनो साप छेड़्यो ॥८०॥
हण्यो राम बाण । कर्‌यो सिंध प्याण ।
तज्यो राम देस । लयो जोग भेस ॥८१॥
सु वस्त्र उतारे । भगवे वस्त्र धारे ।
वस्यो लक वाग । पुनर द्रोह त्याग ॥८२॥
सरोस सुवाह । चड्यो लै सिपाह ।
ठट्यो आण जुद्ध । भयो नाद उद्ध ॥८३॥
सुभ सैण साजी । तुरे तुद ताजी ।
गजा जूह गज्जे । घुण मेघ लज्जे ॥८४॥
ढका ढुक्क ढाल । सुभी पीत लाल ।
गहे शस्त्र उट्‌ठे । सरधार वुट्‌ठे ॥८५॥
वहै अगन अस्त्र । छुटे सरव शस्त्र ।
रँगे स्रोण ऐसे । चडे ब्याह जैसे ॥८६॥
घणे घाइ घूमे । मदी जैस झूमे ।
गहे वीर ऐसे । फुले फूल जैसे ॥८७॥
हन्यो दानवेस । भयो आप भेस ।
वजे घोर वाजे । धुण अभ्भ्र लाजे ॥८८॥
रथी नाग कूट । फिरैं वाज छूटे ।
भयो युद्ध भारी । छटी रुद्र तारी ॥८९॥
वजे घट भेरी । डहे डाम डरी ।
रणके निशाण । कणछे किकाण ॥९०॥
धहा धूह धोप । टका टूक टोप ।
कटे चरम वरम । पल्यो छत्र धरम ॥९१॥
भयो दुद जुद्ध । भर्‌यो राम क्रुद्ध ।
कटी दुष्ट वाह । सँघार्‌यो सुवाह ॥९२॥
त्रसे दैंत भाजे । रण राम गाजे ॥
भुअ भार उतार्‌यो । रिखीश उबार्‌यो ॥९३॥

सर्भे- साध हरखे। भए जीत करखे।
करे देव अरचा। ररै वेद चरचा ॥६४॥
भयो जग्ग पूर। गए पाप दूर।
सुरं सरव हरखें। धनधार वरखें ॥६५॥

॥ इति स्री बचित्र नाटक ग्रथे रामावतारे कथा सुबाहु मारीच वधह जग्य सपूरन करन समापतम ॥

अथ सीता सुयबर कथनं ॥

॥ रसावल छद ॥

रच्यो सुयब्र सीता। महां सुद्ध गीता।
विधं चार वैणी। म्रिगीराज नैणी ॥९६॥
सुण्यो मोननेस। चतुर चार देस।
लयो सग राम। चल्यो धरम धाम ॥९७॥
सुनो राम प्यारे। चलो साथ हमारे।
सोआ सुयब्र कीनो। न्रिप बोल लीनो ॥९८॥
तहा प्रात जइये। सिया जीत लइए।
कही मान मेरी। बनी बात तेरी ॥९९॥
वलो पान वाके। निपातो पिनाके।
सिया जात आनो। हनो सरब दानो ॥१००॥
चले राम सग। सुहाए निखग।
भए जाइ ठाढे। महां मोद बाढे ॥१०१॥
पुर नार देखें। सही काम लेखें।
रिप शत्र जानें। सिध साध मानें ॥१०२॥
सिस बाल रूप। लह्यो भूप भूप।
तप्यो पउनहारी। भर शस्त्रधारी ॥१०३॥
निसा चद जान्यो। दिन भान मान्यो।
गण रुद्र रेख्यो। सुर इद्र देख्यो ॥१०४॥
स्रुत ब्रहम जान्यो। दिज ब्यास मान्यो।
हरी बिशन लेखे। सियाराम देखे ॥१०५॥

सिया पेख राम। विधी वाण काम।
गिरि झूमि भूम। मदी जाणु घूमं ॥१०६॥
उठी चेत ऐसे। महांवीर जैसे।
रही नैन जोरी। सस जिऊँ चकोरी ॥१०७॥
रहे मोह दोनो। टरे नाहि कोनो।
रहे ठांढ ऐसे। रण वीर जैसे ॥१०८॥
पठे कोट दूत। चले पउन पूत।
कुवडान डारे। नरेशो दिखारे ॥१०९॥
लयो राम पान। भर्‌यो वीर मान।
हस्यो ऐंच लीनो। उभै टूक कीनो ॥११०॥
सभै देव हरखे। घन पुहप वरखे।
लजाने नरेश। चले आप देस ॥१११॥
तवै राजकन्या। तिहूँ लोक धन्या।
धरे फूल माला। वर्‌यो राम बाला ॥११२॥

॥ भुजंगप्रयात छंद ॥

किधौ देवकन्या किधौ वासवी है।
किधौ जच्छनी किन्नरी नागनी छैं।
किधौ गध्रबी दैतजा देवता सी।
किधौ सूरजा सुध सोधी सुधा सी ॥११३॥
किधौ जच्छ विद्याधरी गध्रवी है।
किधौं रागनी भाग पूरे रची है।
किधौ सुवर्न की चित्र की पुत्रका है।
किधौ काम की कामनो की प्रभा है ॥११४॥
किधौ चित्र की पुत्रका सी बनी है।
किधौ सखनी चित्रनी पदमनी है।
किधौं राग पूरे भरी रागमाला।
वरी राम तैसी सिया आज बाला ॥११५॥
छके प्रेम दोनो लगे नैन ऐसे।
मनो फाध फांधे म्रिगीराज जैसे।

विघ वाक वैणी कट देस छीण ।
रँगे रग राम सुनैण प्रवीण ॥११६॥
जिणी राम सीता सुणी स्रउण राम ।
गहे शस्त्र अस्त्र रिस्यो तउन जाम ।
कहा जात भाख्यो रमो राम ठाढे ।
लखो आज कैसे भए वीर गाढे ॥११७॥

॥ भाखा पिंगल दी ॥

॥ सुन्दरी छद ॥

भट हुंके धुके वकारे । रण वज्जे गज्जे नगारे ।
रण हुल्ल कलोल हुल्लाल । ढल हल्ल टल्ल उच्छाल ॥११८॥
रण उटठे कुटठे मुच्छाले । सर छुट्टे जुट्टे भीहाले ।
रतु डिग्गे भिग्गे जोधाण । कणणछे कच्छे किकाण ॥११९॥
भिखणीय भेरी भुकार । झल लके खडे दुद्वार ।
जुद्ध जुज्झार वुब्बाडे । रुल्लिए पखरिए आहाडे ॥१२०॥
वक्के वब्बाडे वकार । नच्चे पक्खरिए जुज्झार ।
वज्जे सँगलीए भीहाले । रण रत्ते मत्ते मुच्छाले ॥१२१॥
उछलीए कच्छी कच्छाले । उड्डे जणु पब्ब पच्छाले ।
जुट्टे भर छुट्टे मुच्छाले । रुलिए आहाड पखराले ॥१२२॥
वज्जे सपूर नगारे । कच्छे कच्छीले लुज्झारे ।
गण हूर पूर गैणाय । अजनय अजे [illegible]
रण णक्के नाद नाफीर । वब्बाणे वीर [illegible]
उग्घे जण नेजे जट्टाले । छुट्टट सिल सितिय [illegible]
भट डिग्गे घाय अग्घाय । तन मुच्भे अद्धो [illegible]
दल गज्जे वज्जे नीशाण । चर्चालए ताजी [illegible]
चव दिस्य चिंबी चावंडे । खडे खडे कै [illegible]
रण डक्के गिद्ध उद्धाण । जै जपै सिद्ध [illegible]
फुल्ले जण किंम्सक बामत । रण रत्त मुग [illegible]
डिग्गे रण सुडी मुडाण । धर भूर [illegible]

जच्छ भुजग दिसा विदिसान के दानव देव दुहूँ डर माने ।
स्री रघुनाथ कमान ले हाथ कहो रिसकै किह पै सर ताने ॥१४६॥

॥ परसराम बाच राम सो ॥

जेतक बैन कहे सु कहे जु पै फेरि कहे तु पै जीत न जैहो ।
हाथि हथिआर गहे सु गहे जुपै फेरि गहे तु पै फेरिन लैहो ।
राम रिसै रण मै रघुबीर कहो भजिकै कत प्रान बचैहो ।
तोर सरासन शंकर को हरि सीअ चले घरि जान न पैहो ॥१५०॥

॥ राम बाच परसराम सो ॥

॥ सवैया ॥

बोल कहे सु सहे दिज जू जु पै फेरि कहे तु पै प्रान खवैहो ।
बोलत ऐंठ कहा सठ जिऊँ सभ दांत तुराइ अबै घरि जैहो ।
धीर तबै लहिहै तुम कउ जद भीर परी इक तीर चलैहो ।
बात सँभार कहो मुखि ते इन बातन को अब ही फलि पैहो ॥१५१॥

॥ परसराम बाच ॥

॥ सवैया ॥

तउ तुम साच लखो मन मै प्रभ जउ तुम रामवतार कहाओ ।
रुद्र कुवंड बिहंडिय जिउँ कर तिउँ अपनो बल मोहि दिखाओ ।
तउही गदा कर सारंग चक्र लता भ्रिग की उर मद्ध सुहाओ ।
मेरो उतार कुवंड महांबल मोहू कउ आज चडाइ दिखाओ ॥१५२॥

॥ कबि बाच ॥

॥ सवैया ॥

स्री रघुबीर सिरोमन सूर कुवंड लयो करमै हसिकै ।
लिय चांप चटाक चडाइ बली खट टूक कर्यो छिन मै कसिकै ।
नभ की गति ताहि हती सर सो अध बीच ही बात रही बसिकै ।
न बसात कछू नट के बट ज्यो भव पास निशंगि रहै फसिकै ॥१५३॥

॥ इति स्री राम जुद्ध जयत ॥

।। अथ अउध प्रवेश कथनं ।।

।। सवैया ।।

भेट भुजा भर अक भले भरि नैन दोऊ निरखे रघुराई ।
गुजत भ्रिग कपालन ऊपर नाग लवग रहे लिव लाई ।
कज कुरग कलानिध केहरि कोकल हेर हिए हहराई ।
बाल लखें छब खाट परें नहि बाट चलें निरखे अधिकाई ।।१५४।।

सीय रही मुरझाइ मनै मन राम कहा मन बात धरेंगे ।
तोर सरासनि शकर को जिम मोहि बर्यो तिम अउर बरेंगे ।
दूसर ब्याह बधू अब ही मन ते मुहि नाथ बिसार डरेंगे ।
देखत हौ निज भाग भले बिध आज कहा इह ठौर करेंगे ।।१५५।।

तउ ही लउ राम जिते दिज कउ अपने दल आइ बजाइ बधाई ।
भग्गुल लोक फिरें सभ ही रण मो लख राघव की अधकाई ।
सीय रही रन राम जिते अवधेशर बात जबै सुनि पाई ।
फूलि गयो अति ही मन मै धन के घन की बरखा बरखाई ।।१५६।।

बदनवार बधी सभ ही दर चदन सौ छिरके ग्रहि सारे ।
केसर डारि बरातन पैं सभ ही जन हुइ पुरहूत पधारे ।
बाजत ताल मुचग पखावज नाचत कोटनि कोटि अखारे ।
आनि मिले सभ ही अगुआ सुत कउ पितु लै पुर अउध सिधारे ।।१५७।।

।। चौपाई ।।

सभहू मिलि गिल कियो उछाहा ।
पूत तिहूँ कउ रच्यो बियाहा ।
राम सिया बर कै घरि आए ।
देस बिदेसन होत बधाए ।।१५८।।

जह तह होत उछाह अपारू ।
तिहूँ सुतन को ब्याह बिचारू ।
बाजत ताल म्रिदग अपार ।
नाचत कोटन कोट अखार ।।१५९।।

जच्छ भुजग दिसा विदिसान के दानव देव दुहूँ डर माने ।
स्री रघुनाथ कमान ले हाथ कहो रिसकै किह पै सर ताने ॥१४६॥

॥ परसराम बाच राम सों ॥

जेतक बैन कहे सु कहे जु पै फेरि कहे तु पै जीत न जैहो ।
हाथि हथिआर गहे सु गहे जुपै फेरि गहे तु पै फेरिन लैहो ।
राम रिसै रण मैं रघुबीर कहो भजिकै कत प्रान बचैहो ।
तोर सरासन शंकर को हरि सीअ चले घरि जान न पैहो ॥१५०॥

॥ राम बाच परसराम सों ॥

॥ सवैया ॥

बोल कहे सु सहे दिज जू जु पै फेरि कहे तु पै प्रान खवैहो ।
बोलत ऐंट कहा सठ जिऊँ सभ दांत तुराइ अबै घरि जैहो ।
धीर तबै लहिहै तुम कउ जद भीर परी इक तीर चलैहो ।
बात सँभार कहो मुखि ते इन बातन को अब ही फलि पैहो ॥१५१॥

॥ परसराम बाच ॥

॥ सवैया ॥

तउ तुम साच लखो मन मैं प्रभ जउ तुम रामवतार कहाओ ।
रुद्र कुवंड बिहंडिय जिउँ कर तिउँ अपनो बल मोहि दिखाओ ।
तउही गदा कर सारंग चक्र लता भ्रिग की उर मद्ध सुहाओ ।
मेरो उतार कुवंड महाबल मोहू कउ आज चडाइ दिखाओ ॥१५२॥

॥ कबि बाच ॥

॥ सवैया ॥

स्री रघुबीर सिरोमन सूर कुवंड लयो करमै हसिकै ।
लिय चांप चटाक चडाइ बली खट टूक कर्यो छिन मैं बसिकै ।
नभ की गति ताहि हती सर सो अध बीच ही बात रही बसिकै ।
न बसात कछू नट के बट ज्यो भव पास निशंगि रहै फसिकै ॥१५३॥

॥ इति स्री राम जुद्ध जयत ॥

॥ अथ अउध प्रवेश कथनं ॥

॥ सवैया ॥

भेट भुजा भर अंक भले भरि नैन दोऊ निरखे रघुराई ।
गुंजत भ्रिंग कपोलन ऊपर नाग लवंग रहे लिव लाई ।
कंज कुरंग कलानिध केहरि कोकन हेर हिए हहराई ।
बाल लखै छब खाट परै नहि बाट चलै निरखे अधिकाई ॥१५४॥

सीय रही मुरझाइ मनै मन राम कहा मन बात धरैंगे ।
तोर सरासनि शंकर को जिम मोहि बर्‍यो तिम अउर वरैंगे ।
दूसर ब्याह बधू अब ही मन ते मुहि नाथ बिसार डरैंगे ।
देखत हौ निज भाग भले विध आज कहा इह ठौर करैंगे ॥१५५॥

तउ ही लउ राम जिते दिज कउ अपने दल आइ बजाइ वधाई ।
भग्गुल लोक फिरै सभ ही रण मो लख राघव की अधकाई ।
सीय रही रंग राम जिते अवधेशर बात जबै सुनि पाई ।
फूलि गयो अति ही मन मैं धन के घन की बरखा बरखाई ॥१५६॥

बंदनवार बधी सभ ही दर चंदन सौ छिरके ग्रिहि सारे ।
केसर डारि बरातन पै सभ ही जन हुइ पुरहूत पधारे ।
बाजत ताल मुचंग पखावज नाचत कोटनि कोटि अखारे ।
आनि मिले सभही अगुआ सुत कउ पितु लै पुर अउध सिधारे ॥१५७॥

॥ चौपाई ॥

सभहू मिलि गिल कियो उछाहा ।
पूत तिहूँ कउ रच्यो बियाहा ।
राम सिया बर कै घरि आए ।
देस बिदेसन होत बधाए ॥१५८॥

जह तह होत उछाह अपारू ।
तिहूँ सुतन को ब्याह विचारू ।
बाजत ताल म्रिदंग अपारं ।
नाचत कोटन कोट अखारं ॥१५९॥

वन वन वीर पखरिआ चले।
जोवनवत सिपाही चले।
भए जाइ इसथत न्रिप दर पर।
महारथा अरु महा धनुरधर ॥१६०॥

वाजत जग मुचग अपार।
ढोल म्रिदग सुरग सुधार।
गावत गीत चचला नारी।
नैन नचाइ बजावत तारी ॥१६१॥

भिच्छकन हवस न धन की रही।
दार स्वरन सरता हुइ वही।
एक बात मागन कउ आवै।
बीसक बात धरै लै जावै ॥१६२॥

वन वन चलत भए रघुनदन।
फूले पुहप वसत जानु वन।
सोभत वेसर अग डरायो।
आनद हिए उछर जन आयो ॥१६३॥

साजत भए अमित चतुरगा।
उमँड चलत जिह् विध करि गगा।
भल भल कुअर चडे सज सैना।
कोटक चडे सूर जनु गैना ॥१६४॥

भरथ सहित सोभत सभ भ्राता।
कहि न परत मुख ते कछु वाता।
मातन मन सुदर सुत मोहै।
जनु दित ग्रहि रवि सस दोऊ सोहै ॥१६५॥

इह विध कै सज सुद्ध बराता।
कछु न परत कहि तिनकी वाता।
वाढत कहत ग्रथ बातन कर।
बिदा होन सिस चले तात घर ॥१६६॥

आइ पिता कहु कीन प्रनामा।
जोर पान ठाढे वल धामा।
निरख पुत्र आनद मन भरे।
दान वहुत बिप्पन कह करे ॥१६७॥

तात मात लै कठि लगाए।
जन दुइ रतन निरधनी पाए।
विदा माँग जव गए राम घर।
सीस रहे धर चरन कमल पर ॥१६८॥

॥ कवित्त ॥

राम विदा करे सिर चूम्यो पान पीठ धरे
आनद सो भरे लै तवोर आगे धरे हैं।
दुदभी वजाइ तीनो भाई यौ चलत भए
मानो सूर चद कोटिआन अवतरे है।
केसर सो भीजे पट सोभा देत ऐसी भाँत
मानो रूप राग के सुहाग भाग भरे है।
राजा अवधेश के कुमार ऐसे सोभा देत
कामजू ने कोटक कलियोग कैंधौ करे हैं ॥१६९॥

॥ कवित्त ॥

अउध ते निसर चले लीने सगि सूर भले
रन ते न टले पले सोभाहूँ के धाम के।
सुदर कुमार उरहार सोभत अपार
तीनो लोग मद्ध की मुहय्या सभ वाम के।
दुरजन दलय्या तीनो लोक के जितय्या तीनो
राम जू के भय्या हैं चहय्या हरनाम के।
वुद्ध के उदार हैं शिगार अवतार दान
सील के पहार कै कुमार बनै राम के ॥१७०॥

॥ अस्व बरनन ॥

॥ कवित्त ॥

नागरा के नैन है कि चातरा के बैन है
बघूला मानो गैन कैसे तैसे थहरत है।
न्रितका के पाउ हैं कि जूप कैसे दाउ है
कि छल को दिखाउ कोऊ तैसे बिहरत है।
हाके बाज बीर हैं तुफग कैसे तीर है
कि अजनी के धीर है कि धुजा से पहरत हैं।
लहरै अनग की तरग जैसे गग की
अनग कैस अग ज्यो न कहूँ ठहरत है ॥१७१॥

निसा निसनाथि जानै दिन दिनपति मानै
भिच्छकन दाता कै प्रमाने महाँ दान है।
अउखधी कै रोगन अनत रूप जोगन
समीप कै वियोगन महेश महामान है।
शत्रै खग्ग ग्याता सिस रूपन के माता महाँ
ग्यानी ग्यान ग्याता कै विधाता कै समान है।
गनन गनेश मानै सुरन सुरेश जानै
जैसे पेखै तैसे ई लखे बिराजमान है ॥१७२॥

सुधा सौ सुधारे रूप सोभत उजियारे किधौ
साचे बीच ढारे महा सोभा कै सुधार कै।
किधौ महामोहनी के मोहबे नमित्त बीर
विघना बनाए महाँविध सो बिचार कै।
किधौ देव दैतन बिवाद छाड बडे चिर
मथ कै समुद्र छीर लीने है निकार कै।
किधौ बिस्वनाथ जू बनाए निज पेखवे कउ
अउर न सकत ऐसी सूरतै सुधार कै ॥१७३॥

सीम तज आपनी बिराने देस लांघ लांघ
राजा मिथलेस के पहूचे देश आन कै।

तुरही अनत बाजै दुदभी अपार गाजै
भाँति भाँति बाजन बजाए जोर आन कै ।
आगै आनि तीनै न्रिप कठ लाइ लीने रीत
रूड सभै कीने बैठे वेद कै विधान कै ।
बरखियो धन की धार पाइयत न पारावार
भिच्छक भए न्रिपार ऐसे पाइ दान कै ॥१७४॥

बाने फहराने घहराने दुदभ अरराने
जनकपुरी को निअराने वीर जाइकै ।
कहूँ चउर ढारैं कहुँ चारण उचारैं
कहूँ भाटजु पुकारैं छद सुदर बनाइकै ।
कहूँ बीन बाजैं कोऊ बासुरी म्रिदग साजैं
देखे काम लाजैं रहे भिच्छक अघाइकै ।
रक ते सु राजा भए आसिख असेख दए
माँगत न भए फेर ऐसो दान पाइकै ॥१७५॥

आन कै जनक लीनो कठ सो लगाइ
तिहूँ आदर दुरतकै अनत भाँत लए है ।
वेद के विधान कै कै व्यास ते बधाई वेद
एक एक विप्र कउ विसेख स्वरन दए हैं ।
राजकुअर सभै पहिराइ सि॰ पाइन ते
मोती मान करके बरख मेघ गए हैं ।
दती स्वेत दीनें केते सिंधली तुरे नवीने
राजा के कुमार तीनो व्याहकै पठए है ॥१७६॥

॥ दोधक छद ॥

ब्याह सुता न्रिप की न्रिपबाल ।
माँग बिदा मुखि लीन उताल ।
साजन बाज चले गज सजुत ।
एशनएश नरेशन के जुत ॥१७७॥

दाज शुमार सक कर कउनै ।
बीन सकै बिधना नही तउनै ।

बेसन बेसन बाज महा मत।
भेसन भेस चले गज गज्जत ॥१७८॥

बाजत नाद नफीरन के गन।
गाजत सूर प्रमाथ महा मन।
अउधपुरी निअरान रही जब।
प्राप्त भए रघुनंद तही तब ॥१७९॥

मातन वार पियो जल पान।
देख नरेश रहे छबि मान।
भूप बिलोकत लाइ लए उर।
नाचत गावत गीत भए पुर ॥१८०॥

भूपज ब्याह जबै ग्रहि आए।
बाजत भांति अनेक बधाए।
तात बशिष्ट सुमित्र बुलाए।
अउर अनेक तहाँ रिख आए ॥१८१॥

घोर उठी घहराइ घटा तब।
चारो दिस दिग दाह लख्यो सभ।
मन्त्री मित्र सभै अकुलाने।
भूपत सो इह भांत बखाने ॥१८२॥

होत उतपात बडे सुन राजन।
मन्त्र करो रिख जोर समाजन।
बोलहु बिप्प बिलंब न कीजै।
है क्रित जग्ग अरंभन कीजै ॥१८३॥

आइस राज दयो ततकालहु।
मन्त्र सुमित्रहु बुद्ध बिसालहु।
है क्रित जग्ग अरंभन कीजै।
आइस बेग नरेश करीजै ॥१८४॥

बोल बडे रिख लीन महाँ दिज।
है तिन बोल लयो जु तरित्तज।

पावक कुड खुद्‌यो तिह अउसर।
गाडिय खभ तहाँ धरम धर ॥१८५॥

छोरि लयो हयसारह ते हय।
असित करन प्रभासत के कय।
देसन देस नरेश दए सगि।
सुदर सूर सुरग सुभै अग ॥१८६॥

॥ समानका छद ॥

नरेश सगि कै दए। प्रवीन बीन कै लए।
सनद्धवद्ध हुइ चले। सु वीर बीर हा भले ॥१८७॥
विदेश देस गाहकै। अदाह ठउर दाहकै।
फिराइ बाज राज कउ। सुधार राज काज कउ ॥१८८॥
नरेश पाइ लागिय। दुरत दोख भागिय।
सुपूर जग्ग को कर्‌यो। नरेश त्रास कउ हर्‌यो ॥१८९॥
अनत दान पाइकै। चले दिज अघाइ कै।
दुरत आसिखै रडै। रिचा सु वेद की पडै ॥१९०॥
नरेश देस देस के। सुभत वेस वेस के।
विसेख सूर सोभही। सुशील नारि लोभहीं ॥१९१॥
बजभ्र कोट बाजही। सनाइ भरे साजही।
बनाइ देवता धरै। समान जाइ पा परै ॥१९२॥
करै डँडउत पा परै। विसेख भावना धरै।
सु मत्र जत्र जापिऐ। दुरत थाप थापिऐ ॥१९३॥
नचात चारु मगना। सुजान देव अगना।
कमी न कउन बाज की। प्रभाव रामराज की ॥१९४॥

॥ सरस्वती छद ॥

देस देसन की क्रिआ सिखवत हैं दिज एक।
बान अउर कमान की विध देत आन अनेक।
भाँत भाँतन सो पडावत बार नार सिगार।
कोक काव्य पढै कहूँ ब्याकरन वेद विचार ॥१९५॥

राम परम पवित्र है रघुवंस के अवतार।
दुष्ट दैतन के सँघारक संत प्रान अधार।
देसि देसि नरेश जीत असेस कीन गुलाम।
जत्र तत्र धुजा बधी जैपत्र की सभ धाम ॥१६६॥

बाट तीन दिशा तिहूँ सुत राजधानी राम।
बोल राज बशिष्ट कीन विचार केतक जाम।
साज राघव राज के घट पूर राखशि एक।
आँब मउलन दीमु उदक अउर पुहप अनेक ॥१६७॥

थार चार अपार कुकम चंदनादि अनंत।
राज साज धरे सभै तह आन आन दुरंत।
मथरा इक गाधबी ब्रहमा पठी तिह काल।
बाज साज सणै चडी सभ सुभ्र धउल उताल ॥१६८॥

बेण बीण म्रदंग बाज सुणें रही चक बाल।
रामराज उठी जयत धुनि भूम भूर बिसाल।
जात ह्वी सगि केकई इह भांत बोली बाति।
हाथ बात छुटी चली बर मांग है किह राति ॥१६६॥

केकई इम जउ सुनी भई दुक्खता सरबंग।
झूम भूम गिरी म्रिगी जिम लाग बाण सुरंग।
जात ही अवधेश कउ इह भांति बोली बैन।
दीजिऐ बर भूप मोकउ जो कहे दुइ दैन ॥२००॥

राम को बन दीजिऐ मम पूत कउ निज राज।
राज साज सु संपदा दोऊ चउर छत्र समाज।
देस अउरि बिदेस की ठकुराइ दै सभ मोहि।
सत्त सील सती जतिब्रत तउ पछानो तोहि ॥२०१॥

पापनी बन राम को पैहैं कहा जस काढ।
भसम आनन ते गई कहि कै सके असि बाढ।
कोप भूप कुअड लै तुहि काटिऐ इह काल।
नास तोरन कीजिऐ तक छातिऐ तुहि बाल ॥२०२॥

॥ नग स्वरूपी छन्द ॥

नरदेव देव राम है। अभेव धरम धाम है।
अबुद्ध नारि तैं मनं। विसुद्ध वात को भनं ॥२०३॥
अगाधि देव अनंत है। अभूत सोभवंत है।
क्रिपाल करम कारणं। बिहाल द्याल तारणं ॥२०४॥
अनेक संत तारणं। अदेव देव कारणं।
सुरेश भाइ रूपणं। समिद्ध सिद्ध कूपणं ॥२०५॥
वरं नरेश दीजिऐ। कहे सु पूर कीजिऐ।
न सक राज धारिऐ। न बोल बोल हारिऐ ॥२०६॥

॥ नग स्वरूपी अर्ध छन्द ॥

न लाजिऐ। न भाजिऐ।
रघुएश को। बनेस को ॥२०७॥
विदा करो। धरा हरो।
न भाजिऐ। विराजिऐ ॥२०८॥
बशिप्ट को। दिजिप्ट को।
बुलाइये। पठाइये ॥२०९॥
नरेश जी। उसेस ली।
घुमे घिरे। धरा गिरे ॥२१०॥
सुचेत भे। अचेत ते।
उसास लै। उदास ह्वै ॥२११॥

॥ उगाध छन्द ॥

सवार नैणं। उदास बैणं।
कह्यो कुनारी। कुव्रितकारी ॥२१२॥
कलंक रूपा। कुविरत कूपा।
निलज्ज नैणी। कुवाक बैणी ॥२१३॥
कलंक करणी। सम्रिद्ध हरणी।
अव्रित्त करमा। निलज्ज धरमा ॥२१४॥
अलज्ज धामं। निलज्ज बामं।
असोभ करणी। ससोभ हरणी ॥२१५॥

निलज्ज नारी। कुकरम कारी।
अधरम रूपा। अकज्ज कूपा ॥२१६॥
पहपिट आरो। कुकरम कारी।
मरै न मरणो। अकाज करणी ॥२१७॥

॥ केकई वाच ॥

नरेश मानो। कह्यो पछानो।
वद्यो सु देहू। बर दु मोहू ॥२१८॥
चितार लीजै। कह्यो सु दीजै।
न धरम हारो। न भरम टारो ॥२१९॥
बुलै वशिष्टै। अपूर्व इष्टै।
कहीं सिएसै। निकार देसै ॥२२०॥
बिलम न कीजै। सु मान लीजै।
रिखेश राम। निकार धाम ॥२२१॥
रहे न झ्यानी। भई दिवानी।
नुपै न बउरी। बकैत डउरी ॥२२२॥
ध्रिग सरूपा। निखेध्र कूपा।
द्रुवाक बैणी। नरेश छैणी ॥२२३॥
निकार राम। अधार धाम।
हत्यो निजेरा। कुकरम भेस ॥२२४॥

॥ उगाथा छन्द ॥

अजित्त जित्ते अबाह बाहे। अखड खडे अदाह दाहे।
अभड भडे अडग डगे। अमुन मुने अभग भगे ॥२२५॥
अकरम करम अलक्ख लक्खे। अडड डडे अभक्ख भक्खे।
अथाह थाहे अदाह दाहे। अभग भगे अबाह बाहे ॥२२६॥
अभिज्ज भिज्जे अजाल जाले। अखाप खापे अचाल चाले।
अभिन भिने अडड डांडे। अकित्त कित्ते अमुडे मांडे ॥२२७॥
अछिन्न छिद्दे अदग्ग दागे। अचोर चोरे अठग्ग ठागे।
अभिद्द भिद्दे अफोड फोड़े। अकज्ज कज्जे अजोड जोड़े ॥२२८॥

अदग दगे अमोड मोडे । अखिच्च खिच्चे अजोड जोडे ।
अकड्ढ कड्ढे असाध साधे । अफट्ट फट्टे अफाध फाधे ॥२२९॥
अधध धधे अकज्ज कज्जे । अभिन भिने अभन्ज भज्जे ।
अछेड छेडे अलद्ध लद्धे । अजित्त जित्ते अवद्ध वद्धे ॥२३०॥
अचीर चीरे अतोड ताडे । अट्ट ठट्टे अपाड पाडे ।
अधक्क धक्के अपग पगे । अजुद्ध जुद्धे अजग जगे ॥२३१॥
अकुट्ट कुट्टे अयट्ट आए । अचूर चूरे अदाव दाए ।
अमीर भीरे अभग भगे । अटुक्क टुक्के अकग कगे ॥२३२॥
अखिद्द खेदे अटाह टाहे । अगज गजे अवाह वाहे ।
अमन मने अहेह हेहे । विरचन नारी त सुक्ख केहे ॥२३३॥

॥ दोहा ॥

इह विधि केकई हठ गह्यो वर मांगन न्रिप तीर ।
अति आतर क्या कहि सकै बिध्यो काम के तीर ॥२३४॥
वह विधि पर पाइन रहे मोरे वचन अनेक ।
गहिअउ हठि अवला रही मान्यो वचन न एक ॥२३५॥
वर द्यो मैं छोरो नहो तैं करि कोटि उपाइ ।
धर मो सुत कउ दीजिऐ वनवासै रघुराइ ॥२३६॥
भूपधरन बिनबुद्धि गिर्यो सुनत वचन त्रिय कान ।
जिम म्रिगेश वन के विखै बध्यो बध करि बान ॥२३७॥
तरफरात प्रिथवी पर्यो सुनि बन राम उचार ।
पलक प्रान त्यागे तजत मद्धि सफरि सर वार ॥२३८॥
राम नाम स्रवनन सुण्यो उठि थिर भयो सुचेत ।
जनु रणसुभट गिर्यो उठ्यो गहिअसनिडर सुचेत ॥२३९॥
प्रान पतन न्रिप वर सहो धरम न छोरा जाइ ।
दैन कहे जो वर हुते तन जुत दए उठाइ ॥२४०॥

॥ केकई बाच निपो बाच बशिष्ट सो ॥

॥ दोहा ॥

राम पयानो वन करैं भरथ करैं ठकुराइ ।
वरख चतरदस के विते फिरि राजा रघुराइ ॥२४१॥

कही वशिष्ट सुधार करि स्रो रघुबर सो जाइ।
बरख चतुरदस भरथ न्रिप पुनि न्रिप सी रघुराइ ॥२४२॥

सुनि वशिष्ट को बच स्रवण रघुपति फिरे ससोग।
उत दसरथ तन को तज्यो स्रो रघुबीर बियोग ॥२४३॥

॥ सोरठा ॥

ग्रहि आवत रघुराइ सभु धन दियो लुटाइकैं।
कटि तरकशी सुहाइ बोलत मे सिय सो वचन ॥२४४॥

सुनि सिय सुजस सुजान रहौ कौसल्या तीर तुम।
राज करउ फिरिआन तोहि सहित वनवास बसि ॥२४५॥

॥ सीता बाच राम सो ॥

॥ सोरठा ॥

मैं न तजो पिय सगि कैसोई दुख जिय पैं परो।
तनक न मोरउ अगि अगि ते होइ अनग किन ॥२४६॥

॥ राम बाच सीता प्रति ॥

॥ मनोहर छद ॥

जउ न रहउ ससुरार क्रिसोदर
जाहि पिता ग्रिह तोहि पठै दिउ।
नेक सु भानन ते हम कउ जाई
ठाट कहो सोई गाठ गिठै दिउ।
जे किछु चाह करो धन की दुक
मोह कहो सभ तोहि उठै दिउ।
केतक अउध को राज सलोचन
रक को लक निशक लुटै दिउ ॥२४७॥

घोर सिया बन तूं सुकुमार
कहो हमसो कस तैं निबहैहै।
गुजत सिंघ डकारत कोल
भयानक भील लखैं भ्रम ऐहै।

सुकत साप बकारत बाघ
भकारत भूत महा दुख पैहै।
तूं सुकुमार रची करतार
विचार चले तुहि किउं वनि ऐहै॥२४८॥

॥ सीता बाच राम सो ॥

॥ मनोहर छन्द ॥

सूल सहो तन सूक रहो पर
सी न कहो सिर सूल सहोगी।
बाघ बुकार फनीन फुकार सु
सीस गिरो पर सी न करोगी।
वास कहा वनवास भलो नही
पास तजो पिय पाइ गहोगी।
हास कहा इह उदास समै
ग्रिहआस रहो पर मैं न रहोगी॥२४६॥

॥ रामबाच सीता प्रति ॥

रास कहो तुहि बास करो ग्रिह
सासु की सेव भली बिधि कीजै।
काल ही वास बनै म्रिगलोचनि
राज करो तुम सो सुन लीजै।
जौ न लगै जिय अउध सुमाननि
जाहि पिता ग्रिह साच भनीजै।
तात की बात गडी जिय जात
सिधात बनै मुहि आइस दीजै॥२५०॥

॥ लछमन बाच ॥

बात इतै इह भांत भई सुन
आइगे भ्रात सगमन लीने।
कउन कपूत भयो कुल मे
जिन रामहि बास बनै कहु दीने।

राम के बान बध्यो बस कामन
कूर कुचाल महामति हीने।
रॉड कुभांड के हाथ बिक्यो
कपि नाचत नाच छरी जिम चीने ॥२५१॥

काम को डंड लिए कर केकई
बानर जिउँ न्रिप नाच नचावै।
ऐठन ऐठ अमेठ लिए ढिग
बैठ सुआ जिम पाठ पड़ावै।
सउतन सीस ह्वै ईसक ईस
प्रियीस जिउँ चाम के दाम चलावै।
कूर कुजात कुपथ दुरानन
लोग गए परलोक गवावै ॥२५२॥

लोग कुटेव लगे उनकी प्रभ
पाव तजे मुहि क्यो बन ऐहै।
जउ हट बैठ रहो घरि मो
जस क्यो चलिहै रघुबंस लजैहै।
काल ही काल उचारत काल गयो
इह काल सभो छल जैहै।
धाम रहो नहि साच कहों इह
घात गई फिर हाथ न ऐहै ॥२५३॥

चाँप धरे कर चार कु तीर
तुनीर कसे दोऊ बीर सुहाए।
आवध राज त्रिया जिह सोभत
होन बिदा तिह तीर सिधाए।
पाइ परे भर नैन रहे भर
मात भली बिध कंठ लगाए।
बोले ते पूत न आवत धाम
बुलाइ लिउँ आपन ते किमु आए ॥२५४॥

॥ राम बाच माता प्रति ॥

तात दयो वनबास हमैं तुम
देह रजाइ अबै तह जाऊँ।
कटक कानन वेहड गाहि
त्रियोदस वरख विते फिर आऊँ।
जीत रहे तु मिलो फिरि मात
मरे गए भूलि परी वखसाऊँ।
भूपह कै अरिणी बर ते बस
के वन मो फिरि राज कमाऊँ ॥२५५॥

॥ माता बाच राम सों ॥

॥ मनोहर छद ॥

मात सुनी इह बात जबै तब
रोवत ही सुत के उर लागी।
हा रघुवीर सिरोमण राम चते
वन कउ मुहि कउ कत त्यागी।
नीर विना जिम मीन दशा
तिम भूख पिआस गई सभ भागी।
झूम झराक झरी झट वाल
बिसाल दवा उनकी उर लागी ॥२५६॥

जीवत पूत तवानन पेख सिया
तुमरी दुत देत अघाती।
चीन सुमित्रज की छव को
सभ शोक बिसार हिए हरखाती।
केकई आदिक सउतन कउ लखि
भउह चडाइ सदा गरवाती।
ताकहु तात अनाथ जिउं आज
चले वन को तजि कै बिललाती ॥२५७॥

होर रहे जन कोर कई मिलि
जोर रहे पर एक न मानी।
लच्छन मात के धाम विदा कहु
जात भए जिय मो इह ठानी।
सो सुनि वात पपात धरा पर
घात भली इह वात वखानी।
जानुक सेल सुमार लगे छित
मोभत सूर वडो अभिमानी ॥२५८॥

कउन कुजात कुकाज कियो जिन
राघव को इह भाँत वखान्यो।
लोक अलोक गवाइ दुरानन
भूप सँघार महाँ सुख मान्यो।
भरम गयो उड करम कर्यो घट
धरम को त्यागि अधरम प्रमान्यो।
नाक कटी निरलाज निसाचर
नाहनि पातत नेहु न मान्यो ॥२५९॥

॥ सुमित्रा बाच लछमन सो ॥

दास को भाव धरे रहियो सुत
मात सरूप सिया पहिचानो।
तात की तुल्लि सियापति कउ
करि कै इह वात सही करि मानो।
जेतक कानन के दुख है सभ
सो सुख कै तन पै अनमानो।
राम के पाइ गहे रहियो वन
कै घर को घर कै वनु जानो ॥२६०॥

राजिवलोचन राम कुमार चले
वन कउ सँगि भ्राति सुहायो।

देव अदेव निछन सचीपत
चउक चके मन मोद वढायो।
आनन विंव पर्यो वसुधा पर
फैलि रह्यो फिरि हाथि न आयो।
वीच अकाश निवास कियो तिन
ताही ते नाम मयक कहायो ॥२६१॥

॥ दोहा ॥

पित आज्ञा ते वन चले तजि ग्रहि राम कुमार।
सग सिया म्रिगलोचनी जा की प्रभा अपार ॥२६२॥
॥ इति स्रो राम वनवास दीबो ॥

॥ अथ बनबास कथन ॥

॥ सीता अनमान बाच ॥

॥ बिजय छद ॥

चद की अस चकोरन कै करि मोरन बिद्दुलता अनमानी।
मत्त गइदन इद्र वधू भुनसार छटा रवि की जिय जानी।
देवन दोखन की हरता अर देवन काल क्रिया कर मानी।
देसन सिध दिसेसन ब्रिध जोगेशन गग कै रग पछानी ॥२६३॥

॥ दोहा ॥

उत रघुवर वन को चले सीय सहित तजि ग्रेह।
इतै दशा जिहि बिधि भई सकल साध सुनि लेह ॥२६४॥

॥ माता वाच ॥

॥ कवित्त ॥

सभै सुख लै के गए गाडो दुख देत भए
राजा दशरथ जू कउ कै कै आज पात हो।

अजहूँ न छोजै बात मान लीजै राज कीजै
कहो काज कउन कौ हमारे स्रोणनाथ हो।
राजसी के धारौ साज साधन कै कीजै काज
कहो रघुराज आज काहे कउ सिधात हो।
तापसी के भेस कीने जानकी कौ सग लीने
मेरे वनवासी मो उदासी दिए जात हो॥२६४॥

कारे कारे करि वेस राजा जू को छोरि देस
तापसी को कै कै भेस साथि ही सिधारिहौ।
कुल हूँ की कान छोरो राजसी के राज तोरो
संगि ते न मोरो मुख ऐसो क बिचारिहौ।
मुद्रा कान धारौ सारे मुख पै विभूति डारौ
हठि को न हारौ पूत राज साज जारिहौ।
जुगिआ को कीनो वेस कउशल के छोर देस
राजा रामचंद्र जू के संगि ही सिधारिहौ॥२६६॥

॥ अपूर्व छंद ॥

काननै गे राम। धरम करम धाम।
लच्छनै लै संगि। जानकी सुभंगि॥२६७॥
तात त्यागे प्रान। उत्तरे व्योमान।
विच्चरे बिचार। मंत्रिय अपार॥२६८॥
बैठ्यो वशिष्टि। सरब विप्प इष्ट।
मुकल्लियो कागद। पट्ठए मागध॥२६९॥
संकड़ेसा बल। मत्तए मत्तत।
मुक्कले के दूत। पउन के से पूत॥२७०॥
अगटन दर्ब लाख। दूत गे चरवाख।
भरत आगे जहाँ। जात भे ते तहाँ॥२७१॥
उच्चरे संदेश। ऊरध गे अउधेश।
पत्र बाचे भले। लाग संग चले॥२७२॥

कोप जीय जग्यो। धरम भरम भग्यो।
काशमीर तज्यो। राम राम भज्यो ॥२७३॥

पुज्जए अवद्ध। सूरमा सनद्ध।
हेर्‌यो अउध्रेश। म्रितक के भेस ॥२७४॥

॥ भरथ बाच केकई सो ॥

लग्यो कसूत। वुत्‌ल्यो सपूत।
ध्रिग मइया तोहि। लजि लइया मोहि ॥२७५॥

का कर्‌यो कुकाज। क्यो जिऐ निलाज।
मोहि जैबे तही। राम हैगे जही ॥२७६॥

॥ कुसुम विचित्र छंद ॥

तिन वनवासी रघुवर जानै।
दुख सुख सम कर सुख दुख मानै।
बलकर धर कर अब वन जैहै।
रघुपत संग हम बन फल खैहैं ॥२७७॥

इम कह बचना घर वर छोरे।
बलकल धर तन भूखन तोरे।
अवधिश जारे अवधहि छाड्यो।
रघुपति पग तर कर घर मांड्यो ॥२७८॥

जख जल थल कह तज कुल धाए।
मुन मन संगि लै तिह ठाँ आए।
लख बल राम खल दल भीर।
गहि धन पाण सित धर तीर ॥२७९॥

गहि धनु राम सर वर पूर।
अरवर थहरे खल दल सूर।
नर वर हरखे घर घर अमर।
अमररि धरके लह कर समर ॥२८०॥

तव चित अपने भरथर जानी।
रन रग राते रघुवर मानी।
दल वल तजि करि इक्ले निसरे।
रघुवर निरखे सभ दुख विसरे ॥२८१॥

द्रिग जव निरखे भट मण राम।
सिर धर टेक्यो तज कर काम।
इम गति लखि वर रघुपति जानी।
भरथर आए तज रजधानी ॥२८२॥

रिपहा निरखे भरथर जान।
अवधिश मूए तिन मन माने।
रघुवर लछमन परहर बान।
गिर तर आए तज अभिमान ॥२८३॥

दल वल तजि करि मिलि गल रोए।
दुख कसि विधि दिया सुख सभ खोए।
अव घर चलिए रघुवर मेरे।
तजि हठि लागे सभ पग तेरे ॥२८४॥

॥ राम बाच भरथ सो ॥

॥ कठ आभूवण छद ॥

भरथ कुमार न अउहठ कीजै।
जाहु घरै नह मैं दुख दीजै।
काज कह्यो जु हमैं हम मानी।
त्रियोदस वरख वसैं वनधानी ॥२८५॥

त्रियोदस वरप वितैं फिरि एहैं।
राज सघासन छत्र सुहैहैं।
जाहु घरैं मिख मान हमारी।
रोवत तोर उतैं महतारी ॥२८६॥

॥ भरथ बाच राम प्रति ॥

॥ कंठ आभूषण छंद ॥

जाउ कहा पग भेट कहुउ तुहं।
लाज न लागत राम कहो मुहं।
मै अत दीन मलीन बिना गत।
राख लै राज बिखै चरनामत ॥२८७॥

चच्छ बिहीन सुपच्छ जिम कर।
तिउँ प्रभ तीर गिर्‌यो पग भरथर।
अंक रहे गहु राम तिसै तव।
रोइ मिले लछनादि भय्या सभ ॥२८८॥

पान पिआइ जगाइ सु बीरहु।
फेरि कह्यो हुस स्री रघुबीरहु।
त्रियोदस बरख गए फिरि ऐहैं।
जाहु हमैं कछु काज किवैंहै ॥२८९॥

चीन गए चतरा चित मो सभ।
स्री रघुबीर कही अस कै जब।
मात समोध सु पावरि लीनी।
अउर बसे पुर अउध न चीनो ॥२९०॥

सीस जटान को जूट धरे बर।
राज समाज दियो पउवा पर।
राज करे दिनु होत उजिआरैं।
रैनि भए रघुराज सँभारैं ॥२९१॥

जज्जर भ्यो झुर झझर जिउँ तन।
राखत स्री रघुराज बिखै मन।
बैरन के रन बिंद निकंदत।
भाखत कंठि अभूखन छंदत ॥२९२॥

॥ झूला छंद ॥

इतै राम राज। करैं देव काजं।
धरो बान पान। भरै बीर मानं ॥२९३॥

जहाँ साल भारे। द्रुम तार न्यारे।
छुए सुरगलोक। हरै जात शोकं ॥२६४॥
तहाँ राम पैठे। महाँवीर ऐठे।
लिए संगि सीता। महाँ सुभ्र गीता ॥२६५॥
विध वाक बैणी। म्रिगी राज नैणी।
कट छीन दे सी। परी पदमनी सी ॥२६६॥

॥ झूलना छंद ॥

चडै पान वानी धरे सान मानो
चछा वान सोहै दोऊ राम-रानी।
फिरै ग्याल सो एक हवाल सेती
छुटे इद्र सेतो मनो इद्र धानी।
मनो नाग बाँके लजी आव फाँकै
रगे रग सुहाव सो राम वारे।
म्रिगा देखि मोहे लखे मीन रोहे
जिनै नैक चीने तिनौ प्रान वारे ॥२६७॥

सुने कूक के कोकला कोप कीने
मुख देख कै चद दारे रखाई।
लखे नैन बाँके मनै मीन मोहै
लखे जात के सूर की जोति छाई।
मनो फूल फूले लगे नैन झूले
लखे लोग भूले बनै जोर ऐसे।
लखे नैन थारे बिध्रे राम प्यारे
रँगे रग शाराव सुहाव जैसे ॥२६८॥

रँगे रग राते मय मस्त माते
मकबूलि गुल्लाव के फूल सोहैं।
नरगस ने देखकै नाक ऐंठा
म्रिगीराज के देखतं मान मोहैं।
शबो रोज शाराब ने शोर लाइआ
प्रजा आम जाहान के पेख वारे।

भवा तान कमान की भाँत प्यारी
नि कमान ही नैन के वान मारे ॥२९९॥

॥ कवित्त ॥

ऊचे द्रमसाल जहाँ लाँबे वट ताल तहाँ
ऐसी ठउर तप कउ पधारै ऐसो कउन है।
जाकी छत्र देख दुत पाडव की फीकी लागै
आभा तकी नदन बिलक्व भये मौन है।
तारन की कहा नैक नभ न निहार्‌यो जाइ
सूरज की जोत तहाँ चद्र की न जउन है।
देव न निहार्‌यो कोऊ दैत न बिहार्‌यो तहाँ
पछी की न गम जहाँ चीटी को न गउन है ॥३००॥

॥ अपूर्व छद ॥

लखिए अलक्ख। तकिए सुभच्छ।
धायो विराध। बँकड्यो विवाद ॥३०१॥
लखिअ अबद्ध। सँबह्यो सनद्ध।
सँभले हथिआर। उरडे लुझार ॥३०२॥
चिवडो चावड। सँमुहे सावत।
सज्जिए सुब्बाह। अच्छरो उछाह ॥३०३॥
पक्खरे पवग। मोहले मतग।
चावडी चिंवार। उझरे लुझार ॥३०४॥
सिझरे सधूर। वज्जए तदूर।
सज्जिए सुब्बाह। अच्छरो उछाह ॥३०५॥
बिज्झुडे उझाड। सभले सुमार।
हाहले हकार। अकडे अगार ॥३०६॥
सभन्ने लुज्झार। छुट्टके बिसियार।
हाहलेह वीर। सघरे सु वीर ॥३०७॥

॥ अनूप नाराच छन्द ॥

गज गजे हय हले हला हली हलो हल।

ववज्ज सिधरे सुर छुटत याण मेवल।
पपत्र्क पत्रधरे तुरे भभक्क घाइ निर्मल।
पलुत्थ लुत्थ वित्थरी अमत्थ जत्थ उत्थल ॥३०८॥

अजुत्थ लुत्थ वित्थरी मिलत हत्थ वक्खय।
अघुम्म घाइ घुम्म ए ववक्क बीर दुद्धर।
दिल करत खप्परी पिपत स्रोण पाणय।
हहक्क भैरव म्रत उठत जुद्ध ज्वालय ॥३०९॥

फिक्त फिक्ती फिर रडत गिद्ध ग्रिद्धग।
डहक्क डामरी उठ वकार वीर बैताल।
चहुत्त खग्ग खत्रिय खिमत धार उज्जल।
घणक जाण सावन लसत बेग विज्जुल ॥३१०॥

पिपत स्रोण खप्परा भखत मास चावड।
हुंकार वीर सभिडं लुझार धार दुद्धर।
पुकार मार कैं परे सहत अग भारय।
विहार देव मडल वटत खग्ग पारय ॥३११॥

प्रचार वार पंज कै खुमार घाइ घूमही।
तपी मनो अधोमुख सु धूम आग धूम ही।
तुटत अग भगय वहत अस्त्र धारय।
उठत छिच्छ इच्छय पिपत मास हारय ॥३१२॥

अघोर घाइ अघाऐ कटे परे सु प्रासन।
धुमत जाण रावल लगे सु सिद्ध आसण।
परत अग भग हुइ वकत मार मारय।
वदत जाण वदिय सुकित्ति कित अपारय ॥३१३॥

वजत ताल तवुर विसेख बीन बेणय।
म्रिदग झालना फिर सनाइ भेर भैं कर।
उठत नावि निरमल तुटत ताल तत्थिय।
वदत कित्त वदिय कविंद्र काव्य कत्थिय ॥३१४॥

ढलत धाल मालय खहत खग्ग खेतय।
चलत वाण तीछण अनत अतक क्य।
सिमट्टि साँग सुकड सटक्क सूल सेलय।
रुलत रुंड मुडय झलत झाल अज्जल ॥३१५॥

वचित्र चिनत सर वहत दारुण रण।
ढलत ढाल अड्ढल ढुलत चार चामर।
दलत निरदलो दल तपात्र भूतल दित।
उठत गदिद सद्दय निनद्दि नदिद दुब्भर ॥३१६॥

भरत पत्र चउसठी किलक खेचरी कर।
फिरत हूर पूरय वरत दुद्धर नर।
सनद्ध वद्ध गोधय सु सोभ अगुल त्रिण।
डकत डाकणी भ्रम भखत आमिख रण ॥३१७॥

खिलक देविय कर डहक्क डामरू सुर।
कडक्क कत्तिय उठ परत धूर पक्खर।
बबज्जि सिवरेसुर त्रिघात सूल सैहथिय।
भभज्जि कातरो रण निलज्ज भज्ज भ भर ॥३१८॥

सु शस्त्र अस्त्र सनिध जुझत जोधणो जुध।
अरुज्झ पक लज्जण करत द्रोह केवल।
परत अग भग हुइ उठत मास करदम।
खिलत जाणु कदव सु मज्झ कान्ह गोपिक ॥३१९॥

डहक्क डउर डाकण झलत झाल रोसुर।
निनद्द नाद नाफिर वजत भेर भीखण।
घुरत घोर दुदभी करत कानरे सुर।
करत झाझरो झड वजत बाँसुरी वर ॥३२०॥

नचत याज तीछण चलत चाचरी क्रित।
लिखत लीक उरविअ सुभत कुडली कर।
उडत धूर भूरिय खुरीन निरदली नभ।
परत भूर भउरण मु भउर ठउर जिउँ जल ॥३२१॥

भजत धीर वीरण रलत मान प्राण लै ।
दलत पत दतिय भजत हार मान कँ ।
मिलत दाँत घास लै ररच्छ शवद उचर ।
विराध दानव जुझ्यो सु हृत्थि राम निरमल ॥३२२॥
॥ इति स्री बचित्र नाटके रामवतार कथा विराध दानव वधह ॥

॥ अथ वन मो प्रवेशकथन ॥

॥ दोहा ॥

इह विधि मार विराध कउ वन मे धसे निशग ।
सु कवि स्याम इह विधि कह्यो रघुवर जुद्ध प्रसग ॥३२३॥

॥ सुखदा छद ॥

रिख अगसत धाम । गए राज राम ।
धुज धरम धाम । सिया सहित वाम ॥३२४॥
लख राम वीर । रिख दीन तीर ।
रिप सरव चीर । हरि सरव पीर ॥३२५॥
रिख विदा कीन । आसिखा दीन ।
दुत राम चीन । मुन मन प्रवीन ॥३२६॥
प्रभ भ्रात सगि । सिय सग सुरग ।
तजि चिन्न अग । धस वन निशग ॥३२७॥
धर वान पान । कटि कसि क्रिपान ।
भुज वर अजान । चल तीर्थ नान ॥३२८॥
गोदावर तीर । गए सहित वीर ।
तज राम चीर । किअ सुच सरीर ॥३२९॥
लख राम रूप । अतिभुत अनूप ।
जह हुती सूप । तह गए भूप ॥३३०॥
कही ताहि धाति । सुनि सूप वाति ।
दुइ अतिथ नात । लहि अनुप गात ॥३३१॥

॥ सुदरी छद ॥

सूपनखा इह भाँति सुनि जब।
धाइ चली अबिलब त्रिया तब।
राम सरूप कलेवर जानै।
रूप अनूप तिहूँ पुर मानै ॥३३२॥

धाइ कह्यो रघुराइ भए तिह।
जैस त्रिलाज कहै न कोऊ किह।
हुउ अरको तुमरी छबि के बर।
रग रगो रँगए द्रिग दूपर ॥३३३॥

॥ राम बाच ॥

॥ सुदरी छद ॥

जाहु तहाँ जहु भ्रात हमारे।
वै रिझहै लख नैन तिहारे।
सग सिया अविलाक त्रिसादर।
कैसे कैं राख सको तुम कउ घरि ॥३३४॥

मात पिता कह मोह तज्यो मन।
सग फिरी हमरे वन ही वन,
ताहि तजौ कस कैं सुनि सुदर।
जाहु तहाँ जहाँ भ्रात त्रिसोदर ॥.३५॥

जाल भई सुन बैन त्रिया तह।
बैठ हुते रणधीर जती जह।
सो न बरै अति रोस भरी तब।
नाक कटाई गई ग्रिह को सभ ॥३३६॥

॥इति स्री बचित्र नाटके रामवतार कथा सूपनखा को नाक
काटबो ध्याइ समापतम सतु सुभम सतु ॥

॥ अथ खरदूखन दईत जुद्ध कथन ॥

॥ सुंदरी छंद ॥

रावन तीर गरोत भई जब।
रोस भरे दनु बस बली सभ।
लक्श घोर बजीर बुलाए।
दूखन औ खर दइत पठाए।।३३७।।

साज सनाह सुबाह दुरग्गत।
बाजत बाज चले गज गज्जत।
मार ही मार दसो दिस कूके।
सावन की घट ज्यो घुर ढूके।।३३८।।

गज्जत है रणबीर महाँमन।
तज्जत है नहिं भूमि अयोधन।
छाजत है चख स्रोणत से सर।
नादि करँ किलकार भयंकर।।३३९।।

॥ तारिका छंद ॥

राज राजकुमार बिरच्चहिगे।
सर सेल सरासन नच्चहिगे।
सु बिरुद्ध अबद्धि सु गाजहिगे।
रण रंगहि राम बिराजहिगे।।३४०।।

सर ओघ प्रओघ प्रहारँगे।
रणि रंग अभीत बिहारँगे।
सर सूल सनाहरि छुट्टहिगे।
दित पुत्र धरा पर लुट्टहिगे।।३४१।।

भर शक अशकत बाहहिगे।
बि भीत भया दल दाहहिगे।

छित लुत्थ विलुत्थ विथारहिंगे।
तरु सर्णं समूल उपारहिंगे ॥३४२॥

नव नाद नफीरन वाजत भे।
गल गज्जि हठी रण रग फिरे।
लग वान सनाह् दुसार कढे।
सूअ तच्छक के जम रूप मढे ॥३४३॥

विनु शक सनाहृरि झारत है।
रणवीर नवीर प्रचारत है।
सर सुद्ध सिला सित छोरत है।
जिय रोस हलाहल घोरत है ॥३४४॥

रनधीर अयोघनु लुज्झत हैं।
रदपीस भलो कर जुज्झत हैं।
रण देव अदेव निहारत हैं।
जय सद्द निनद्दि पुकारत हैं ॥३४५॥

गण गिद्धन ब्रिद्ध रडत नभ।
किलकत सु डाकण उच्च सुर।
भ्रम छाड भकारत भूत भुअ।
रण रग बिहारत भ्रात दुअ ॥३४६॥

खर-दूखण मार बिहाइ दए।
जय सद्द निनद्द बिहद्द भए।
सुर फूलन की बरखा बरखे।
रणधीर अधीर दोऊ परखे ॥३४७॥

॥ इति स्री बचित्र नाटके राम अवतार कथा खर-दूखण दईत बधह धिआइ समापतम सतु ॥

॥ अथ सीता हरन कथन ।

॥ मनोहर छंद ॥

रावण नीच मरीच हूँ के ग्रिह
बीच गए बद्ध बीर सुनैहैं।
बीसहूँ बाँहि हथिआर गहे
रिस नार मनै दससीस धुनैहै।
नाक कट्यो जिन सूपनखा
कह तउ तिहको दुअ दोख लगैहै।
रावल को बनु कै पल मो छलकै
तिह की घरनी धरि ल्यैहै॥३४८॥

॥ मरीच बाच ॥

नाथ अनाथ सनाथ कियो करि
कै अति मार क्रिपा कह आए।
भउन भँडार अटो बिकटी प्रभ
आज सभै घर बार सुहाए।
द्वै करि जोर करउ बिनती मुनि
कै न्रिपनाथ बुरो मत मानो।
स्री रघुबीर सही अवतार तिनै
तुम मानस कै न पछानो॥३४९॥

रोम भर्यो सभ अग जर्यो मुख
रत्त कर्यो जुग नैन तचाए।
तैं न लगैं हमरे सठ बोलन
मानस दुइ अवतार गनाए।
मात की एक ही बात कहे तत
तात घ्रिणा बनबास निकारे।
ते दोऊ दीन अधीन जुगिया कस
कै भिरहै सग आन हमारे॥३५०॥

जउ नही जात तहाँ कत तै
सठि तोर जटान को जूट पटैहो।
कचन कोट के ऊपर ते डर
तोहि नदीसर बीच डुबैहो।
चित्त चिरात वमात कछू न
रिसात चल्यो मुन घात पछानी।
रावन नीच की मीच अघोगत
राघव पान पुरी मुरि मानी ॥३५१॥

कचन को हरना वन के रघुवीर
वली जह थो तह आयो।
रावन ह्वै उत ते जुगिआ सिय
लैन चल्यो जनु मीच चलायो।
सीय विलोक कुरक प्रभा कह
मोहि रही प्रभ तीर उचारी।
आन दिजै हम कउ म्रिग वासुन
स्री अवधेश मुकद मुरारी ॥३५२॥

॥ राम बाच ॥

सीय म्रिगा कहूँ कचन को नहि
कान सुन्यो विधिनै न बनायो।
वीस विसवे छल दानव को
वन मै जिह आन तुमै डहकायो।
प्यारी को आइस मेट सकै न
विलोक सिया कहु आतुर भारी।
वाँघ निखग चले कटि सो
कहि भ्रात इहाँ करिजै रखवारी ॥३५३॥

ओट थक्यो करि कोटि निसाचर
स्री रघुवीर निदान सँघार्‌यो॥

हे लहु बीर उबार लै मोकह्
यौ कहिकै पुनि राम पुकार्यो।
जानकी बोल कुबोल सुन्यो तब
ही तिह ओर सुमित्र पठायो।
रेख कमान की काड़ महाबल
जात भए इत रावन आयो ॥३५४॥

भेख अलेख उचारकै रावण
जात भए सिय के ढिग यौ।
अविलोक धनी धनवान बडो
तिह जाइ मिलै जग मो ढग ज्यो।
कछु देहु भिछा म्रिगनैन हमैं इह
रेख मिटाइ हमैं अब ही।
बिनु रेख भई अविलोक लई हरि
सोय उड्यो नभि कउ तब ही ॥३५५॥

॥इति स्री बचित्र नाटक रामवतार कथा सीता हरन धिआइ समापतम॥

॥ अथ सीता खोजवो कथन ॥

॥ तोटक छंद ॥

रघुनाथ हरी सिय हेर मन।
गहि बान सिला सित सज्जि धन।
चहुँ ओर सुधार निहार फिरे।
छिन ऊपर स्री रघुराज गिरे ॥३५६॥

लघु बीर उठाइ सु अंक भरे।
मुख पोछ तवै बदना उचरे।
कस अधीर परे प्रभ धीर धरो।
सिय जाइ कहा तिह सोध करो ॥३५८॥

उठ ठाढि भए फिरि भूम गिरे।
पहरेकक लउ फिर प्रान फिरे।
तन चेत सुचेत उठे हठि यों।
रण मडल मद्धि गिर्‌यो भट ज्यो ॥३५७॥

चहूँ ओर पुकार वकार थके।
लवु भ्रात भए बहु भाँत झखे।
उठकै पुन प्रात इशनान गए।
जल जत सभै जरि छारि भए ॥३५९॥

विरहो जिह ओर सु दिष्ट धरै।
फल फूल पलास अकाश जरै।
कर सौ धर जउन छुअत भई।
कच वासन ज्यो पक फूट गई ॥३६०॥

जिह भूम थली पर राम फिरे।
दव ज्यो जल पात पलास गिरे।
टुट आसू आरण नैन झरी।
मनो तात तवा पर बूंद परी ॥३६१॥

तन राघव भेट समीर जरी।
तज धीर सरोवर माँझ दुरी।
नहि तत्र थली सत पत्र रहे।
जल जत परत्रण पत्र दहे ॥३६२॥

इत ढूँढ बने रघुनाथ फिरे।
उत रावन आन जटायु घिरे।
रण छोर हठी पग दुइ न भज्यो।
उड पच्छ गए पै न पच्छ तज्यो ॥३६३॥

॥ गीता मालती छंद ॥

पछराज रावन मारि कै रघुराज सीतहि लै गयो।
नभि ओर खोर निहारकै सु जटाउ सीअ सँदेस दयो।
तब जान राम गए बली सिय सत्त रावन ही हरी।
हनवत मारग मो मिले तब मित्रता ता सो करी ॥३६४॥

तिन आन स्री रघुराज के कपिराज- पाइन डारयो।
तिन बैठ गैठ इकैठ ह्वै इह भाँति मन्त्र विचारयो।
कप वीर धीर सधीर के भट मत्र वीर विचारकै।
अपनाइ सुग्रिव कउ चले कपिराज बाल सँघारकै। ३६५॥

॥ इति स्री बचित्र नाटक ग्रथे बाल बधह धिआइ समापतम ॥

अथ हनूमान सोध को पठैबो ॥

॥ गीता मालती छ द ॥

दल बाँट चार दिसा पठ्यो हनवत लक पठै दए।
लै मुद्रका लख बारिधं जह सी हुती तह जात भे।
पुरजारि अच्छकुमार छै बन टारिकै फिर आइयो।
क्रित चार जो अमरारि को सभ राम तीर जताइयो ॥३६६॥

दल जोर कोर करोर लै बड घोर तोर सभै चले।
रामचद सुग्रीव लछमन अउर सूर भले भले।
जामवत सुखैन नील हणवत अगद केसरी।
कपि पूत जूथपजूथ लै उमडे चहूं दिस कै झरी ॥३६७॥

पाटि बारिध राज कउ करि बाटि लाँघ गए जबै।
दूत दई तन के हुते तब दउर रावन पै गए।
रन साज बाज सभै करो इक बेनती मम मानिऐ।
गड लक बक सँभारिऐ रघुबीर आगम जानिऐ ॥३६८॥

धूम्रअच्छ सु जावमाल बुलाइ वीर पठै दए।
शोर कोर क्रोर कै जहाँ राम थे तहाँ जात भे।
रोस कै हनवत था पग रोप पाव प्रहारिय।
जूझि भूमि गिर्यो बली सुरलोक माँझि बिहारिय ॥३६९॥

जावमाल भिरे कछू पुन मारि ऐसेइ कै लए।
भाज कीन प्रवेश लक सदेश रावन सो दए।
धूमराछ सु जावमाल दुहूहूं राघवजू हरयो।
है कछू प्रभु के हिए सुभमत्र आवत सो करो ॥३७०॥

पेख तीर अकपनै दल सगि दै सु पठ दयो।
भाँति भाँति वजे वजत्र निनद् सद पुरो भयो।
सुरराइ आदि प्रहस्त ते इह भाँति मन्त्र विचारियो।
सिय दे मिलो रघुराज को कस रोस राव सँभारियो ॥३७१॥

॥ छप्पय छन्द ॥

झल हलत तलवार वजत वाजत्र महा धुन।
खड हडत खह खोल ध्यान तजि परत चवध मुन।
इक्क इक्क लै चलै इक्क तन इक्क अरुज्झै।
अध धुध पर गई हत्थि अर मुक्ख न सुज्झै।
सुमुहे सूर सावत सभ फउज राज अगद समर।
जै सद्द निनद्द विहद्द हुअ घनु जपत सुर पुर अमर॥३७२॥

इत अगद युवराज दुतिअ दिस वीर अकपन।
करत व्रिष्ट मर धार तजत नही नैक अयोधन।
हत्थ वत्थ मिल गई लुत्थ वित्थरी अहाड।
घुम्मे घाइ अघाइ वीर वकडे ववाड।
पिक्खत वैठ विवाण वर धन धन जपत अमर।
भव भूत भविक्ष्य भवान मो अव लग लख्यो न अस समर॥३७३॥

कहूँ मुड पिखीअह कहूँ भक रुड परे घर।
कितही जाँघ तरफन कहूँ उछरत मु छत्र कर।
भरत पत्र खेचरी कहूँ चावड चिकारैं।
किलकत कतह मसान कहूँ भैरव भभकारैं।
इह भाँति जिजे कपि की भई हग्यो असुर रावण तणा।
भै दग्ग अदग्ग भगे हठो गहि गहि कर दांतन त्रिणा॥३७४॥

उनै दूत रावणै जाइ हत वीर सुणायो।
इन कपिन अरु रामदूत अगदहि पठायो।
यहो वत्थ तिह सत्थ गत्थ करि तत्थ सुनायो।
मिलहु देहु जानकी काल नातर तुहि आयो।
पग भेट चलत भ्यो बान गुत व्रिष्ट पान रघुवर घरे।
भर अक पुलक तन पभ्यो भाँत अनिक आसिख करे॥३७५॥

॥ प्रतिउत्तर सबाद ॥

॥ छप्पय छद ॥

देह सिया दसकध छाहि नहि देखन पैहो।
लक छीन लीजिऐ लक लखि जीत न जैहो।
क्रुद्ध बिखै जिन घोरु पिवख कस जुद्ध मचैहै।
राम सहित कपि कटक आज म्रिग स्यार खवैहै।
जिन कर सु गरबु सुण मूढ मत गरब गवाइ घनेर घर।
बस करे सरब घर गरब हमए किन महि द्वै दीन नर॥३८

॥ रावन बाच अगद सो ॥

॥ छप्पय छद ॥

अगन पाक कह करै पवन मुर वार वुहारै।
चवर चद्रमा धरै सूर छत्रहि सिर धारै।
मद लछमी पिआवत वद मुख ब्रहम उचारत।
वरन वार नित भरे और कुलुदेव जुहारत।
निज कहति सु बल दानव प्रबल देत धर्नुद जछ मोहि कर।
वे जुद्ध जीत ते जाहिगे कहा दोइ ते दीन नर॥३७७

कहि हारयो कपि कोटि दइत पति एक न मानो।
उठत पाव रुपिय सभा मधि सो अभिमानो।
थके सकल असुरार पाव किनहूँ न उचक्क्यो।
गिरे धरन मुरछाइ बिमन दानव दल थक्क्यो।
लै चल्यो वभीछन भ्रात इह बाल पुन धूसर बरन।
भट हटक बिकट तिह नास के चलि आयो जित राम रन॥३७८॥

कहि बुलयो लकेश ताहि प्रभ राजिवलोचन।
कुटल अलक मुख छके सकल सतन दुखमोचन।
कुपै सरब कपिराज बिजै पहलो रण चक्खी।
फिरै लक गडि घरि दिसा दच्छणी परक्खी।
प्रभ करै वभीछन लकपति सुणी बाति रावण घरणि।
सुद्धि सत्त तब्बि बिसरत भई गिरी धरण पर हुइ बिमण॥३७९॥

॥ मदोदरी बाच ॥

॥ उटडण छन्द ॥

सूरवीरा सजे घोर वाजे वजे
भाज कता सुणे राम आए।
वाल मार्‍यो वली सिंध पाट्यो जिनै
ताहि सौ वैरि कैसे रचाए।
व्याध जीत्यो जिनै जभ मार्‍यो उनै
राम अउतार सोई सुहाए।
दे मिलो जानकी बात है स्याम की
चाम के दाम काहे चलाए ॥३८०॥

॥ रावण बाच ॥

ब्यूह सैना सजो घोर वाजे वजो
कोटि जोधा गजो आन नेरे।
साज सजोअ सबूह सैना सभै
आज मारो तरै द्रिष्टि तेरे।
इद्र जीतो करो जच्छ रीतो धन
नारि सीता वर जीत जुद्धै।
सुरग पाताल आकाश ज्वाला जरै
बाचि है राम का मोर क्रुद्धै ॥३८१॥

॥ मदोदरी बाच ॥

तारका जात ही घात कोनी जिनै
अउर सुबाहु मारीच मारे।
व्याध बद्ध्यो खरदूखण खेत थै
एक ही वाण सों दाण मारे।
धूम्रअच्छाद अउ जाबुमाली बली
प्राण हीण कर्‍यो जुद्ध जै कै।
मारिहै तोहि यौ स्यार के सिंघ ज्यो
लेहिगे लक को डक दैकै ॥३८२॥

॥ रावण बाच ॥

चउर चद्र कर छत्र सर धर
बेद ब्रहमा रर द्वार मेरे।
पाक पावक कर नीर बरण भर
जच्छ विद्याधर कौन चेरे।
अरब खरब पुर चरब सरब करे
देखु कैसे करौ बीर खेत।
चिक है चावडा फिक है फिक्करी
नाच है ,बीर बैताल प्रेत ॥३८३॥

॥ मदोदरी बाच ॥

तास नेजे ढुलै घोर बाजे बजै
राम लीने दलै आन ढूके।
बानरी पूत चिकार अपार कर
मार मार चहूँ ओर कूके।
भीम भेरी बजै जग जोधा गजै
बान चापै चलै नाहि जउलौ।
बात को मानिऐ घातु पहिचानिऐ
रावरी देह की सांत तउ लौ ॥३८४॥

घाट घाटै रुकौ बाट बाटै तुपो
ऐठ बैठ कहा राम आए।
खोर हरामहरीफ की आख तै
चाम के जात कैसे चलाए।
होइगो ख्वार बिसिआर खाना
तुरा बानरी पूत जउ लौ न गजिहै।
लक को छाडि कै कोटि को फाँध कै
आसुरी पूत लै घासि भजिहै ॥३८५॥

॥ रावण बाच ॥

बावरी रांड क्या भांत बातै बकै
रक से राम का छोड रासा।

काटहो वासि दै वान वाजीगरी
देखिहो आज ताको तमासा।
वीस वाहे धर सीस दस्य सिर
सैंण सबूह है सगि मेरे।
भाज जैहे कहाँ वाटि पैहैं उहाँ
मारिहौ वाज जैसे वटेरे ॥३८६॥

एक एक हिरै झूम झूम मरै
आपु आप गिरै हाकु मारे।
लाग जैहउ तहाँ भाज जैहै जहाँ
फूल जैहै कहाँ तै उवारे।
साज वाजे सभै आज लैहउँ तिनै
राज कैसो करै काज मोसो।
वानर छै करो राम लच्छै हरो
जीत हौ होड तउ ताम तोसो ॥३८७॥

कोटि वातैं गुनी एक कै ना सुनी
कोपि मुडो धुनो पुत्त पट्ठै।
एक नारात देवात दूजो वली
भूम कपी रणवीर उट्ठै।
सार भार परे धारधार वजी
क्रोध है लोह की छिट्ट छुट्टै।
रुड धुक धुक परै घाइ भकभक करै
वित्थरी जुत्थ सो लुत्थ लुट्टै ॥३८८॥

पत्र जुग्गण भरै सद्द देवी करै
नद्द भैरो ररै गीत गावै।
भूत औ प्रेत वैताल वीर वली
मास अहार तारी वजावै।
जच्छ गध्रव अउ सरव विद्याधर
मद्धि आकाश भयो सद्द देव।
लुत्थ वियुत्थरी हूह कूह भरी
मच्चियं जुद्ध अनूप अतेव ॥३८९॥

॥ संगीत छप्पय छंद ॥

कागडदी कुप्प्यो कपि कटक बागडदी बाजन रण वज्जिय ।
तागडदी तेग झलहली गागडदी जोधा गल गज्जिय ।
सागडदी सूर समूह नागडदी नारद मुनि नच्च्यो ।
वागडदी वीर वैताल आगडदी आरण रंग रच्च्यो ।
ससागडदी सुभट नच्च समर फागडदी फुंक फणीअर करे ।
ससागडदी समटै सुक्कै फणपति फणि फिरि फिरि धरै ॥३६०॥

भागडदी फुक फिकरो रागडदी रण गिद्ध रडक्कै ।
लागडदी लुत्थ बित्थुरी भागडदी भट घाटि भभक्कैं ।
बागडदी वरखखत बाण झागडदी झलमलत त्रिपाण ।
गागडदी गज्ज सजरं कागडदी कच्छ किंकाण ।
ववागडदी वहत बीरन सिरन तागडदी तमकि तेग कडीअ ।
झझागडदी झडकदै झड समै झलगल झुकि बिज्जुल झडीअ ॥३६१॥

नागडदी नारातक गिरत दागडदी देवातक धायो ।
जागडदी जुद्ध कर तुमल सागडदी सुरलोक सिधायो ।
दागडदी देव रहसत आगडदी आसुरण रण सोग ।
सागडदी सिद्ध सर सत नागडदी नाचत तजि जोग ।
खखागडदी ब्याह भए प्रापति खत पागडदी पुहप डारत अमर ।
जजागडदी सकल जै जै जपै सागडदी सुरपुरहि नार नर ॥३६२॥

गागडदी रावणहि सुन्यो सागडदी दाऊ सुत रण जुज्झे ।
बागडदी बीर बहु गिरे आगडदी आहवहि अरुज्झे ।
लागडदी लुत्थ बित्थरी चागडदी चात्रड चिकार ।
नागडदी नदद भए गद्द कागडदी काली किलकार ।
भभागडदी भयक्र जुद्ध भयो जागडदी जूह जुग्गण जुरीअ ।
ककागडदी किलक्कत कुहर कर पागडदी पत्र स्रोणत भरीअ ॥३६३॥

॥ इति देवातक नरातक बधहि धिआइ समापतम सतु ॥

।। अथ प्रहसत जुद्ध कथन ।।

।। संगीत छपय्य छंद ।।

पागडदी प्रहसत पठियो दागडदी देकै दल अनगन ।
कागडदी कप भूअ उठी बागडदी बाजन खुरी अनतन ।
नागडदी नील तिह झिण्यो भागडदी गहि भूमि पछाडीअ ।
सागडदी समर हहकार दागडदी दानव दल भारीअ ।
घघागडदी घाइ भकभक करत रागडदी रुहिर रण रग बहि ।
जजागडदी जुयह जुग्गण जपै कागडदी काक कर करककहि ।।३६४।।

पागडदी प्रहसत जुझत लागडदी लै चल्यो अप्प दल ।
भागडदी भूमि भडहडी कागडदी कपी दोई जल थल ।
नागडदी नाद निह नद्द भागडदी रण भेर भयकर ।
सागडदी साग झलहलत चागडदी चमकत चलत सर ।
खखागडदी खडग खिमकत खहत चागडदी चटक चिनगैं कढै ।
ठठागडदी ठाट ठटट कर मनो नागडदी ठणक ठठिअर गढै ।।३६५।।

ढागडदी ढाल उछलहि वागडदी रण वीर बबक्कहि ।
आगडदी इक लै चलै इक कहु इक उचक्कहि ।
तागडदी ताल तजुर गागडदी रणवीन सु वज्जै ।
सागडदी सख के शवद गागडदी गैवर गल गज्जै ।
धधागडदी धरणि धड धुकि परत चागडदी चकत चित महि अमर।
पपागडदी पुहप बरखा करत जागडदी जच्छ गध्रव वर ।।३६६।।

झागडदी झुज्झ भट गिरै मागडदी मुख मार उचारै ।
सागडदी सज पजरे घाघडदी घणीअर जणु कारै ।
तागडदी तीर बरखत गागडदी गहि गदा गरिष्ट ।
मागडदी मत्र मुख जपै आगडदी अच्छर वर इष्ट ।
ससागडदी सदा शिव सिमर वर जागडदी जूझ जोधा मरत ।
ससागडदी सुभट मनमुख गिरत आगडदी अपच्छरन कह वरत ।।३६७।।

।। भुजंगप्रयात छंद ।।

इतै उच्चर राम लकेश वैण ।
उतै देव देखै चढै रत्थ गैण ।

कहो एक एक अनेक प्रकार।
मिले जुद्ध जेते समत लुज्झार ।।३९८।।

।। बभीछन बाच राम सो ।।

धनु मडलाकार जाको विराजै।
सिर जैत पत्र सित छत्र छाजै।
रथ बिसटत व्याघ्र चरम अभीत।
तिसै नाथ जानो हठी इद्रजीत ।।३९९।।

नहे पिंग वाजो रथ जेन सोभै।
महाँ काइ पेखे सभै देव छोभै।
हरे सरब गरब धन पाल देव।
महाँ काइ नामा महाँवीर जेव ।।४००।।

लगे म्यूर वरण रथ जेन बाजी।
बकै मार मार तजै वाण राजी।
महाँ जुद्ध को कर महोदर बखानो।
तिसै जुद्ध करता बडो राम जानो ।।४०१।।

लगे मुखक वरण वाजी रथेस।
हसै पउन के गउन को चार देस।
धरे वाण पाण किधो काल रूप।
तिसै राम जानो सही दइत भूप ।।४०२।।

फिरै मोर पुच्छ ढुरै चउर चार।
रडै क्त्ति बदी अनत अपार।
रर स्वर्ण की किंकणी चार सोहै।
लखे देवकन्या महाँ तेज मोहै ।।४०३।।

छकै मद्ध जाकी धुजा सारदूल।
इहै दइतराज दुर द्रोह मूल।
लसै क्रीट सीस कसै चद्र भा को।
रमानाथ चीनो दस ग्रीव ताको ।।४०४।।

दुहूँ आर वज्जे वजत्र अपार।
मचे सूरवीर महाँ शस्त्र धार।
करे अन्न पात निपातत सु सूर।
उठे मद्ध जुद्ध कमद्ध करूर ॥४०५॥

गिरै रुड मुड भमुड अपार।
रुले अग भग समत लुझार।
परी कूह जह उठे गद्द सद्द।
जके सूरवीर छके जाण मदद ॥४०६॥

गिरे झूम भूम अन्नमेति घाय।
उठे गद्द सद्द चडे चउप चाय।
जुझे वीर एक अनेक प्रकार।
कटे अग जग रटै मार मार ॥४०७॥

छुटै वाण पाण उठै गदद सद्द।
रुले झम भूम सु वीर विहद्द।
नचे जग रग ततथइ ततत्थ्य।
छुटै वाण राजी फिरै छूछ हत्थ्य ॥४०८॥

गिरे अकुस वारण वीर खेत।
नचे कध हीण कवध अचेत।
भरै खेचरी पत्र चउसठ तारी।
चले स्रव आनदि हुइ मासहारी ॥४०९॥

गिरे बकुडे वीर वाजी सुदेस।
परे पीलवान छुटे चार केस।
करै पैज वार प्रचारत वीर।
उठै स्रोण धार अपार हमीर ॥४१०॥

छुटे चारि चित्र वचित्रत वाण।
चले वैठ कै सूरवीर विमाण।
गिरे वारण चित्थरी लुत्थ जुत्थ।
खुले सुरग द्वार गए वीर अछुत्थ ॥४११॥

॥ दोहा ॥

इह विधि हृत सैना भई रावण राम विरुद्ध।
लंक बंक प्रापत भयो दससिर महा सक्रुद्ध ॥४१२॥

॥ भुजंगप्रयात छन्द ॥

तवै मुक्कले दूत लंकेश अप्प।
मन वच करम शिव जाप जप्प।
सभै मंत्र हीण समै अंत काल।
भजो एक चित्त सु काल क्रिपाल ॥४१३॥

रथी पाइक दंत पती अनंत।
चलं पक्खरे वाज राज सु मंत।
धसे नासका स्रोण मज्झ सु वीर।
वजे काहरे डंक डउरू नफीर ॥४१४॥

वजै लाग बाद निनादंति वीर।
उठै गदद सद्द निनदद नफीर।
भए आकुल व्याकल छोरि भगिअ।
वली कुंभकान तऊ नाहि जगिअ ॥४१५॥

चले छाडिकैं आस पास निरास।
भए भ्रात के जागवे ते उदास।
तवै देवकन्या कर्यो गीत गान।
उठयो देव दोखी गदा लीस पान ॥४१६॥

करो लंक देस प्रवेसति सूर।
वली वीस वाहं महाँ शस्त्र पूर।
करै लाग मंत्र कुमंत्र विचार।
इतै उचरे बैन भ्रात लुझार ॥४१७॥

जल गागर सप्त साहस्र पूर।
मुख पुच्छ ल्यो कुंभकान कर्र।
कियो मासहार महा मदयपान।
उठयो लै गदा को भरयो ~ मान ॥४१८॥

भजी वानरी पेख सैना अपारं।
भ्रमे जूथ पै जूथ जोधा जुझार।
उठं गद्द सद्द निनद्दति बीर।
फिरै रुड मुड तन तच्छ तीर ॥४१९॥

॥ भुजगप्रयात छंद ॥

गिरैं मुड मुड भमुड गजान।
फिरै रुड मुड सु झुड निशान।
रडं कक वक ससक्त जोध।
उठी कूह जूह मिले सैण ग्रोध ॥४२०॥

झिमी तेग तेज मरोम प्रहार।
खिमी दामनी जाणु भादो मझार।
हसे कक वकै कमे सूरवीर।
टली ढाल माल सुभे तच्छ तीर ॥४२१॥

॥ विराज छन्द ॥

हक्क देवी करम्। सद्द भैरो ररम्।
कावडी चिचरम्। डाकणी डिकरम् ॥४२२॥
पत्र जुग्गण भरम्। लुत्थ बित्थुथरम्।
समुहे सथरम्। हूह कह भरम् ॥४२३॥
अच्छरी उछरम्। सिंधुरे सिधुरम।
मार मारुच्चरम्। वज्ज गज्जे सरम् ॥४२४॥

॥ विराज छन्द ॥

उज्झरे लुज्झरम्। झुम्मरे जुज्झरम्।
वज्जिय डमरम्। तालणो तुवरम् ॥४२५॥

॥ रसावल छंद ॥

परी मार मारम्। मडे शस्त्र धारम्।
रटै मार मारम्। तुटै खग्ग धारम् ॥४२६॥
उठै छिच्छ अपारम्। वहे स्रोण धारम्।
हसै मासहारम्। पिऐ स्रोण स्यारम् ॥४२७॥

सिंधुरिए सुंडी दताले।
नच्चे पक्खरिए मुच्छाले।
ओरझिए सरव सैंणाय।
देखत सु देव गैंणाय ॥४४८॥

झल्लैं अवझडिय उज्झाड।
रण उठैं वैंहैं बब्बाड।
घैं घुम्मे घाय अघाय।
भुअ डिग्गे अद्धो अद्धाय ॥४४९॥

रिस मडैं छडैं अउ छडैं।
हठि हस्सैं कस्सैं को अड।
रिस बाहैं गाहैं जोधाण।
रण रोहैं जोहैं क्रोधाण ॥४५०॥

रण गज्जे सज्जैं शस्त्राण।
धनु करखें बरखें अस्त्राण।
दल गाहैं बाहैं हथियार।
रण रुज्झैं लुज्झैं लुज्झार ॥४५१॥

भट भेदे छेदे बरयाम।
भुअ डिग्गे चउर चरमाय।
उग्घे जण नेजे मतवाले।
चल्ले ज्यो रावल जट्टाले ॥४५२॥

हट्ठे तरवरिए हकार।
मच्चे पक्खरिए सूरार।
अक्कुडिय वीर ऐठाले।
तन सोहे पत्री पत्राले ॥४५३॥

॥ नव नामक छंद ॥

नरभर परसर । निरखत सुरनर।
हरपुर पुरमुर । निरखत बरनर ॥४५४॥

वरखत सरवर। करखत धन कर।
परहर पुर कर। निरखत वरनर ॥४५५॥

सरवर धरकर। परहर पुरसर।
परखत उरनर। निसरत उर धर ॥४५६॥

उझरत जुझ कर। विझुरत जुझ नर।
हरखत मसहर। वरखत सितसर ॥४५७॥

झुर झर कर वर। डर डर धर हर।
हर वर धर कर। विहरत उठ नर ॥४५८॥

उचरत जम नर। विचरत घसि नर।
थरकत नरहर। वरखत भुअ पर ॥४५९॥

॥ तिलकड़िआ छंद ॥

चटाक चोटैं। अटाक ओटैं।
झझार झाडैं। तडाक ताडैं ॥४६०॥

फिरत हूर। वरत सूर।
रणत जोह। उठत क्रोह ॥४६१॥

भरत पत्र। तुटत अत्र।
झडत अगन। जलत जगन ॥४६२॥

तुटत खोल। जुटत टोल।
खिमत खग्ग। उठत अग्ग ॥४६३॥

चलत वाण। रुक दिसाण।
पपात शस्त्र। अधात अस्त्र ॥४६४॥

खहत खत्री। भिरत अत्री।
वुठत वाण। खिवैं क्रिपाण ॥४६५॥

॥ दोहा ॥

लुत्थ जुत्थ वित्थुर रही रावण राम विरुद्ध।
हत्यो महोदर देखकर हरि अरि फिर्यो सु क्रुद्ध ॥४६६॥

॥ इति स्री बचित्र नाटके रामवतार महोदर मन्त्री बधहि धिआइ समापतम सतु ॥

॥ अथ इंद्रजीत जुद्ध कथनं ॥

॥ सिखंडी छन्द ॥

जुट्टे वीर जुझारे धग्गा वज्जिआं।
वज्जे नाद करारे दला मुसाहदा।
लुज्झे कारणयारे सघर सूरमे।
वुट्ठे जाणु डरारे घणिअर कैंबरी ॥४६७॥

वज्जे सगलिआले हाठा जुट्टिआं।
खेत वहे मुच्छाले कहर ततारचे।
डिग्गे वीर जुज्झारे हूंगां फुट्टिआं।
बक्के जण मतवाले भगां खाइकै ॥४६८॥

ओरझए हकारी धग्गा वाइकै।
वाहि फिरे तरवारी सूरे सूरिआं।
वग्गै रतु झुलारी झाडी कैंबरी।
पाई धूंम लुझारी रावण राम दी ॥४६९॥

चोवी धउस वजाई सघरु मच्चिआ।
वाहि फिरे वैराई तुरे ततारचे।
हूरां चित्त वधाई अबर पूरिआ।
जोधियां देखण ताईं हूले होइआं ॥४७०॥

॥ पाधड़ी छन्द ॥

इद्रार वीर कुप्प्यो कराल।
मुकतत वाण गहि धनु बिसाल।
थरकत लुत्थ फरकत बाह।
जुज्झत सूर अछरैं उछाह ॥४७१॥

चमकत चक्र सरखत सेल।
जुम्मे जटाल जण गग मेल।
सघरें सूर आघाइ धाइ।
वरखत वाण चड चउप चाइ ॥४७२॥

सुमले सूर आहुरे जग।
वरखत वाण विखधर सुरग।
नभि ह्वै अलोप सर वरख धार।
सभ ऊच नीच किने शुमार ॥४७३॥

सभ शस्त्र अस्त्र विद्या प्रवीन।
सर धार बरख सरदार चीन।
रघुराज आदि मोहे सु वीर।
दल सहित भूम डिग्गे अधीर ॥४७४॥

तब कही दूत रावणहि जाइ।
कपि कटक आजु जीत्यो बनाइ।
सिय भजहु आजु हुइ कै निचीत।
सघरे राम रण इद्रजीत ॥४७५॥

तब कहे बैण निजटी बुलाइ।
रण म्रितक राम सीतहि दिखाइ।
लै गई नाथ जहि गिरे खेत।
म्रिग मार सिंघ ज्यो सुप्त अचेत ॥४७६॥

सिय निरख नाथ मन महि रिसान।
दस अउर चार विदयानिधान।
पड नाग मत्र सघरी पास।
पति भ्रात ज्याइ चित भ्यो हुलास ॥४७७॥

सिय गई जगे अगराइ राम।
दल सहित भ्रात जुत धरम धाम।
वज्जे सुनादि गज्जे सु वीर।
सज्जे हथियार भज्जे अधीर ॥४७८॥

सुमले सूर सर वरख जुद्ध।
हन साल ताल बिकाल क्रुद्ध।
तजि जुद्ध सुद्ध सुर मेघ धरण।
थल म्योन कुभला होम करण ॥४७९॥

लख वीर तीर लकेश आन।
इम कहै बैण तज भ्रात कान।
आइहै शत्रु इह घात हाथ।
इद्रार वीर अरबर प्रमाथ ॥४८०॥

निज मास काटकर करत होम।
थरहरत भूमि अर चकत ब्योम।
तह गयो राम भ्राता निशगि।
कर धरे धनख कट कसि निखग ॥४८१॥

चिंतो सु चित देवी प्रचड।
अर हण्यो बाण कीनो दुखड।
रिप फिरे मार दुदभ बजाइ।
उत भजे दइत दलपति जुझाइ ॥४८२॥

॥ इति इद्रजीत वधहि धिआइ समापतम सतु ॥

॥ अथ अतकाइ दईत जुद्ध कथन ॥

॥ सगीत पधिष्टका छन्द ॥

कागडदग कोप कै दईत राज।
जागडदग जुद्ध को सज्यो साज।
बागडदग बीर बुल्ले अनत।
रागडदग रोस रोहे दुरत ॥४८३॥

पागडदग धरम बाजी बुलत।
चागडदग चत्र नट ज्यो कुदत।
कागडदग क्रूर कड्ढे हथिआर।
आगडदग आन बज्जे जुझार ॥४८४॥

रागडदग राम सैना सुक्रुद्ध।
जागडदग ज्वान जुझत जुद्ध।
नागडदग निशाण नव सैन साज।
मागडदग मूड मकराछ गाज ॥४८५॥

आगडदग एक अतकाइ वीर।
रागडदग रोस दीने गहीर।
आगडदग एकहु के अनेक।
सागडदग सिंध वेला विवेक ॥४८६॥

तागडदग तीर छुटैं अपार।
बागडदग बूंद बन दल अनुचार।
आगडदग अरब टीडी प्रमान।
चागडदग चार चौटी समान ॥४८७॥

वागडदग वीर वाहुडे नेख।
जागडदग जुद्ध अतकाइ देख।
दागडदग देव जै जैं कहत।
भागडदग भूप धन धन भनत ॥४८८॥

कागडदग कहक काली कराल।
जागडदग जूह जुग्गण विसाल,
भागडदग भूत भैरो अनत।
सागडदग स्रोण पाण करत ॥४८९॥

डागडदग डउर डाकण डहक्क।
कागडदग क्रूर काक कहक्क।
चागडदग चत्र चावडी चिकार।
भागडदग भूत डारत धमार ॥४९०॥

॥ होहा छद ॥

टुटे परे। नवे मुरे।
अस धरे। रिस भरे ॥४९१॥

छुटे सर। चक्यो हर।
रुकी दिस। चपे किस ॥४९२॥

छुट सर। रिस भर।
गिरै भट। जिम अट ॥४९३॥

गुमे घय। भरे भय।
चपे चले। भट भले ॥४९४॥

रटं हर। रिस जर।
रुपं रण। घुमे व्रण ॥४६५॥
गिरे धर। हुले नर।
सर तछे। कछ कछे ॥४६६॥
घुमे व्रण। भ्रमे रण।
लज फसे। कट कसे ॥४६७॥
धुके धक। टुके टक।
छुटे सर। रुके दिस ॥४६८॥

॥ छप्पय छंद ॥

इक्क इक्क आ रुहे इक्क इक्कन कह तक्कै।
इक्क इक्क लै चलै इक्क कह इक्क उचक्कै।
इक्क इक्क सर बरख इक्क धन करख रोस भर।
इक्क इक्क तरफत इक्क भव सिंध गए तरि।
रणि इक्क इक्क सावत भिडे इक्क इक्क हुइ विज्झडे।
नर इक्क अनिक शस्त्रण भिडे इक्क इक्क अवझड झडे ॥४६६॥

इक्क जूझ भट गिरे इक्क बबकत मद्ध रण।
इक्क देवपुर बसै इक्क भज चलत खाइ व्रण।
इक्क जुज्झ उज्झडे इक्क विज्झडे झाड अस।
इक्क अनिक व्रण झलै इक्क मुकतत बान कसि।
रण भूंम घूम सावत मँडै दीर्घु काइ लछमण प्रबल।
थिर रहे ब्रिछ उपवन किधो जण उत्तर दिस दुइ अचल ॥५००॥

॥ अजबा छन्द ॥

जुट्टे वीर। छुट्टे तीर।
ढुक्की ढाल। क्रोहे काल ॥५०१॥

ढके ढोल। बके बोल।
कच्छे शस्त्र। अच्छे अस्त्र ॥५०२॥

क्रोध गलत। बोध दलत।
गज्जै वीर। तज्जै तीर ॥५०३॥

रत्ते नैणं । मत्ते बैण ।
लुज्झै सूर । सुज्झै हूर ॥५०४॥

लग्गे तीर । भग्गे वीर ।
रोस रुज्झै । अस्त्र जुज्झै ॥५०५॥

झुम्मे सूर । घुम्मे हूर ।
चक्कं चार । बक्कं मार ॥५०६॥

भिद्दे बरम । छिद्दे चरम ।
तुट्टै खग्ग । उट्ठै अग्ग ॥५०७॥

नच्चे ताजी । गज्जे गाजी ।
डिग्गे वीर । तज्जे तीर ॥५०८॥

झुम्मे सूर । घुम्मी घूर ।
कच्छे बाण । मत्ते माण ॥५०९॥

॥ पाधरी छन्द ॥

तह भयो घोर आहव अपार ।
रणभूमि झूमि जुज्झे जुझार ।
इत राम भ्रात अतकाइ उत्त ।
रिस जुज्झ उज्झरे राज पुत्त ॥५१०॥

तव राम भ्रात अति कीन रोस ।
जिमपरत अगनघ्रित करत जोस ।
गहि बाण पाण तज्जे अनत ।
जिम जेठ सूर किरणं दुरत ॥५११॥

ब्रण आप मद्ध वाहत अनेक ।
वरणै न जाहि कहि एक एक ।
उज्झरे वीर जुज्झण जुझार ।
जै शबद देव भाखत पुकार ॥५१२॥

रिप कर्यो शस्त्र अस्त्रं विहीन ।
बहु शस्त्र शास्त्र विद्या प्रबीन ।

हय मुकट सूत बिनु भ्यो गवार।
कछु चपे चोर जिम वल सँभार ॥५१३॥

रिप हणे बाण बज्रव घात।
सम चले काल की ज्वाल तात।
तव कुप्यो वोर अतकाइ ऐस।
जन प्रले काल को मेघ जैस ॥५१४॥

इम करन लाग लपटे लवार।
जिम जुबणहीण लपटाइ नार।
जिम दत रहत गह स्वान ससक।
जिम गए वैस बल वीर्ज रसक ॥५१५॥

जिम दरबहीण कछु करि बपार।
जण शस्त्र हीण रुज्झयो जुझार।
जिम रूप हीण वेस्या प्रभाव।
जण बाज हीण रथ को चलाव ॥५१६॥

तव तमक तेग लछमण उदार।
तह हण्यो सीस किनो दुफार।
तव गिर्‌यो बोर अतिकाइ एक।
लख ताहि सूर भज्जे अनेक ॥५१७॥

। इति स्री बचित्र नाटके रामवतार अतकाइ बधहि धिआइ समापतम।

॥ अथ मकराछ जुद्ध कथन ॥

॥ पाधरी छन्द ॥

तव रुक्यो सैन मकराछ आन।
कह जाहु राम नही पैंहो जान।
जिन हत्यो तात रण मो अखड।
सो लरो आन मोसों प्रचड ॥५१८॥

इम सुणि कुवैण रामावतार।
गहि शस्त्र अस्त्र कोप्यो जुझार।
बहु ताण बाण तिह हणे अग।
मकराछ मारि डार्यो निशग ॥५१६॥

जब हते बीर अर हणी सैन।
तब भजी सूर हुइ कर निचैन।
तब कुभ और अनकुभ आन।
दल रुक्यो राम को त्याग कान ॥५२०॥

॥ अजवा छन्द ॥

भप्पे ताजी। गज्जे गाजी।
सज्जे शस्त्र। कक्छे अस्त्र ॥५२१॥

तुट्टे त्राण। छुट्टे वाण।
रुप्पे बीर। बुट्ठे तीर ॥५२२॥

घुम्मे घाय। जुम्मे चाय।
रज्जे रोस। तज्जे होस ॥५२३॥

कज्जें सज। पूरे पज।
जुज्झे खेत। डिग्गे चेत ॥५२४॥

घेरी लक। बीर बक।
भज्जी सैण। लज्जी नैण ॥५२५॥

डिग्गे सूर। भिग्गे नूर।
ब्याहैं हूर। काम पूर ॥५२६॥

॥ इति सी बचित्र नाटके रामवतार मकराछ कुभअनकुभ बधहि
ध्याइ समापतम सतु ॥

।। अथ रावण जुद्ध कथन ।।

।। दोहा छन्द ।।

सुण्यो इस । जिण्यो किस ।
चप्यो चित्त । बुल्यो वित्त ।।५२७।।

घिर्यो गड । रिस वड ।
भजी निय । भ्रमी भय ।।५२८।।

भ्रमी तवै । भजी सभै ।
त्रिय इस । गह्यो किस ।।५२९।।

करै हृह । अहो दय ।
करो गई । छमो भई ।।५३०।।

मुणी स्रुत । धुण उत ।
उठ्यो हठी । जिम भठी ।।५३१।।

कछयो नर । तजे सर ।
हणे किस । रुकी दिस ।।५३२।।

।। त्रिणणिण छन्द ।।

त्रिणणण तीर । व्रिणणिण वीर ।
ढणणण ढाल । ज्रणणण ज्वाल ।।५३३।।

ख्रणणण खोल । व्रणणण वोल ।
ऋणणण रोस । ज्रणणण जोस ।।५३४।।

व्रणणण बाजी । त्रिणणण ताजी ।
ज्रणणण जूझे । ल्रणणण लूझे ।।५३५।।

हृरणण हाथी । सरणण साथी ।
भरणण भाजे । लरणण लाजे ।।५३६।।

चरणण चरम । वरणण वरम ।
करणण काटे । वरणण बाटे ।।५३७।।

मरणण मारे । तरणण तारे ।
जरणण जीता । सरणण सीता ।।५३८।।

गरणण गैंण । अरणण ऐण ।
हरणण हूर । परणण पूर ॥५३६॥

बरणण बाजे । गरणण गाजे ।
सरणण सुज्झे । जरणण जुज्झे ॥५४०॥

॥ त्रिगता छंद ॥

तत्त तीर । बब्ब बीर ।
ढल्ल ढाल । जज्ज ज्वाल ॥५४१॥

तत्त ताजी । गग्ग गाजी ।
मम्म मारे । तत्त तारे ॥५४२॥

जज्ज जीते । लल्ल लीते ।
तत्त तोरे । छच्छ छोरे ॥५४३॥

रर्र राज । गग्ग गाज ।
धद्ध धाय । चच्च चाय ॥५४४॥

डड्ड डिग्गे । भब्भ भिग्गे ।
सस्स स्रोण । तत्त तोण ॥५४५॥

सस्स साधं । बब्ब बाधं ।
अअ्अ अग । जज्ज जग ॥५४६॥

कक्क क्रोध । जज्ज जोध ।
घग्घ घाए । धद्ध धाए ॥५४७॥

हहह हूर । पप्प पूर ।
गग्ग गैंण । अअ्अ ऐण ॥५४८॥

बब्ब बाण तत्त ताण ।
छच्छ छोरं जज्ज जौरं ॥५४९॥

बब्ब बाजे । गग्ग गाजे ।
भब्भ भूम । झज्झ झूम ॥५५०॥

॥ अनाद छंद ॥

चल्ले वाण रुक्के गैण।
मत्ते सूर रत्ते नैंण।
टक्के टोल ढुक्की ढाल।
छुट्टै वान उट्टैं ज्वाल ॥५५१॥

भिग्गे स्रोण डिग्गे सूर।
झुम्मे भूम घुम्मी हूर।
वज्जे सख सदद गद्द।
ताल सख भेरी नद्द ॥५५२॥

तुट्टे त्राण फुट्टे अग।
जुज्झे वीर रुज्जे जग।
मच्चे सूर नच्ची हूर।
मत्ती धूम भूमी पूर ॥५५३॥

उट्ठे अद्ध बद्ध कमद्ध।
पक्खर राग खोल सनद्ध।
छक्के क्षोभ छुट्टे केस।
सघर सूर सिघन भेस ॥५५४॥

टुट्टर टीक टुट्टे टोप।
भग्गे भूप भनो धोप।
घुम्मे घाइ झूमी भूम।
अउझड झाड धूम धूम ॥५५५॥

वज्जे नाद वाद अपार।
सज्जे सूर वीर जुझार।
जुज्झे टूक टूक ह्वै खेत।
मत्ते मद्द जाण अचेत ॥५५६॥

छुट्टे शस्त्र अस्त्र अनत।
रगे रग भूम दुरत।
खुल्ले अध धुध हथियार।
बक्के सूर वीर ब्रिकार ॥५५७॥

बिथुरी लुत्थ जुत्थ अनेक।
मच्चे कोटि भग्गे एक।
हम्से भूत प्रेत मसाण।
लुज्झे जुज्झ रुज्झ क्रिपाण ॥५५८॥

॥ बहड़ा छद ॥

अधिक रोस कर राज पखरिआ धावही।
राम राम बिनु शक पुकारत आवही।
रुज्ज जुज्झ झड पड्त भयानक भूम पर।
रामचद्र के हाथ गए भवसिंध तर ॥५५६॥

सिमट साँग सग्रहै समुह हुइ जूझही।
टूक टूक हुइ गिरत न घर कह बूझही।
खड खड हुइ गिरत खड धन खड रन।
तनक तनक लग जाँहि असन की धार तन ॥५६०॥

॥ सगीत बहड़ा छद ॥

सागडदी साँग सग्रहै तागडदी रण तुरी नचावहि।
झागडदी झूम गिर भूमि सागडदी सुरपुरहि सिधावहि।
आगडदी अग हुइ भग आगडदी आहव महि डिगही।
हो बागडदी बीर बिकार सागडदी स्रोणत तन भिगही ॥५६१॥

रागडदी रोस रिप राज लागडदी लछमण पै धायो।
कागडदी क्रोध तन कुड्यो पागडदी हुइ पवन सिधायो।
आगडदी अनुज उर तात घागडदी गहि धाइ प्रहार्‌यो।
झागडदी झूमि भूअ गिर्‌यो सागडदी सुत बैर उतार्‌यो ॥५६२॥

चागडदी चिक चावडी डागडदी डाकण डक्कारी।
भागडदी भूत भर हरे रागडदी रण रोस प्रजारी।
मागडदी मूरछा भयो लागडदी लछमण रण जुझ्यो।
जागडदी जाण जुझि गयो रागडदी रघुपत इम बुझ्यो ॥५६३॥

॥ इति स्री बचित्र नाटके रामवतार लछमन मूरछना भवेत धिआइ समापतम ॥

॥ सगीत बहड़ा छन्द ॥

कागडदी कटक कपि भज्यो लागडदो लछमण जुज्झ्यो जव।
रागडदी राम रिस भरयो सागडदी गहि अस्त्र शस्त्र सभ।
धाडगी धउल धड हुड्यो कागडदी कोडभ कडक्क्यो।
भागडदी भूँमि भडहृदी पागडदी जन पलै पलट्ट्यो ॥५६४॥

॥ अर्ध नाराच छन्द ॥

कढी सु तेग दुद्धर। अनूप रूप सुब्भर।
भकार भेर भैं कर। बकार बदणो वर ॥५६५॥

बचित्र चित्रत सर। तजत तीखणो नर।
परत जूझत भट। जणकि सावण घट ॥५६६॥

घुमत अघ ओघय। बदत बक्त्र तेजय।
चलत त्यागते तन। भणत देवता धन ॥५६७॥

छुटत तीर तीखण। बजत भर भीखण।
उठत गदद मद्दण। समत्त जाण मद्दण ॥५६८॥

करत चाचरो चर। नचत निरत्तणो हर।
पुअत पारबती सिर। हसत प्रेतणी फिर ॥५६९॥

॥ अनूप निराच छन्द ॥

डकत डाकणी डुल। भ्रमत बाज कुंडल।
रडत बंदिणो क्रिन। बदत मागधो जय ॥५७०॥

ढलत ढाल उड्ढल। खिमत तेग निरमल।
चलत राजव सर। पपात उरवित्र नर ॥५७१॥

भजत आसुरी सुत। किलक बानरी पुत।
बजत तीर तुप्पक। उठत दारुणो सुर ॥५७२॥

भभक्क भूत भैं कर। चचक्क चउदणो चक।
ततक्ख पक्खर तुरे। बजे निनद्द सिंधुरे ॥५७३॥

उठत भैं करो सुर। मचत जो घणो जुध।
खिमत उज्जलीअस। वरख तीखणो सर ॥५७४॥

॥ सगीत भुजगप्रयात छद ॥

जागडदग जुज्झ्यो भागडदग भ्रात।
रागडदग राम तागडदग तात।
बागडदग बाण छागडदग घोरे।
आगडदग आकाश ते जान ओरे ॥५७५॥

बागडदग बाजी रथी बाण काटे।
गागडदग गाजी गजो बीर डाटे।
मागडदग मारे सागडदग सूर।
बागडदग ब्याहे हागडदग हूर ॥५७६॥

जागडदग जीता खागडदग खेत।
भागडदग भागे कागडदग केत।
सागडदग सूरानु जुआन पेखा।
पागडदग प्रानान ते प्रान लेखा ॥५७७॥

चागडदग चित पागडदग प्राजी।
सागडदग सैना लागडदग लाजी।
सागडदग सुग्रीव ते आदि लैकै।
कागडदग कोपे तागडदग तैकै ॥५७८॥

हागडदग हनू कागडदग कोपा।
बागडदग बीरा नमो पाव रोपा।
सागडदग सूर हागडदग हारे।
तागडदग तैकै हनू तउ पुकारे ॥५७९॥

सागडदग सुनहो रागडदग राम।
दागडदग दीजे पागडदग पान।
पागडदग पीठ ठागडदग ठोको।
हरो आज पान सुर मोह लोको ॥५८०॥

आगड़दग ऐसे कह्यो अउ उडानो।
गागड़दग गैन मिल्यो मद्ध मानो।
रागड़दग राम आगड़दग आस।
वागड़दग वैठे नागड़दग निरास ॥५८१॥

आगड़दग आगे कागड़दग कोऊ।
मागड़दग मारे सागड़दग सोऊ।
नागड़दग नाकी तागड़दग ताल।
मागड़दग मारे बागड़दग विसाल ॥५८२॥

आगड़दग एक दागड़दग दानो।
चागड़दग चीरा दागड़दग दुरानो।
दागड़दग देखी बागड़दग बूटी।
आगड़दग है एक ते एक जूटी ॥५८३॥

चागड़दग चउका हागड़दग हनवता।
जागड़दग जोधा महाँ तेज मता।
आगड़दग उखारा पागड़दग पहार।
आगड़दग लै अउखधी को सिधार ॥५८४॥

आगड़दग आए जहा राम खेत।
वागड़दग वीर जहा ते अचेत।
बागड़दग बिसल्लया मागड़दग मुक्ख।
डागड़दग डारी सागड़दग सुक्ख ॥५८५॥

जागड़दग जागे सागड़दग सूर।
घागड़दग घुम्मी हागड़दग हूर।
छागड़दग छूटे नागड़दग नाद।
बागड़दग बाजे नागड़दग नाद ॥५८६॥

तागड़दग तीर छागड़दग छूटे।
गागड़दग गाजी जागड़दग जूटे।
खागड़दग खेत सागड़दग सोए।
पागड़दग ते पाक शाहीद होए ॥५८७॥

॥ कलश ॥

मच्चे सूरबीर बिकार।
नच्चे भूत प्रत बैतार।
झमझम लसट काटि करवार।
झलहलत उज्जल अस धार ॥५८८॥

॥ त्रिभगी छन्द ॥

उज्जल अस धार लसत अपार करण लुझार छबि धार।
सोभित जिमु आर अत छबि धार सु बिध सुधार अर गार।
जैपत्र दाती मदिण माती स्रोण राती जै करण।
दुज्जन दल हती अछल जयती किलविख हती भै हरण ॥५८९॥

॥ कलश ॥

भरहरत भज्जत रण सूर।
थरहर करत लोह तन पूर।
तडभड बजै तबल अरु तूर।
घुम्मी पेख सुभट रन हूर ॥५९०॥

॥ त्रिभगी छद ॥

घुमी रण हूर नभ झड पूर लख लख सूर मन मोही।
आरुण तन बाण छब अप्रमाण अणिदुत खाण तन सोही।
काछनी सुरग छबि [अग अग लजत अनग लख रूप।
साइक द्रिग हरणी कुमत प्रजरणी बरबर वरणी बुध कूप ॥५९१॥

॥ कलश ॥

कमल बदन साइक म्रिग नैणी।
रूप रास सुदर पिक बैणी।
म्रिगपत कट छाजत गज गैणी।
नैन कटाछ मनहि हर लैणी ॥५९२॥

॥ त्रिभंगी छन्द ॥

सुदर म्रिगनैणी सुर पिकवैणी चित हर लैणी गज गैण ।
माधुर विधि वदनी सुबुद्धिन सदनी कुमतिन कदनी छबि मैण ।
अंगका सुरंगी नटवर रगी झाँझ उतगी पग धार ।
बेसर गजरार ,पहुच अपार कचि घुंघरार आहार ॥५६३॥

॥ कलश ॥

चिबक चार सुदर छबि धार ।
ठउर ठउर मुकतन के हार ।
कर कगन पहुची उजिआर ।
निरख मदन दुत होत सु मार ॥५६४॥

॥ त्रिभंगी छंद ॥

सोभित छबि धार कच्च घुंघरार रसन रसार उजिआर ।
पहुँची गजरार सुविध सुधार मुकत निहार उर धार ।
सोहत चख चारं रग रँगारं बिबिधि प्रकारं अति आंजे ।
बिखधर म्रिग जैसे जल जन वैसे ससिअर जंसे सर मांजे ॥५६५॥

॥ कलश ॥

भयो मूड़ रावण रण क्रुद्धं ।
मच्यो आन तुम्मल जब जुद्ध ।
जूझे कल सूरमाँ सुद्धं ।
अर दल मद्धि शबद कर उद्धं ॥५६६॥

॥ त्रिभंगी छंद ॥

धायो कर क्रुद्ध सुभट बिरुद्ध गलित सुबुद्ध गहि बाण ।
कीनो रण सुद्ध नचत कबुद्ध अत धुन उद्ध धनु ताण ।
धाए रजवारे दुद्धर हकारे सु व्रण प्रहारे कर कोप ।
धाइन तन रज्जे दु पग न भज्जे जनु हर गज्जे पग रोप ॥५६७॥

॥ कलश ॥

अधिक रोस सावत रन जूटे।
बखतर टोप जिरै सभ फूटे।
निसर चले साइक जन छूटे।
जनिक सिचान मास लख टूटे ॥५९८॥

॥ त्रिभगी छन्द ॥

साइक जणु छूटे तिम अरि जूटे बखतर फूटे जेव जिरे।
समहर भुखि आए तिमु अरि धाए शस्त्र नचाइन फेरि फिरे।
सनमुखि रण गाजे किमहूँ न भाजें लख सुर लाजें रण रग।
जै जै धुन करही पुहपन डरही सु विधि उचरही जै जग ॥५९९॥

॥ कलश ॥

मुख तबोर अरु रग सुरग।
निडर भ्रमत भूँमि उह जग।
लिपत मलै घनसार सुरग।
रूप भान गतिवान उतग ॥६००॥

॥ त्रिभगी छन्द ॥

तन सुभत सुरग छवि अग अग लजत अनग लख नैर्ण।
सोभित कचकारे अत घुंघरारे रसन रसारे म्रिद बैण।
मुखि छकत सुवास दिनस प्रकास जनु सस भास तस सोभ।
रीझत चख चार सुरपुर प्यार देव दिवार लखि लोभ ॥६०१॥

॥ कलश ॥

चद्रहास एक करधारी।
दुतिय धोपु गहि त्रिती कटारी।
चत्रथ हाथ सैहथी उजिआरी।
गोफन गुरज करत चमकारी ॥६०२॥

॥ त्रिभगी छन्द ॥

सतए अस भारी गदहि उभारी त्रिसूल सुधारी छुरकारी।
जवूबा अरवान सु कसि कमान चरम अप्रमान धर भारी।
पद्रए गलोल पास अमोल परस अडोल हथि नाल।
बिछुआ पहराय पटा भ्रमाय जिम जम धाय बिकराल ॥६०३॥

॥ कलश ॥

शिव शिव शिव मुख एक उचार।
दुतिय प्रभा जानकी निहार।
त्रितिय झुड सभ सुभट पचार।
चत्रथ करत मार ही मार ॥६०४॥

॥ त्रिभगी छन्द ॥

पचए हनवत लख दुत मत सु बल द्रुरत तजि कलिण।
छठए लखि भ्रात तकत पपात लगत न घात जिय जलिण।
सतए लखि रघुपति कप दल अधमत सुभट बिकट मत जुतभ्रात।
अठिओ सिरि ढोरें नवमि निहोरें दसयन बोरें रिस रात ॥६०५॥

॥ चबोला छद ॥

धाए महाँ बीर साधे सित तीर
काछे रण चीर बाना सुहाए।
रवाँ करद मरकब यलो तेज इम सभ
छू तुद अजद होउ मिआ जगाहे।
भिडे आइ ईहा वुले वैंण कीहाँ
करे घाइ जीहाँ भिडे भेंड भज्जे।
पियो पोसताने भछो राबडीने
कहाँ छैअणी दोधणीने निहारैं ॥६०६॥

गाजे महा सूर घुमी रण हूर
भरमी नभ पूर बेख अनूप।

वले वल्ल साई जोवी जुगा ताई
तेडे घोली जाई अलावीत ऐसे।
लगो लार थाने वरो राज माने
कहो अउर काने हठी छाड थेसा।
वरा आन मोका भजो आन ताको
चलो देव लोको तजो वेग लका ॥६०७॥

॥ सवैया ॥

॥ अनल तुका ॥

रोस भर्‍यो तज होश निसाचर स्री रघुराज को घाइ प्रहारे।
जोश वडो कर कउशलिह अध वीच ही ते सर काट उतारे।
फेर वडो कर रोस दिवारदन धाइ परै कपि पुज सँघारै।
पट्टस लोह हथी पर सगडीए जबुवे जमदाड चलावै ॥६०८॥

॥ चबोला सवैया ॥

स्री रघुराज सरासन लै रिस ठान घनी रन बान प्रहारे।
बीरन मार दुसार गए सर अवर ते बरसे जन ओरे।
बाज गजी रथ साज गिरे धर पत्र अनेक सु कउन गनावै।
फागन पउन प्रचड वहे बन पत्रन ते जन पत्र उडावै ॥६०९॥

॥ सवैया छद ॥

रोस भर्‍यो रन मो रघुनाथ सु रावन को बहु बान प्रहारे।
स्रोणत नैक लग्यो तिन के तन फोर जिरै तन पार पधारे।
बाज गजी रथ राज रथी रणभूमि गिरे इह भाँति सँघारे।
जानो बसत के अत समैं कदली दल पउन प्रचड उखारे ॥६१०॥

धाइ परे कर कोप बनेचर है तिनके जिय रोस जग्यो।
किलकार पुकार परे चहुँ धारण छाडि हठी नहि एक भग्यो।
गहि बान कमान गदा बरछी उत ते दल रावन को उमग्यो।
भट जूझि अरुझि गिरे धरणी दिजराज भ्रम्यो शिव ध्यान डिग्यो ॥६११॥

जूझि अरुझि गिरे भटवा तन घाइन धाइ घने भिभराने।
जबुक गिद्ध पिसाच निसाचर फूल फिरें रन मो रहमाने।

कांप उठी सु दिशा विदिशा दिगपालन फेर प्रलै अनुमाने।
भूमि अकाश उदास भए गन देव सदेव भ्रमे भहराने ॥६१२॥

रावन रोस भर्‌यो रन मो रिस सौ सर ओघ प्रओघ प्रहारे।
भूमि अकाश दिशा विदिशा सभ ओर रुके नहि जात निहारे।
स्री रघुराज सरासन लै छिन मौ छुभ कै सर पुज निवारे।
जानक भान उदै निस कउ लखि कै सभ ही तप तेज पधारे ॥६१३॥

रोस भरे रन मो रघुनाथ कमान लै बान अनेक चलाए।
बाज बजी गजराज घने रथ राज बने रसि रोस उडाए।
जे दुख देह कटे सिय के हित ते रन आज प्रतक्ख दिखाए।
राजिवलोचन राम कुमार घनो रन घाल घनो घर घाए ॥६१४॥

रावन रोस भर्‌यो गरज्यो रन मो लहिकै सभ सैन भजान्यो।
आप ही हाक हथ्यार हठी गहि स्री रघुनंदन सो रण ठान्यो।
चावक मोर कुदाइ तुरंगन जाइ पर्‌यो कछु त्रास न मान्यो।
बानन ते बिधु बाहन ते मन मारत को रथ छोरि सिधान्यो ॥६१५॥

स्री रघुनंदन की भुज ते जब छोर सरासन बान उडाने।
भूमि अकाश पतार चहूँ चक पूर रहे नही जात पछाने।
तोर सनाह सुबाहन के तन आह करी नही पार पराने।
छेद करोटन ओटन कोट अटानमो जानकी बान पछाने ॥६१६॥

स्री असुरारदन के कर को जिन एक ही बान बिखै तन चाख्यो।
भाज सक्यो न भिर्‌यो हठ कै भट एक ही घाइ धरा पर राख्यो।
छेद सनाह सुबाहन को सर ओटन कोट करोटन नाख्यो।
स्वार जुझार अपार हठी रन हार गिरे धर हाइ न भाख्यो ॥६१७॥

आन करे सुमरे सभही भट जीत बचे रन छाडि पराने।
देव अदेवन के जितिया रन कोट हते कर एक न जाने।
स्री रघुराज प्राक्रम को लख तेज सबूह सभै भहराने।
ओटन कूद करोटन फाँध सु लकहि छाडि बिलक सिधाने ॥६१८॥

रावन रोस भर्‌यो रन मो गहि बीसहूँ बाहि हथयार प्रहारे।
भूमि अकाश दिशा विदिशा चकि चार रुके नही जात निहारे।

फोकन तें फल तें मद्ध तें अघ तें वघ कें रणमडल डारे।
छत्र धुजा वर बाज रथो रथ काटि सभै रघुराज उतारे ॥६१६॥

रावन चउप चल्यो चपकं निज बाज विहीन जबै रथ जान्यो।
ढाल त्रिसूल गदा बरछी गहि स्री रघुनदन सो रन ठान्यो।
धाइ पर्‍यो ललकार हठी कप पुजन को कछु त्रास न मान्यो।
अगद आदि हनवत ते लै भट कोट हुते कर एक न जान्यो ॥६२०॥

रावन को रघुराज जबै रणमडल आवत मद्धि निहार्‍यो।
वीस सिला सित साइक लै करि कोपु बडो उर मद्ध प्रहार्‍यो।
भेद चले मरमसथल को सर स्रोण नदी सर वीच पखार्‍यो।
आगे ही रँग चल्यो हठिकै भट धाम को भूल न नाम उचार्‍यो ॥६२१॥

रोस भरयो रन मो रघुनाथ सु पान के बीच सरासन लै कै।
पाँचक पाइ हटाइ दयो तिह बीसहूँ बाँहि बिना ओह कै कै।
दै दस बान विमान दसो सिर काट दए शिवलोक पठै कैं।
स्री रघुराज वर्‍यो सिय को बहुरो जनु जुद्ध सुयवर जै कै ॥६२२॥

॥ इति स्री बचित्र नाटके रामवतार दससिर बधह धिआइ समापतम ॥

॥ अथ मदोदरी समोध बभीछन को लक राज दीबो ॥

॥ सीता मिलबो कथन ॥

॥ सवैया छद ॥

इद्र डरावुल थो जिहके डरमूरज चद्र हुतो भयभीतो।
लूट लयो धन जउन धनेश को ब्रह्म हुतो चित मोननि चीतो।
इद्र से भूत अनेक लरे इन सौ फिरिकै ग्रह जात न जीतो।
सो रन आज भलै रघुराज सुजुद्ध सुयबर कै सिय जीती ॥६२३॥

॥ अलका छद ॥

चटपट सैण खटपट भाजे।
झटपट जुज्झ्यो लख रण राजे।
सरपट भाजे अटपट सूर।
झटपट विसरी पट घट हूर ॥६२४॥

चटपट पैठे खटपट लक।
रण तज सूर सरधर बक।
झलहल बार नरवर नैण।
धकि धकि उचरे भकि भकि वैण ॥६२५॥

नर वर राम बरनर मारो।
झटपट बाहु कटि कटि डारो।
तब सभ भाजे रख रख प्राण।
खटतट मारे झटपट बाण ॥६२६॥

चरपट रानी सरपट धाई।
रटपट रोवत अटपट आई।
चटपट लागी अटपट पाय।
नरबर निरखे रघुबर राय ॥६२७॥

चटपट लोटें अटपट धरणी।
कसि कसि रोवैं बरनर बरणी।
पटपट डारैं अटपट केस।
बट हरि कूकें नट बर भेस ॥६२८॥

चटपट चीर अटपट पारैं।
धर कर धूम सरवर डारैं।
सरपट लौटें खटपट भूम।
झटपट झूरैं घरहर घूम ॥६२९॥

॥ रसावल छन्द ॥

जबै राम देखैं। महा रूप लेखैं।
रही न्याइ सीस। सभै नार ईस ॥६३०॥

लखैं रूप मोही। फिरी राम दोही।
दई ताहि लंका। जिम राज टंका ॥६३१॥

क्रिपा द्रिष्ट भीने। तरे नेत्र कोने।
झरैं वार ऐसे। महामेघ जैसे ॥६३२॥

छकी पेख नारी। सर राम मारी।
बिधी रूप राम। महाँ धरम धाम ॥६३३॥

तजी नाथ प्रीत। चुभे राम चीत।
रही चोर नैंण। कहैं मद्ध बैंण ॥६३४॥

सिया नाथ नीके। हरैं हार जीके।
लए जात चित्त। मनो चोर वित्त ॥६३५॥

सभै पाइ लागो। पत द्रोह त्यागो।
लगी धाइ पाय। सभै नारि आय ॥६३६॥

महा रूप जाने। चित चोर माने।
चुभे चित्र ऐसे। सित साइ कैसे ॥६३७॥

लगो हेम रूप। सभै भूप भूप।
रँगे रंग नैण। छके देव गैंण ॥६३८॥

जिनै एक वार। लखे रावणार।
रही मोहत ह्वै कै। लुभी देख कै कै ॥६३९॥

छकी रूप राम। गए भूल धाम।
कर्‌यो राम बोध। महाँ जुद्ध जोध ॥६४०॥

॥ राम बाच मदोदरी प्रति ॥

॥ रसावल छन्द ॥

सुनो राज नारी। कहा भूल हमारा।
चित चित्त कीजै। पुनर दोस दीजै ॥६४१॥

मिलै मोहि सीता। चलै धरम गीता।
पठ्यो पउन पूत। हुतो अग्र दूत ॥६४२॥

चल्यो धाइ कै कै। सिया सोध लै कै।
हुती बाग माहीं। तरे ब्रिछ छाहीं ॥६४३॥

पर्यो जाइ पाय। सुनो सीय माय।
रिप राम मारे। खरे तोहि द्वारे ॥६४४॥

चलो वेग सीता। जहा राम सीता।
सभै शत्र मारे। भुअभार उतारे ॥६४५॥

चली मोद कै कै। हनू संग लै कै।
सिया राम देखे। उही रूप लेखे ॥६४६॥

लगी आन पाय। लखी राम राय।
कह्यो कउल नैनी। बिधु वाक बैनी ॥६४७॥

धसो अग्ग मद्ध। तबै होइ सुद्ध।
लई मान सीस। रच्यो पावकीस ॥६४८॥

गई पैठ ऐसे। घन बिज्ज जैसे।
स्रुत जेम गीता। मिली तेम सीता ॥६४९॥

धसी जाइ कै कै। कढी कुंदन ह्वै कै।
गरे राम लाई। कब स्रित गाई ॥६५०॥

सभो साध मानी। तिहू लोग जानी।
बजे जीत बाजे। तबै राम गाजे ॥६५१॥

लई जीत सीता। महाँ सुभ्र गीता।
सभै देव हरखे। नभ पुहप बरखे ॥६५२॥

॥ इति स्री बचित्र नाटके रामवतार बभीछन को लंका को राज दीबो मदोदरी समोध कीबो सीता मिलबो ध्याइ समापतम ॥

॥ रसावल छंद ॥

तबै पुहपु पै कै। चडे जुद्ध जै कै।
सभै सूर गाजे। जय गीत बाजे ॥६५३॥

चले मोद ह्वै कै। कपि वाहन लैकै।
पुरी अउध पेखी। लुल सुरग लेखी ॥६५४॥

॥ मकरा छन्द ॥

सिय लै सिएश आए। मगल सु चार गाए।
आनद हिन बढाए। सहरो अवध जहाँ रे ॥६५५॥
धाई लुगाई आवै। भीरो न बार पावै।
आकल खरे उघावै। भाखं ढोलन कहाँ रे ॥६५६॥
जुलफ अनूप जाँकी। नागन कि स्याह् वाँकी।
अतभुत अदाइ ताँकी ऐसो ढोलन कहाँ है ॥६५७॥
सरवोस हो चमनरा। पर चुस्त जाँ वतनरा।
जिन दिल हरा हमारा वह मनहरन कहाँ है ॥६५८॥
चित को चुराइ लीना। जालम फिराक दीना।
जिन दिल हरा हमारा वह गुल चिहर कहाँ है ॥६५६॥
कोऊ बताइ दै रे। चाहो सु आन लै रे।
जिन दिल हरा हमारा वह मन हरन कहाँ है ॥६६०॥
माते मनो अमल के। हरिआ कि जा वतन ते।
आलम कुशाइ खूबी वह गुल चिहर कहाँ है ॥६६१॥
जालम अदाइ लीए। खजन खिसान कीए।
जिन दिल हरा हमारा वह महबदन कहाँ है ॥६६२॥
जालम अदाइ लीने। जानुक शराब पीने।
रुखसर जहान तावाँ वह गुलवदन कहाँ है ॥६६३॥
जालम जमाल खूबी। रोशन दिमाग अखतर।
पुर चस्त जाँ जिगर रा वह गुल चिहर कहाँ है ॥६६४॥
चालम विदेश आए। जीते जुआन जालम।
कामल कमाल मूरत वह गुल चिहर कहाँ है ॥६६५॥
रोशन जहान खूबी। जाहर कलीम हफतज़।
आलम खुसाइ जिलवा वह गुल चिहर कहाँ है ॥६६६॥

जीते बजग जालम। कीने पतग परदा।
पुहपक बिबान बैठ सीता रवन कहाँ है ॥६६७॥
मादर खुसाल खातर। कीने हजार छावर।
मातुर सिता बधाई वह गुल चिहर कहाँ है ॥६६८॥

॥ इति स्री रामवतार सीता अयुधिआ आगम नाम धिआइ समापतम ॥

॥ अथ माता मिलन ॥

॥ रसावल छंद ॥

सुने राम आए। सभै लोग धाए।
लगे आन पाय। मिले राम राय ॥६६९॥

कोऊ चउर ढारै। कोऊ पान खुआरै।
परे मात पाय। लए कंठ लाय ॥६७०॥

मिलै कंठ रोवैं। मनो शोक धोवैं।
करैं बीर बातैं। सुने सरब मातैं ॥६७१॥

मिले लच्छ मात। परे पाइ भ्रात।
कर्यो दान एतो। गनै कउन केतो ॥६७२॥

मिले भरथ मात। कही सरब बात।
धन मात तो को। अरिणी कीन मोको ॥६७३॥

कहा दोस तेरै। लिखी लेख मेरै।
हुनी हो सु होई। कहै कउन कोई ॥६७४॥

करो बोध मात। मिल्यो फेरि भ्रात।
सुन्यो भरथ धाए। पग सीस लाए ॥६७५॥

भरे राम अंक। मिटी सरब शंक।
मिल्यो शत्र हंता। सर शास्त्र गंता ॥६७६॥

जटं धूर झारी। पग राम रारी।
करी राज अरचा। दिज बेद चरचा ॥६७७॥

करैं गीत गान । भरे बीर मान ।
दियो राम राज । सरे सरब काज ॥६७८॥
बुलै विप्प लीने । श्रुतोचार कीने ।
भए राम राजा । बजे जीत बाजा ॥६७९॥

॥ भुजंग प्रयात छंद ॥

चहूं चक्क के छत्रधारी बुलाए ।
धरे अन्न नीके पुरी अउध आए ।
गहे राम पाय परम प्रीत कै कै ।
मिले चत्र देसी बडी भेट दै कै ॥६८०॥

दए चीन माचीन चीनत देस ।
महाँ सुंदरी चेरका चार भेस ।
मन मानव हीर चीर अनेक ।
दिए खोज पइयें कहूं एक एक ॥६८१॥

मन मुत्तिय मानक बाज राज ।
दए दंतपती सजे सरब साज ।
रथ बेसट हीर चीर अनंत ।
मन मानव बद्ध रद्ध दुरंत ॥६८२॥

दिने स्वेत ऐरावत तुल्लि दंती ।
दए मुत्तय साज सज्जे सुपंती ।
दिने बाजराज जरी जीन संग ।
नचैं नट्ट मानों मचे जंग रंग ॥६८३॥

दिये पक्खरे वीर राजा प्रमाण ।
दए पात्र राजो मिराजो निशाण ।
दई खग्ग सीस मर्णी रंग रंग ।
रच्यो राम सों अन्नधारी अभंग ॥६८४॥

दिये पन्न पाम्बर स्वग्ग वरण ।
दिन भेट यें भांति भांति अमरण ।

किते परम पाटवर भान तेज।
दए सीअ धाम सभो भेज भेज ॥६८५॥

किते भूखण भान तेज अनत।
पठे जानकी भेट दैदं दुरत।
घने राम मातान की भेज भेजे।
हरे कित्त के जाहि हेरे कलेजे ॥६८६॥

घम चक्र चक्र फिरी राम दोही।
मनो ब्योत वागो तिम सीअ सोही।
पठै छत्र दैदै छिन छोण धारी।
हरे सरब गरब करे पुरख भारी ॥६८७॥

कट्यो काल एव भए राम राज।
फिरी आन राम सिर सरब राज।
फिर्यो जैत पत्र सिर सेत छत्र।
करे राज आगिआ धरैं बीर अत्र ॥६८८॥

दयो एक एक अनेक प्रकार।
लखे सरब लोक सही रावणार।
सही बिशन देवारदन द्रोह हरता।
चहूँ चक्क जान्यो सिया नाथ भरता ॥६८६॥

सही बिशन अउतार कै ताहि जान्यो।
सभो लोक ख्याता बिधाता पछान्यो।
फिरी चार चक्र चतुर चक्र धार।
भयो चक्रबरती भुअ रावणार ॥६६०॥

लख्यो परम जोगिंद्रणो जोग रूप।
महादेव देव लख्यो भूप भूप।
महाँ शत्र शत्र महाँ साध साध।
महाँ रूप रूप लख्यो ब्याध बाध ॥६६१॥

त्रिय देव तुल्ल नर नार नाह।
महाँ जोध जोध महाँ बाह बाह।

सुत वेद करता गण रुद्र रूप।
महाँ जोग जोग महाँ भूप भूप ॥६६२॥

पर पारगता शिव सिद्ध रूप।
बुध बुद्धिदाता रिध रिद्ध कूप।
जहाँ भाव कै जेण जैसो विचारे।
तिसी रूप सौ तउन तैसे निहारे ॥६६३॥

सभो शस्त्रधारी लहे शस्त्र गता।
दुरे देव द्रोही लखे प्राण हता।
जिसी भाव सों जउन जैसे विचारे।
तिसी रंग कै काछ काछे निहारे ॥६६४॥

॥ अनत तुका भुजगप्रयात छन्द ॥

किते काल बीत्यो भयो राम राज।
सभै शत्र जीते महा जुद्ध माली।
फिर्यो चक्र चारो दिसा मद्ध राम।
भयो नाम ताते महाँ चक्रवरती ॥६६५॥

सभै बिप्प आगस्त ते आदि लै कै।
भ्रिग अगुरा ब्यास ते लै बिशिष्ट।
बिस्वामित्र अउ बालमीक सु अत्र।
दुरबाशा सभै कशप ते आद लै कै ॥६६६॥

जबै राम देखै सभै बिप्प आए।
पर्यो धाइ पाय सिया नाथ जगत।
दयो आसन अरघु पाद रघुतेण।
दई आसिख्र मौननेस प्रसिन्य ॥६६७॥

भई रिख्र राम बडी ग्यान चरचा।
कहो सरब जौपै बढै एक ग्रथा।
बिदा बिप्प कोने धनी दच्छना दै।
चले देस देस महाँ चित्त हरख्र ॥६६८॥

इही बीच आयो म्रिन सून विप्प।
जिऐ बान आजै नही तोहि स्राप।
सभै राम जानी चित ताहि बाता।
दिस बारणी तै त्रिवाण हकार्यो ॥६९९॥

हुतो एक शूद्र दिशा उग्र मद्ध।
झुलै कूप मद्ध पर्यो औध मुक्ख।
महाँ उग्र तै जाप पमयान उग्र।
हन्यो ताहि राम अस आप हत्थ ॥७००॥

जियो ब्रह्मपुत्र हर्यो ब्रह्म सोग।
बडी कीर्त राम चतुर कूट मद्ध।
कर्यो दस महस्र लउ राज अउध।
फिरी चक्र चारो बिखै राम दोही ॥७०१॥

जिणे देस देस नरेश त राम।
महाँ जुद्ध जेता निहँ लोक जान्यो।
दयो मत्री अत्र महाभ्रात भरथ।
कियो मैन नाथ सुमित्राकुमार ॥७०२॥

॥ मृतगत छन्द ॥

सुमति महा रिख रघुवर। दुदभ बाजति दरदर।
जग की भ्रम धुन घर घर। पूर रही धुन सुरपुर ॥७०३॥
सुंदर महा रघुनंदन। जगपत मुन गन बदन।
धरधर लौ नर कीने। सुख दै दुख बिन कीने ॥७०४॥
अर हर नर कर जाने। दुख हर सुख कर माने।
पुर धर नर बरसे है। रूप अनूप अभै है ॥७०५॥

॥ अनका छन्द ॥

प्रभ है। अजू है।
अजै है। अभ है ॥७०६॥

अजा है । अता है ।
अलै है । अजै है ॥३०७॥

॥ भुजगप्रयात छन्द ॥

दुल्यो चन्न भ्रात सुमित्राकुमार ।
कर्‌यो मायुरेम निमे रावनार ।
तहाँ एक दइत नत्र दत्र तेज ।
दयो ताहि अप्प शिव सूर भेज ॥३०८॥

पठ्यो तीर मत्र दियो एक राम ।
महाँ जुद्ध माली महाँ धरम धाम ।
शिव सूल हीण जवै शत्र जान्यो ।
तवै नगि ता कै महाँ जुद्ध ठान्यो ॥३०९॥

लयो मन्त्र तीर चन्यो न्याट सीस ।
त्रिपुर जुद्ध जेता चन्यो जाण ईस ।
लम्यो सूल हीण रिप जङग गाल ।
तवै कोप मड्यो रण निरगार ॥३१०॥

भजै घाइ खाय अपायन सूर ।
हमे कक वक घुमी गैण हूर ।
उठे टोप टुचक कमाण मड़ो ।
रण रोम रज्जे महाँ छत्र वारे ॥३११॥

फिर्‌यो अप दइत महा रोस कै कै ।
हणे राम भ्रात वहै बाग पै कै ।
रिप नास हेत दियो राम ...।
हण्यो ताहि सीस दुगा जात ...। ॥३१२॥

गिरयो झूम भूम अरुम्यो ...।
हम्यो मत्र हना निमै ...।
गन देव हरखे ...।
हन्यो दैत द्रोही मिट्यो ... ॥३१३॥

लव नासु रैय लव कीन नास।
सभै सत हरखे रिप भे उदास।
भजे प्रान लै लै तज्या नगर वास।
कर्यो माथुरेस पुरीवा नवास ॥७१४॥

भयो माथुरेस लवनास्र हता।
सभै शस्त्रगामी सुभ शस्त्र गता।
भए दुष्ट दूर करूर सु ठाम।
कर्यो राज तैसो जिम अउध राम ॥७१५॥

कर्यो दुष्ट नास पपातत सूर।
उठी जै धुन पुर रही लोग पूर।
गई पार सिंध सु बिध प्रहार।
सुन्यो चक्र चार लव लावणार ॥७१६॥

॥ अथ सीता को बनवास दीबो ॥

भई एम तउने ततै रावणार।
कही जानकी सो सु कत्थ सुधार।
रचे एक बाग अभिराम सु सोभ।
लखे नदन जउन की न्रात छोभ ॥७१७॥

सुनी एम बानी सिया धरम धाम।
रच्यो एक बाग महाँ अभराम।
मणी भूखित हीर चीर अनत।
लखे इंद्र पत्थ लजे स्रोभवत ॥७१८॥

मणी माल वज्र शशोभाइमान।
सभै देव देव दुती सुरग जान।
गए राम ता मो सिया सग लीने।
क्रिती कोट सुदरी सभै सगि कीने ॥७१९॥

रच्यो एक मद्र महा सुभ्र ठाम।
कर्यो राम सैन तहाँ धरम धाम।

करी केल खेल सु बेल सु भोग।
हुतो जउन काल समै जैस जोग ॥७२०॥

रह्यो सीअ गरभ सुन्यो सरव वाम।
कहे एम सीता पुनर वैन राम।
फिर्यो वाग वाग बिदा नाथ दीजै।
सुनो प्रान प्यारे इहै काज कीजै ॥७२१॥

दियो राम सग सुमित्राकुमार।
दई जानकी सग ता के सुधार।
जहाँ घोर साल तमाल बिकाल।
तहाँ सीअ को छोर आयो उताल ॥७२२॥

वन निरजन देख कै कै अपार।
वनवास जान्यो दयो रावणार।
ररोद सुर उच्च पपातत प्रान।
रण जेम वीर लगे मरम वाम ॥७२३॥

मुनी वालमीक स्रुत दीन वानी।
च'या चउक चित्त तजी मोन धानी।
सिया सगि लीने गयो धाम आप।
मनो वच्च करम द्रुगा जाप जाप ॥७२४॥

भयो एक पुत्र तहाँ जानकी तैं।
मनो राम कीनो दुती राम ते लै।
वहै चार चिह्न वहै उग्र तेज।
मनो अप्प अस दुती काटि भेज ॥७२५॥

दियो एक पाल मु वाल रिखीस।
लसै चद्र रूप किधो दयोस ईस।
गयो एक दिवस रिखी मधियान।
लयो वाल सग गई सीअ नान ॥७२६॥

रही जात सीता महाँ मोन जागे।
विना वाल पाल लयो शोघु पागे।

कुशा हाथ लै क रच्यो एक बाल।
तिसी रुप रग अनूप उताल ॥७२७॥

फिरी नाइ सीता कहा आन देख्यो।
उहो रूप बाल सुपाल बसेख्यो।
त्रिपा मोन राज घनो जान कीनो।
दुती पुत्र ता ते त्रिपा जान दीनो ॥७२८॥

॥ इति स्री बचित्र नाटके रामवतार दुई पुत्र उतपने ध्याइ समापतम ॥

॥ भुजंगप्रयात छंद ॥

उतै बाल पालै इतै अउध राज।
बुले बिप्प जग्य तज्यो एक बाज।
रिप नास हता दयो सग ताकै।
बडी फउज लीने चरयो सग वाके ॥७२९॥

फिरयो देस देस नरेशाण बाज।
किनी नाहि बाध्यो मिले आन राज।
महा उग्र धनियाँ बडी फउज लै कैं।
परे आन पाय बडी भेट दै कैं ॥७३०॥

दिशा चार जीती फिर्यो फेरि बाजी।
गया बालमीक रिखिसथान ताजी।
जबै भाल पत्र लव छोर बाच्यो।
बडा उग्र धन्या रस रुद्र राच्यो ॥७३१॥

ब्रिछ बाज बांध्यो लख्यो शस्त्रधारी।
बडो नाद कै सरब सैना पुकारी।
कहा जात रे बाल लीने तुरग।
तजो नाहि याको सजो आन जग ॥७३२॥

सुण्यो नाम जुद्ध जबै स्रउण सूर।
महा शस्त्र सउडी महाँ लोह पूर।

हठे वीर हाठ सभे शस्त्र लै कै।
पर्यो मद्धि सैन वडो नादि कै कै ॥७३३॥

भले भांत मारे पचारे सु सूर।
गिरे जुद्ध जोधा रहो धूर पूर।
उठी शस्त्र झार अपारन वीर।
भ्रमे रुंड मुंड तन तच्छ तीर ॥७३४॥

गिरे लुत्थ पत्थ सु जुत्थत वाजी।
भ्रमे छूछ हाथी विना स्वार ताजी।
गिरे शस्त्र होण विअस्त्रत सूर।
हसे भूत प्रेत भ्रमी गण हूर ॥७३५॥

घण घोर नीशाण वज्जे अपार।
खहे वीर धीर उठी शस्त्र झार।
चले चार चित्र वचित्रत वाण।
रण रोस रज्जे महाँ तेजवाण ॥७३६॥

॥ वाचरी छन्द ॥

उठाई। दिखाई। नचाई। चलाई ॥७३७॥
भ्रमाई। दिखाई। कंपाई। चखाई ॥७३८॥
कतारी। अपारी। प्रहारी। सुनारी ॥७३९॥
प्रचारी। प्रहारी। हकारी। कटारी ॥७४०॥
उठाए। गिराए। भगाए। दिखाए ॥७४१॥
चलाए। पचाए। त्रसाए। चुटआए ॥७४२॥

॥ अणका छन्द ॥

जल सर लागे। तव सभ भागे।
दलपत मारे। भट भटकारे ॥७४३॥

हय तज भागे। रघुवर आगे।
वहुविध रोवें। समुहि न जोवें ॥७४४॥

लव अर मारे। तत्र दल हारे।
द्वै सिस जीते। नह भय भीते ॥७४५॥

लछमन भेजा। वहु दल लेजा।
जिन सिस मारह। मोहि दिखारह ॥७४६॥

सुण लहु भ्रात। रघुवर वात।
सज दल चल्ल्यो। जल थल हल्ल्यो ॥७४७॥

उठ दल धूर। नभ झड पूर।
चहु दिस ढूके। हरि हरि कूके ॥७४८॥

वरखत वाण। थिरकत ज्वाण।
लह लह धुजण। खह खह भुजण ॥७४९॥

हसि हसि ढूके। कसि कसि कूके।
सुण सुण वाल। हठि तज उताल ॥७५०॥

॥ दोहा ॥

हम नही त्यागत वाज वर सुणि लछमना कुमार।
अपनो भर वल जुद्ध कर अव ही शक विसार ॥७५१॥

॥ अणका छन्द ॥

लछमन गज्ज्यो। वड धन सज्ज्यो।
वहु सर छोरे। जण घण ओरे ॥७५२॥

उत दिव देखै। धनु धनु लेखै।
इत सर छूटे। मस कण तूटे ॥७५३॥

भट वर गाजे। दुदभ वाजे।
सरवर छोरै। मुख नह मोरै ॥७५४॥

॥ लछमन बाच सिस सो ॥

स्त्रिण स्त्रिण लरका। जिन कर करखा।
दे मिलि घोरा। तुहि वल थोरा ॥७५५॥

हठ तजि अइऐ। जिन समुहइऐ।
मिलि मिलि मोको। डर नही तोको ॥७५६॥

सिस नही मानी। अति अभिमानी।
गहि धनु गज्ज्यो। दु पग न भज्ज्यो ॥७५७॥

॥ अजबा छन्द ॥

रुद्धे रण भाई। सर झड लाई।
बरखे बाण। परखे जुआण ॥७५८॥

डिग्गे रण मद्ध। अद्धो अद्ध।
कट्टे अग। रज्झे जग ॥७५९॥

रावन झड लायो। सरबर सायो।
बहु अर मारे। डील डरारे ॥७६०॥

डिग्गे रण भूम। नर बर घूम।
रज्जे रण घाय। चक्के चाय ॥७६१॥

॥ अपूर्व छन्द ॥

गणे केते। हणे जेते।
कई मारे। किते हारे ॥७६२॥

सभै भाजे। चित लाजे।
भजे भै कै। जिय लै कै ॥७६३॥

फिरे जेते। हणे तेते।
किते घाए। किते धाए ॥७६४॥

गिम जीते। भट भीते।
महा क्रुद्ध। कियो जुद्ध ॥७६५॥

दोऊ भ्राता। ग्रग ग्याता।
महा जोध। मंडे क्रोध ॥७६६॥

तजे वाण। धन ताण।
मचे बीर। भजे भीर ॥७६७॥

कटे अग। भजे जग।
रण रज्झ। नर जुज्झे ॥७६८॥

भजी सैन। विना चैन।
लछन वीर। फिर्यो धीर ॥७६९॥

इकै वाण। रिप ताण।
हर्यो भाल। गिर्यो ताल ॥७७०॥

॥ इति लछमन वधहि ध्याइ समापतम ॥

॥ अड़ूहा छन्द ॥

भाज गयो दल त्रास कै कै।
लछमण रण भूम दै कै।
चले रामचद हुते जहाँ।
भट भाज भग्ग लगे तहाँ ॥७७१॥

जब जाइ वात कही उनै।
वहु भाँत शोक दयो तिनै।
सुन वैन मोन रहै बली।
जन चित्र पाहन की खली ॥७७२॥

पुन बैन मत्र विचारयो।
तुम जाहु भरथ उचारयो।
मुन बाल द्वै जिन मारियो।
धनि आन मोहि दिखारियो ॥७७३॥

सज सैन भरथ चले तहाँ।
रण वाल वीर मँडे जहाँ।
वहु भात वीर सँघारही।
सर ओघ प्रओघ प्रहारही ॥७७४॥

सुग्रीव और भभीछन।
हनवत अगद रीछन।
वहु भाँति सैन वनाइकै।
तिन पै चयो समुहाइकै ॥७७५॥

रणभूम भरथ गए जवै।
मुन वाल दोइ लयै तवै।
दुइ काक पच्छा सोभही।
लख देव दानो लोभही ॥७७६॥

॥ भरथ बाच लव सो ॥

॥ अकडा छंद ॥

मुन वाल छाडहु गरव।
मिलि आन मोहु सरव।
लै जाँहि राघव तोर।
तुहि नैक दै कै चोर ॥७७७॥

सुन ते भरे सिस मान।
कर कोप तान कमान।
वहु भाँति साइक छोरि।
जन अभ्र सावण ओर ॥७७८॥

लागे मु साइक अग।
गिरगे सु वाह उतग।
कहूँ अग भग सवाह।
कहूँ चउर चीर सनाह ॥७७९॥

कहूँ चित्र चार कमान।
कहूँ अग जोधन बान।
कहूँ अग धाइ भभक्क।
कहूँ स्रोण सरत छलक्क ॥७८०॥

कहूँ भूत प्रेत भकंत।
सु कहूँ कमद्ध उठत।
कहूँ नाच वीर वैताल।
सो बमत डाकृण ज्वाल ॥७८१॥

रण धाइ धाए वीर।
सभ स्रोण भीगे चीर।
इक बार भाज चलत।
इक आन जुद्ध जुटत ॥७८२॥

इक ऐंच ऐंच कमान।
तक बीर मारत बान।
इक भाज भाज मरत।
नहो सुरग तउन बसत ॥७८३॥

गजराज बाज अनेक।
जुज्झे न बाचा एक।
तब आन लंका नाथ।
जुज्झ्यो सिसन के साथ ॥७८४॥

॥ बहोड़ा छन्द ॥

लंकेश के उर मो तक बान।
मार्‍यो राम सिसत जि कान।
तब गिर्‍यो दानव सु भूमि मद्ध।
तिह बिसुध जाण नहि कियो बद्ध ॥७८५॥

तब रुक्यो तास सुग्रीव आन।
कहा जात गाल नही पैंस जान।
तब हण्यो बाण तिह भाल तक्क।
तिह लग्यो भाल मो रह्यो चक्क ॥७८६॥

चप चली सैण कपणी स क्रुद्ध।
नल नील हनू अंगद सु जुद्ध।

तव तीन तीन लै बाल बान।
तिह हणे भाल मो रोस ठान ॥७८७॥

जो गए सूर सो रहे खेत।
जो बचे भाज ते हुइ अचेत।
तब तकि तकि सिस कस्सि बाण।
दल हत्यो राघवी तज्जि प्राणि ॥७८८॥

॥ अनूप निराज छन्द ॥

सु कोपि देखि कै बल सु क्रुद्ध राघवो सिस।
बचित्र चित्रत सर बबर्खं बरखणो रण।
भभज्जि आसुरी सुत उठत भैंकरी धुन।
भ्रमत कुंडली क्रित पपीड दारण सर ॥७८९॥

घुमत घायलो घण ततच्छ वाणणो बर।
भभज्ज कातरो कित गजत जोधणो जुध।
चलत तीछणो अस खिमत धार उज्जल।
पपात अंगदादि के हनुवत सुग्रिव बल ॥७९०॥

गिरत असुर रण भभरम आसुरी सिस।
तजत स्यामणो घर भजत प्रान लै भट।
उठत अध धुंधणो कवध वधत कट।
लगत बाणणो बर गिरत भूम अहवय ॥७९१॥

पपात श्रिछण घर ववेग मार तुज्जण।
भरत धूर भूरण वमत स्रोणत मुख।
चिकार चाँवडी नभ ठिकत किंकरा फिर।
भकार भूत प्रेतण डिकार डाकणी डुल ॥७९२॥

गिरं धर धुर धर धरा घर घर जिव।
भभज्जि सज्जणत तणे उठत भै करी धुन।
उठत गद्द सद्दण ननद्द निफिर रण।
बबर्ज्ज साद्द सिन घुमत जोधणो व्रण ॥७९३॥

कहूँ भूत प्रेत भकत।
सु कहूँ कमद्ध उठत।
कहूँ नाच बीर बैताल।
सो बमत डारुण ज्वाल ॥७८१॥

रण धाइ धाए बीर।
सभ स्रोण भीगे चीर।
इक बार भाज चलत।
इक आन जुद्ध जुटत ॥७८२॥

इक ऐंच एंच कमान।
तक बीर मारत बान।
इक भाज भाज मरत।
नही सुरग तउन बसत ॥७८३॥

गजराज बाज अनेक।
जुज्झे न बाचा एक।
तब आन लका नाथ।
जुज्झयो सिसन के साथ ॥७८४॥

॥ बहोड़ा छंद ॥

लकेश के उर मो तक बान।
मारयो राम सिसत जि कान।
तब गिरयो दानव सु भूमि मद्ध।
तिह बिमुध जाण नहि कियो बद्ध ॥७८५॥

तब रुस्यो तास सुग्रीव आन।
कहा जात बाल नही पैस जान।
तब हण्यो बाण तिह भाल तक्क।
तिह लग्यो भाल मो रह्यो चक्क ॥७८६॥

चप चली सैण कपणी स क्रुद्ध।
नल नील हनू अगद सु जुद्ध।

तब तीन तीन लै बाल बान।
तिह हणे भाल मो रोस ठान ॥७८७॥

जो गए सूर सो रहे खेत।
जो बचे भाज ते हुइ अचेत।
तब तकि तकि सिस कस्सि बाण।
दल हत्यो राघवी तज्जि काणि ॥७८८॥

॥ अनूप निराज छंद ॥

सु कोपि देखि कै बल सु क्रुद्ध राघवो सिस।
बचित्र चित्रत सर बवर्ख बरखणो रण।
भभज्जि आसुरी सुत उठत भैकरी धुन।
भ्रमत कुंडली क्रित पपीट दारण सर ॥७८९॥

घुमत घाइलो घण ततच्छ वाणणो बर।
भभज्ज कातरो किन गजत जोधणो जुध।
चमक तीछणो अस खिमत धार उज्जल।
पपात अंगदादि बे हनुवंत सुग्रिव बल ॥७९०॥

गिरत अमुर रण भभरम आसुरी सिस।
तजत स्यामणो घर भजत प्रान लै भट।
उठत अध घुधणो कबध बधत कट।
लगत वाणणो बर गिरत भूम अहवय ॥७९१॥

पपात छिप्र धर बवेग मार तुज्जण।
भजत भूर भूरण बमत स्रोणत मुख।
खिलार चावडी नभ ठिरत किरा किर।
भकार भूत प्रेतना डिकार डावणी डुल ॥७९२॥

[illegible] धुर धर धरा धर धर जिव।
भभज्जि [illegible] उठत भै करी धुन।
[illegible] नाद्द निद्दि रण।
[illegible] ग्रिन घुमत जोधणो क्रन ॥७९३॥

भजत भै धर भट विलोक
चल्या चिराइकै चपी ववर ,
सु क्रुद्ध माइक मिम ववद्ध
पपात प्रिथविय हठी ममोह

भभज्जि भीतणो भट ततज्जि
गिरत लुन्थत उठ रोद
जुझे सु भ्रात भरथणो गुणत
पपात भूमिणा तल अपीड

ससज्ज जोधण जुधी सु क्रुद्ध
ततज्जि जग्ग मडल अदड
सु गज्ज वज्ज वाजणो उठत
सनद्ध वद्ध ग्रै दल सवद्ध

चचक्क चांवडी नभ फ्किकत
भखत मास हारण वमत र
पुअत पारवती सिर नचत
भकत भूत प्रेतणो वकत

॥ निलका छन्द ॥

जुट्टे वीर। छुट्टे
फुट्टे अग। तुट्टे

भग्गे वीर। लग्गे
पिक्खे राम। धरम

जुज्झे जोध। मच्चे
वधो वाल। वीर उ

ढुक्के फेर। लिन्ने
वीरै वाल। जिउ द्वै

तज्जी काण। मारे व
डिग्गे वीर। भग्गे

कट्टे अग। डिग्डे जग।
मुद्ध सूर। भिन्ने नूर ॥८०३॥

लक्खै नाहि। भग्गे जाहि।
तज्जे राम। धरम धाम ॥८०४॥

अउरै भेस। खुल्ले केस।
शस्त्र छोर। दै दै कोर ॥८०५॥

॥ दोहा ॥

दुहूँ दिसन जोधा हरै परयो जुद्ध दुइ जाम।
जूझ सकल सैना गई रहिगे एकल राम ॥८०६॥

तिहू भ्रात विनु भै हन्यो अर सभ दलहि सँघार।
लव अर कुश झझन निमित लीने राम हकार ॥८०७॥

सैना सकल जुझाइ कै कति बैठे छप जाइ।
अब हम सो तुमहूँ लरो सुनि मुनि कउशल राइ ॥८०८॥

निरख वाल निज रूप प्रभ कहे वैन मुसकाइ।
कवन तात वालक तुमै कवन तिहारी माइ ॥८०९॥

॥ अकरा छन्द ॥

मियला राजा। जनक सुभाजा।
तिह सिस सीता। अत सुभ गीता ॥८१०॥

मो वनि आए। तिह हम जाए।
हैं दुइ भाई। सुनि रघुराई ॥८११॥

सुनि सिय रानी। रघुवर जानी।
चित पहिचानी। मुख न वखानी ॥८१२॥

तिह सिस मान्यो। अत वल जान्यो।
हठि रण कीनो। वह नही दीनो ॥८१३॥

धमि सर मारे। सिस नही हारे।
वहु विध वाण। अन धनु ताण ॥८१४॥

भजत भै धर भट त्रिलोक भरथणो रण ।
चल्यो चिराइकै चपी ववर्ख साइको सित ।
सु क्रुद्ध साइक सिस ववद्ध भालणो भट ।
पपात प्रिथविय हठी ममोह आस्र मगत ॥७६४॥

भभज्जि भीतणो भट ततज्जि भरथणो भुअ ।
गिरत लुत्थत उठ ररोद राघव तट ।
जुझे सु भ्रात भरथणो सुणत जानकी पत ।
पपात भूमिणा तल अपीड पीडत दुव ॥७६५॥

ससज्ज जोधण जुधी सु क्रुद्ध वद्धणो वर ।
ततज्जि जग्ग मडल अदड दडणो नर ।
सु गज्ज वज्ज वाजणो उठत भै धरी सुर ।
सनद्ध वद्ध वै दल सवद्ध जोधणो वर ॥७६६॥

चचवक चांवडी नभ फिकत फ्किरी धर ।
भखत माम हारण वमत ज्वाल दुरगय ।
पुअत पारवती सिर नचत ईसणो रण ।
भकत भूत प्रेतणो वकत वीर वैतल ॥७६७॥

॥ निलका छन्द ॥

जुटटे वीर । छुट्टे तीर ।
फुट्टे अग । तुट्टे तग ॥८६८॥

भग्गे वीर । लग्गे तीर ।
पिक्खे राम । धरम धाम ॥७६९॥

जुज्झे जोध । मच्चे क्रोध ।
वधो वाल । वीर उताल ॥८००॥

ढुक्के फेर । लिन्ने घेर ।
वीरं वान । जिउ द्वै काल ॥८०१॥

तज्जो काण । मारे वाण ।
डिग्गे वीर । भग्गे धीर ॥८०२॥

कट्टे अंग। डिग्गे जंग।
मुद्ध सूर। भिन्ने नूर ॥८०३॥

लक्खे नाहि। भग्गे जाहि।
तज्जे राम। धरम धाम ॥८०४॥

अउरे भेस। खुल्ले केस।
शस्त्र छोर। दै दै कोर ॥८०५॥

॥ दोहा ॥

दुहूँ दिसन जोधा हरे परयो जुद्ध दुइ जाम।
जूझ सकल सैना गई रहिगे एकल राम ॥८०६॥

तिहू भ्रात बिनु भै हन्यो अर सभ दलहि सँघार।
लव अर कुश झझन निमित लीने राम हकार ॥८०७॥

सैना सकल जुझाइ कै कति बैठे छप जाइ।
अब हम मो तुमहूँ लरो मुनि मुनि कउशल राइ ॥८०८॥

निरख बाल निज रूप प्रभ कहे बैन मुसकाइ।
कवन तात बालक तुमै कवन तिहारी माइ ॥८०९॥

॥ अकरा छन्द ॥

मिथला राजा। जनक सुभाजा।
तिह सिस सीता। अत सुभ गीता ॥८१०॥

मो बनि आए। तिह हम जाए।
हैं दुइ भाई। मुनि रघुराई ॥८११॥

मुनि सिय रानी। रघुबर जानी।
चित पहिचानी। मुख न बखानी ॥८१२॥

तिह सिस मान्यो। अन बल जान्यो।
हठि रण कीनो। बहु नहीं दीनो ॥८१३॥

बनि सर मारे। सिस नहीं हारे।
बहु विध बाण। अन धनु ताण ॥८१४॥

अग अंग वेधे। सभ तन छेदे।
सभ दल सूझे। रघुबर जूझे ॥८१५॥
जब प्रभ मारे। सभ दल हारे।
बहु विधि भागे। दुइ सिस आगे ॥८१६॥
फिर न निहारें। प्रभ न चितारें।
ग्रह दिस लीना। असरण कीना ॥८१७॥

॥ चौपाई ॥

तब दुइँ बाल अयोधन देखा।
मानो रुद्र कीडा बन पेखा।
काट धुजन के ब्रिच्छ सवारे।
भूखन अंग अनूप उतारे ॥८१८॥
मूरछ भए सभ लए उठाई।
बाज सहित तह गे जह माई।
देख सिया पत मुख रो दीना।
कह्यो पूत विधवा मुहि कीना ॥८१९॥

॥ इति स्री बचित्र नाटके रामवतार लव बाज बांधवे राम बधह ॥

॥ सीता ने सभ जीवाए कथनं ॥

॥ चौपाई ॥

अब मोकउ काशट दे आना।
जरउ लागि पति होउँ मसाना।
मुनि मुनिराज बहुत बिध रोए।
इन बालन हमरे सुख खोए ॥८२०॥

जब सीता तन रहा कि काढूं।
जोगअगनि उपराज सु छाडूं।
तब इम भई गगन ते बानी।
कहा भई सीता तैं इयानी ॥८२१॥

॥ अरूपा छन्द ॥

सुनी बानी। सिया रानी।
लयो आनी। करै पानी ॥८२२॥

॥ सीता बाच मन मैं ॥

॥ दोहा ॥

जउ मन बच करमन सहित राम बिना नही अउर।
तउ ए राम सहित जिऐ कह्यो सिया तिह ठउर ॥८२३॥

॥अरूपा छन्द ॥

सभै जागे। भ्रम भागे।
हठ त्यागे। पग लागे ॥८२४॥

सिया आनी। जग रानी।
धरम धानी। सत्ती मानी ॥८२५॥

मन भाई। उर लाई।
सती जानी। मनै मानी ॥८२६॥

॥ दोहा ॥

बहुविधि सियहि समोध कर चले अजुधिआ देस।
लव कुश दोउ पुत्रनि सहित स्री रघुवीर नरेश ॥८२७॥

॥ चौपाई ॥

बहुतु भांति कर सिसन समोधा।
सिय रघुबीर चले पुर अउधा।
अनिक वेख से शस्त्र सुहाए।
जानत तीन राम बन आए ॥८२८॥

॥ इति स्री नाटके रामवतारे तिहू भिरातन सैना सहित जीवो ॥

सीता दुहू पुत्रन सहित पुरी अवध प्रवेश कथन ॥

॥ चौपाई ॥

तिहूँ मात कठन सो लाए।
दोउ पुत्र पाइन लपकाए।
बहुर आन सीता पग परी।
मिट गई तही दुखन की घरी ॥८२९॥

बाजमेध पूरन किय जग्गा।
कउशलेश रघुबीर अभग्गा।
ग्रिह सपूत दो पूत सुहाए।
देस विदेस जीत ग्रह आए ॥८३०॥

जेतिक कहे सु जग्ग विधाना।
विघ पूरब कीने ते नाना।
एक घाट सत कीने जग्गा।
चट पट चक्र इंद्र उठ भग्गा ॥८३१॥

राजसूइ कीने दस बारा।
बाजमेधि इक्कीस प्रकारा।
गवालभ अजमेध अनेका।
भूपमेध कर सके अनेका ॥८३२॥

नागमेध खट जग्ग कराए।
जउन करे जनमे जय पाए।
अउरै गनत कहाँ लग जाऊँ।
ग्रथ वढन ते हिऐ डराऊँ ॥८३३॥

दस सहस्र दस बरख प्रमाना।
राज करा पुर अउध निधाना।
तब लउ काल दशा नियराई।
रघुवर सिरि म्रित डक बजाई ॥८३४॥

नमशकार तिह् विविधि प्रकारा।
जिन जग जीत कर्‌यो बस सारा।
सभहन सीस डक तिह् बाजा।
जीत न सका रक अरु राजा ॥८३५॥

॥ दोहा ॥

जे तिन की शरनी परे कर दै लए बचाई।
जौ नहो कोऊ बाचिआ किशन विशन रघुराइ ॥८३६॥

॥ चौपाई ॥

बहु विधि करो राज को साजा।
देस देस के जीते राजा।
शाम दाम अरु दड सभेदा।
जिह् विध हुती शाशना वेदा ॥८३७॥

बरन बरन अपनी म्रिन लाए।
चार चार ही बरन चलाए।
छत्री करें बिप्र की सेवा।
वैस लखै छत्रो कह देवा ॥८३८॥

शूद्र सभन की सेव कमावै।
जह कोई कहै तहो वह धावै।

जैसक हुती बेद शासना।
निकसा तैस राम की रसना ॥८३९॥

रावणादि रण हांक सँघारे।
भांत भांत सेवक गण तारे।
लका दई टक जनु दीनो।
इह विध राज जगत मैं कीनो ॥८४०॥

॥ दोहा ॥

वहु बरखन लउ राम जी राज करा अर टाल।
ब्रहमरध्र कह फोर कै भ्यो कउशलिआ काल ॥८४१॥

॥ चौपाई ॥

जैस म्रितक के हुते प्रकारा।
तैसेइ करे वेद अनुसारा।
राम सपूत जाहि घर माही।
ताकहु तोट कोऊ कहु नाही ॥८४२॥

वहु विधि गति कीनी प्रभ माता।
तब लउ भई कैकई शाता।
ता के मरत सुमित्रा मरी।
देखहु काल क्रिया कस करी ॥८४३॥

एक दिवस जानकि त्रिय सिखा।
भीत भए रावण कहु लिखा।
जब रघुबर तिह आन निहारा।
कछुक कोप इम बचन उचारा ॥८४४॥

॥ राम बाच मन मैं ॥

याको कछु रावन सो हेता।
ता ते चित्र चित्र कै देखा।
बचन सुनत सीता भई रोखा।
प्रभ मुहि अजहूँ लगावत दोखा ॥॥८४५॥

॥ दोहा ॥

जउ मेरे बच करम करि ह्रिदै बसत रघुराई ।
प्रियी पैड मुहि दीजिऐ लीजै मोहि मिलाइ ॥८४६॥

॥ चौपाई ॥

सुनत वचन धरनी फट गई ।
लोप सिया तिह भीतर भई ।
चक्रत रहे निरख रघुराई ।
राज करन की आस चुकाई ॥८४७॥

॥ दोहा ॥

इह जग धुअरो धउलहरि किह के आयो काम ।
रघुबर बिनु सिय ना जिऐ सिय बिन जिऐ न राम ॥८४८॥

॥ चौपाई ॥

द्वारे कह्यो बैठ लछमना ।
पैठ न कोऊ पावै जना ।
अंतहि पुरहि आप पगु धारा ।
देहि छोरि म्रितलोक सिधारा ॥८४९॥

॥ दोहा ॥

इंद्रमती हित अज न्रिपत जिम ग्रिह तज लिय जोग ।
तिम रघुबर तन को तजा स्री जानकी बियोग ॥८५०॥

॥ इति स्री बचित्र नाटक रामवतारे सीता के हेत म्रितलोक से गए धिआइ समापतम ॥

अथ तीनो भ्राता त्रीअन सहित मरबो कथनं ॥

॥ चौपाई ॥

रउर परी सगरे पुर माही।
काहूँ रही कछू सुध नाही।
नर नारी डोलत दुखिआरे।
जानुक गिरे जूझि जुझिआरे ॥८५१॥

सगर नगर महि पर गई रउरा।
ब्याकुल गिरे हसत अरु घोरा।
नर नारी मन रहत उदासा।
कहा राम कर गये तमाशा ॥८५२॥

भरथउ जोग साधना साजी।
जोग अगन तन ते उपराजी।
ब्रहमरध्र झट दैकर फोरा।
प्रभ सौ चलत अग नही मोरा ॥८५३॥

सकल जोग के किए बिधाना।
लछमन तजे तैस ही प्राना।
ब्रहमरध्र लछमन फुन फूटा।
प्रभ चरनन तर प्रान निखूटा ॥८५४॥

लव कुश दोऊ तहाँ चल गए।
रघुबर सियहि जरावत भए।
अर पित भ्रात तिहूँ कह दहा।
राज छत्र लव के सिर रहा ॥८५५॥

तिहुँअन की इसत्री तिह आई।
सगि सती ह्वै सुरग सिधाई।
लव सिर धरा राज का साजा।
तिहुँअन तिहूँ कुट किय राजा ॥८५६॥

उत्तर देश आपु कुश लीआ।
भरथ पुत्र कह पूरव बीआ।
दच्छन दिय लच्छन के वाला।
पच्छम शत्रघन सुत बैठाला ॥८५७॥

॥ दोहा ॥

राम कथा जुग जुग अटल सभ कोई भाखत नेत।
सुरग वास रघुवर करा सगरी पुरी समेत ॥८५८॥

॥ इति राम भिरात त्रीअन सहित सुरग गए ॥ सगरी पुरी सहित सुरग गए ॥

॥ चौपाई ॥

जो इह कथा सुनै अरु गावै।
दूख पाप तिह निकटि न आवै।
विशन भगति की ए फल होई।
आधि व्याधि छ्वै सकै न कोई ॥८५९॥

संमत सत्रह सहस पचावन।
हाड़ वदी प्रियमै सुख दावन।
त्व प्रसादि करि ग्रथ सुधारा।
भूल परी लहु लेहु सुधारा ॥८६०॥

॥ दोहा ॥

नेत्र तुग के चरन तर सतद्रव तीर तरंग।
स्री भगवत पूरन कियो रघुवर कथा प्रसंग ॥८६१॥

साध असाध जानो नही वाद सुवाद विवादि।
ग्रथ सकल पूरण कियो भगवत क्रिपा प्रसादि ॥८६२॥

॥ सवैया ॥

पांइ गहे जब ते तुमरे तब ते
कोऊ आंख तरे नही आन्यो।

राम रहीम पुरान कुरान
अनेक कहैं मत एक न मान्यो।
सिम्रिति शासत्र बेद सभै बहु
भेद कहै हम एक न जान्यो।
स्री असिपान क्रिपा तुमरी करि
मैं न कह्यो सम तोहि बखान्यो ॥८६३॥

॥ दोहा ॥

सगल द्वार कउ छाडि कै गह्यो तुहारो द्वार।
बाँहि गहे की लाज असि गोबिंद दास तुहार ॥८६४॥

॥ इति स्री रामाइण समापतम सतु सुभम सतु ॥